

नाम-डॉ. (श्रीमतो) शेफालिका वर्मा

जन्म—९अगस्त, १९४३

शिक्षा—"कामायनी और उर्वशीमे नारी चित्रण" शोध पर पटना विश्वविद्यालय सँ पी-एच० डी०क उपाधि प्राप्त.

उपलब्धि - ७४क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिकाक लेल महा० महो० डॉ० उमेश मिश्र स्मृति स्वर्ण पदक डॉ० बाबूराम सक्सेना द्वारा इलाहाबादमे प्राप्त, संगे 'काव्य विनोदिनी'क उपाधि सेहो, 'रिफरेन्स एशिया'क हूजहू वोल्यूम II मे बिहारक एकमात्र महिला साहित्यकार जिनक परिचय प्रकाशित. पेनगुइन सीरीज ऑफ इंडियामे बर्लिन आर०के-जिडे, शिकागो वि० वि० द्वारा हिनक कविताक अंग्रेजी अनुवाद संगृहीत. हिनक कविता सभक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, उड़िया, गुजराती, डोगरी आदि कतेको भाषामे भेल अछि.

संपादन कार्य—पटनासँ प्रकाशित हिन्दीक बाल पत्रिका 'चमकते सितारे'क संपादन ७-८ बरख धरि, किछ काल लेल मैथिली 'टटका'क सह संपादन सेहो.

सामाजिक कार्य · सहरसा नगरपालिकाक आयुक्त दस बरिस धरि. संगे कतेको सरकारी, गैर सरकारी समितिक सदस्या रहलीह.

प्रकाशन—विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकास (कथा संग्रह), ठहरे हुए पल (हिन्दी कविता संग्रह).

शीघ्र प्रकाश्य—भावांजलि (कविता संग्रह), अर्थयुग (कथा संग्रह), अनाम अनुभूति (कविता संग्रह), नागफाँस (उपन्यास), रजनीगंधा (कविता संग्रह), बा बान्ह टुटि गेल (यात्रा वृत्तान्त).

सेवा—सर्व० राम० महा० सहरसाक हिन्दी विभागाध्यक्ष,
संप्रति, हिन्दी विभाग, ए० एन० कॉलेज, पटना.
साहित्य अकादमी दिल्लीक मैथिली केर सलाहकार समितिक सदस्या,
कोसी क्षेत्रीय महिला साहित्यकार संघक कार्य० अध्यक्ष.

या
या
व
री

यायावरी

[यात्रा वृत्तान्त]

डॉ० (श्रीमती) शेफालिका वर्मा

भावना प्रकाशन

यायावरी

[यात्रा वृत्तान्त]

प्रकाशक

भावना प्रकाशन

पटना

- प्रथम संस्करण : 1995
- मूल्य 35/- टाका मात्र
  पुस्तकालय संस्करण 50/- टाका मात्र

मुद्रक

शंकर मुद्रणालय

H/O राजकुमार मेहता

मुसल्लहपुर, पटना-६

Yayawari

[Travelogue]

by

DR. (SMT.) SHEFALIKA VERMA

Fist Edition : 1995 Price : Rs. 35/- only.

विषय-सूची

शेफालिका–हमर दृष्टिमे

पत्नीक रूपमे समर्पिता, माताक रूपमे ममतामयी, मित्रक रूपमे अखंड विश्वासमयी—एकटा विलक्षण व्यक्तित्व जाहिमे अपूर्व आत्मसंयम अछि, जिनका अध्ययन—मंथनक गंभीर रूचि छैन्ह, जे सुरुचि सम्पन्न रहितो, सरल जीवन आ' उच्च विचारमे आस्था रखैत छथि, देशक प्रति अनुराग कला, संस्कृति आ' साहित्य-संपदाक प्रति प्रेमसँ भरि देने हो—एहि सभकेँ चरितार्थ करए वाली छथि, हमर पत्नी शेफालिका !

बाल्य कालेसँ अपन साहित्यकार पिता स्व० ब्रजेश्वर मल्लिकक व्यक्तिगत आ' विशाल पुस्तकालयक शरतचन्द्र, बंकिमचन्द्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर, यशपाल आदिक साहित्यमे रमन करयवाली शेफालिका, सोलह वर्षक आयुमे हमर जीवन संगिनी बनि अयलीह. बालिका वधूक साहित्यक प्रति अपूर्व एवं अदम्य प्रेमसँ कहियोकाल हम विचलितो नहि, विक्षुब्धो भय जाइत छलौं. किन्तु, आस्ते-आस्ते हम हुनक हृदयमे लहराइत भावनाक असीम महासागर देखलौं. ओ एतेक कोमल छलीह जे जूहीक कलीसँ हुनका चोट लागि जाइत छल. ओ एतेक दृढ़ छथि जे दुख आ संघर्षक आंधी तूफान हुनका कहियो क्षत नय कय सकल आ नय कय सकैत अछि. ई अछि शेफालिकाक व्यक्तित्व.

'यायावरी'मे हुनक जीवन यात्रा अछि. दिल्ली, उड़ीसा आदितँ एहि यात्राक बहाना थीक, जेना हम बुझैत छी. जतबा ओ यात्रा केलन्हि ओहिसँ बेसी तँ हुनक भावुक मोन कोसक कोस, माइलक माइल यात्रा करैत रहल. एहिमे कोनो शक नहि, दून्नू यात्रामे हम हुनक संग रहलौं. साँच तँ ई अछि जे यायावरी हुनक यात्रा-वृत्तान्त नहि वरण आत्मकथाक खंड-खंड चित्र अछि. शेफालिका संवेदनशीलताक साकार मूर्ति छथि. हुनक क्रियाशील हृदय यांत्रिक प्रक्रियाक प्रदर्शन मात्र नहि छैक, वरन स्वतः स्फूर्त प्रेरणाक मोहक निदर्शन अछि.

नारीक रूपमे शेफालिका शक्ति स्वरूपा सेहो छथि जे महिषासुर रूपी दहेज दानव, नारी शोषणक प्रतीक शुम्भ-निशुम्भ आ' स्त्री समाजकेँ गर्तमे राखबाक प्रयास करएवाला रक्तबीज केँ बध करबाक संकल्प नेने छथि आ' निर्भीक भ' केँ सतत प्रयत्नशील रहैत छथि. हुनक क्रान्तिकारी हृदय स्यात् हुनक जन्मदिन ९ अगस्त (शहीद दिवस) सँ प्रेरित अछि.

एक दिसि प्रेम, करुणा, दया आ' सहजे पसीजय बाली शेफालिका आ' दोसर दिस क्रान्तिकारी शेफालिका—दूनू व्यक्तित्वक रस्सा-कस्सीमे बढ़ैत साहित्यधर्मी शेफालिका स्वतः एक अदभुत व्यक्तित्वक स्वामिनी बनि गेल छथि जे बुझबामे कखनहुँ हम सेहो अपनाकेँ अक्षम पबैत छी. साहित्य सृजन लेल हुनका प्रयास नहि करए पड़त छैन, साहित्य तोहिना हुनकासँ बहराइत अछि जेना शिवजीक जटा-जूटसँ गंगा स्वतः बहरायकेँ अबाध गतिसँ कल्याण करबाक लेल प्रवाहमान छथि.

रौद देखितहि जेना सिंगरहार फूल तुबि-तुबि केँ क्षत-विक्षत, उदास भ' गिर' लगैत अछि तहिना अपन नामक अर्थकेँ सार्थक करैत एकोरत्ती उपेक्षासँ उदास भ' जाइत छथि जे भाव तुरत हुनक चेहरा पर परिलक्षित भ' जाइत अछि. मुदा, सिंगरहार फूल जकाँ उपेक्षित भेलो उपरान्त शेफालिका अपन सुरभि नहि बिसरैत छथि.

आन घरक पीड़ाकेँ अपन प्राणक वेदना बनेनाय ओ अपन कर्त्तव्य बुझैत छथि. सरिपहुँ ओ अखिल मातृत्व थिकीह. भावनाक एहि विपुल भंडार मे हेराय लोक शेफालिकाक अस्तित्व तकके नहि पाबि सकैत अछि. कतेक काल एहेन होयत अछि जे अपन परिवार, अपन बाल-बच्चा तक मे ओ स्वयं अपना के अभिव्यक्त नहि क' पबैत छथि. केओ हुनक कथन सँ संतुष्ट नहि होयत छैक तँ ओ एकटा निरीह दृष्टिसँ हमरा दिसि तकैत छथि आ हम हुनक हृदयक भावकेँ स्पष्टक' दैत छी आ तेँ कतेक जगह शेफालिका हमरा अपन 'फ्रेंड फिलासफर गाइड' लिखने छथि.

प्रत्येक व्यक्तिकेँ ओ ओकर अभ्यन्तर मे देखैत छथि. बाह्य परिचय तँ कनक-मृग सन भ्रामक होइ'छ. जीवन भरि लोकक दुख केँ ओढ़' वाली शेफालिकाक हृदयकेँ चीन्हि सकनाय सुलभ नहि अछि.

सत्य, श्रम आ शिल्पमयी शेफालिकाक सुरभिकेँ एकटा पवनक झोंक बनि हम अगजग सुरभित क' सकी तँ अपना के धन्य बुझब.

—ललन कुमार वर्मा

नक्षत्र निलय

गार्ध बिहार खुलि गेल. अमर बाबू पाहुन हाथ डोलाय रहल छलाह आ देखतहि देखतहि ओ ओझल भ' गेलाह. जय बाबू बाजि उठलाह—गुडबाय कलकत्ता ! हमरो अधर अस्फुट ध्वनि संग काँपि गेल—अलविदा कलकत्ता आ मोन पड़ि आयल कलकत्तामे बिताओल ओ पाँच दिन.

१८क भोर हम जय बाबू अपन देओर संग मिथिला एक्सप्रेससँ करीब छह बजे भोर कलकत्ता पहुँचल छलौं. प्लेटफार्मक भीड़मे आशंकित हृदय आ उत्सुक नयनसँ स्वजनकेँ खोजि रहल छलौं. दृष्टि पथमे आबि गेल छलाह अमर बाबू पाहुन—हमर छोट बहीन दीपमालिकाक जीवनक मुस्कान. पलकक कोरिमे निद्रा देवी एखनहुँ अलसायल—औंघायल छल. हम बुझैत छलौं एतेक भिनसर बिस्तर छोड़य वाला व्यक्ति ई नय छथि. आय हमरा कारण—अपना पर तामसो उठैत अछि किएक सबकेँ परेशान करैत छी—तावत पाहुन खींचि हमरा टैक्सी पर बैसाय लैत छथि.

रास्ता भरि एम्हर ओम्हरक गप होइत रहल. पटनासँ हमर वापसीक बाद माँक मोन अचक्के बड़ खराब भऽ गेल छल. हमर कलकत्ता पहुँचबाक तार पाबि ओ सभ घबड़ा गेल छलाह. केओ ओहि तारकेँ छूबाक साहस नय करैत छल—पता नय ओहिमे माँक विषयमे कोन खबर होय. हमर छोट बहीन चयनिकाक ब्याह हृदयसँ भेल छल. यानी ओ दीपकक सभसँ छोट दिआदिनी बनि गेलीह. फूल सन सुन्नरि आ कोमल चयनी हृदयक संगीतक रसधार मे डुबि गेलीह. बरिआति विदा हेबासँ पहिनहि हम सहरसा चलि आयल छलौं, तकर बाद ज्ञात भेल जे माँ बड़ अस्वस्थ भ' गेल छलीह. तेँ तार देखतहि सभ घबड़ा गेल छल. टूक्कूजी अंततोगत्वा तार पढ़लैथ—सभक साँस नीचा आयल छल—"दीदी आबि रहल अछि."

रवीन्द्र सारणीमे रामभंडार लग टैक्सी रूकल. हम सभ उपर गेलौं. दीपीया बड़ प्रेमसँ मिलल—मंजू टूक्कूजी, शंभुजी सभ एलैथ. दीपक गृहस्थी पहिलुक बेर हम देखलौं. एकटा छोट छीन घरक चारिकोन—एकमे बेड रूम, एकमे ड्राईंग रूम एकमे किचन एकमे बाथरूम, ऑल इन वन. मुदा—सभटा साफ सुथरा, सजल धजल. पूजा करबा लेल हम असमंजसमे छलौं, पूजा कतऽ करी. अचानक दोसर कोठरीक भीतर हमरा एकटा आर कोठरी लकड़ीक पार्टीशनक बनल देखाय पड़ल.

दुर्गाजीक फोटो देखि श्रद्धावनत भ' गेलौं. ज्ञात भेल जे ई शंभुजीक कोठरी अछि आ धिजयाक दुर्गाजी छथि.

भरि दिन साँक चर्चा होयत रहल, कलकत्ता एवाक प्रयोजन आ गंतव्य जानल जाइत रहल. पूर्वांचलीय भाषाक कवि सम्मेलन पाँच दिन लेल कलकत्तामे छल जे सहित्य एकेडेमी दिल्ली द्वारा आयोजित पोएट्स वर्कशापक नामसँ छल.

साँझमे करीब तीन बजे हम जय आ अमर बाबूक सँग टेक्सीसँ शेक्सपीयर सारणी पहुँचलौं. भाषा परिषद्क कार्यालय खोजवामे दिक्कत नय भेल. कार्यालयमे सुधेन्दु मुखोपाध्याय आ डॉ० प्रभाकर माचवेसँ भेंट भेल. डॉ० माचवे हमर सभक परिचय पावि बाज' लगलाह जे बंगलामे नव पुरान सभ रचनाकारकेँ समान प्रेरणा भेटैत अछि जाहिसँ आय बंगला साहित्य समृद्ध आ भरल पूरल अछि. हम मैथिली साहित्यक विषयमे सेहो जनैत छी. किछु व्यक्ति जे संस्कृत जनैत छथि मैथिलीमे चारि पाँती लिखि अपन आधिपत्य या अपन सर्वाधिकार जमा नेने छथि ओ कोनो नव लेखक केँ पनप' नय द' रहल छथि—हम विस्मित भ' गेलौं दूरवासी माचवे जी केँ उत्तर बिहारक मैथिली भाषाक गतिविधिक एतेक जानकारी ! हम चुप रहि गेलौं—कारण नहितँ हमर दिमागमे कहियो इ सभ विचार आयल छल आ नहि तँ सोचबाक फुरसत छल.

चारि बजे सुधेन्दु दा हमरा सभकेँ कन्फरेंस हालमे ल' गेलैथ. सभभाषाक कवि सभ किछु पहुँचल छलाह किछु पहुँचि रहल छलाह. हम मैथिलीमे एखन धरि असगर छलौं. पाहुन आ जय घूमवा लेल चलि गेल छलाह. तावत धरि एकटा आर महिला सीधा आँचर नेने, सुन्नर सनक, अपन बाल बच्चा संग एलीह. हम तुरत पुछलहुँ—अहाँ मैथिली छी की ?—ओ बजलीह हँ हँ देखु ने हम पहिलुक बेर आयल छी. हमरा पता नय अछि जे एहि सभमे की होयत अछि ?—खैर दुनू गोटे कनिक काल धरि गप सप करैत रहलौं, पता लागल ओ एखन लिखते छथि, प्रकाशित नय भेल छथि. मैथिलीक मूर्धन्य विद्वान् जयकान्तजीक पुत्री छलीह लीलाजी. तावत धरि वीरेन्द्र मल्लिक, सुकान्त सोम पहुँचि गेलैथ. ज्ञात भेल जे व्यासजी, गोविन्द जी सभ आवय वाला छथि.

कन्फरेंस शुरू भेल—मैथिली, मणिपुरी, आसामी, उड़िया आ बंगला कवि सभक परिचय सुधेन्दु दा सभसँ करवय लगलन्हि. सभ कवि लोकनिकेँ साहित्य एकेडेमी सँ एक एक टाक बेग, पेड आ कलम भेटल. एहि बीच एकटा आर

महिला एलीह. वीरेन्द्र जी परिचय करौलन्हि मैथिलीक इला सिंह. सभ सँ अनायास भेंट होयत मोन खुश भ गेल. पाँचो भाषा क कवि लोकनि मे विचार विमर्श आ तर्क वितर्क क उपरान्त काल्हुक विषय क निर्णय भेल—''आधुक कविता मे छन्द आ मात्रा.

हम सभ अपन समय यात्रीजीसँ चुनलहुँ. आब हमर समक्ष दू-दू सिंघाड़ा आ एकटा रसगुल्ला प्लेट मे आयल. एकटा फाजिल प्लेट छल जाहि सँ मिठाई निकालि हम सुकान्त जी केँ द' देलौं. कॉफीक कप आयल. फेर एक कप फाजिल. सुकान्त जी कॉफी नय लेलैथ. हम अपन ठीक सामने बैसल उड़ियाक कवयित्री प्रतिभा सत्पथी दिसि देखलौं जकर मोहिनी मुस्कान सँ हम अभिभूत भ' गेल छलौं. फाजिल कॉफी आधा हम अपन कप मे ढारि लेलौं आधा प्रतिभा जी कें देम' गेलौं मुदा, ओ एकदम नकारि देलीह. हमर मोन कोनादन भ' गेल. एहि मोहक मुस्कानक पाछा की संवेदन शील भावुक हृदय नय अछि ? हम प्रतिभा जीक बगल मे बैसल उड़िया कवि राजेन्द्र पाँडा कें ओ काफी द' देलौं. ओ हँसि कें काफी स्वीकार केलन्हि.

आब हम सभ स्टेडियम दिसि बिदा भेलौं. मैथिली ग्रुप एक स्थान पर बैसलौं. हमर सभक ठीक पाछा डा० प्रभाकर माचवे जी अपन पत्नीक संग बैसल छलाह.

सामने मंच पर उमाकान्त जोशी क संग महाश्वेता देवी (साहित्य एकेडेमी एवार्ड विजयनी. बंगला लेखिका) बैसल छलीह. ओ अपन एवार्ड लेबा लेल दिल्ली नय जा सकल छलीह. हुनका ओ एवार्ड एहिठाम देवाक प्रबंध छल. उमाकान्त जोशी जी हुनका एवार्ड दय अपन वक्तव्य देलन्हि. पुनः महाश्वेता जीक अभिभाषण भेल-मर्द समाज के उघारि कँ अपन ओजस्विनी भाषण मे ओ राखि देलीह. देश प्रेम क भाव केँ सुदृढ़ करबा लेल ओ बजलीह—हम बंगाली छी तँ की हमरा बिहार क चासनाला कांड पर लिखवाक अधिकार नय अछि ? पंजाबक कोनो घटना पर की हम नय लिखि सकैत छी ?—हुनक वक्तव्यक तेजस्विता मे मंत्र मुग्ध भ' गेल छलौं.

पाछा मे माचवे जीक स्वर सुनि घुरि कँ तकैत छी तँ ओ अपन पत्नी सँ हमर परिचय करौलन्हि. हमर ग्रुप चौंकि गेल. आब पोएटस वर्कशापक उद्घाटन भेल. रवीन्द्र संगीत कें पाँचो भाषा मे अनुवाद कय सुनाओल गेल. उमाकांत जी कें अपन पुस्तक विप्रलब्धा भेंट केलहुँ.

९ बजे रात्रि हम सभ टैक्सी सँ घर घुरलौं. दीपक भानस कय बैसल छलीह. कतेक काल धरि गप सप हँसी मजाक क बाद हम सुतबाक उपक्रम कर' लागलौं. एके कोठरी मे पलंग पर दीपू आ पाहुन, सोफा कम बेड पर हम सोनी आ बॉबीक सँग सुतल छलौं—मुदा आँखि मे नीन्न कत' नव जगह, नवं परिवेश-मोन उड़ि सहरसा मे बाल बच्चा लग चलि गेल. मोन पड़ि आयल टैक्सी पर घुरैत काल अमर बाबू जयक संग सुकान्त जी, वीरेन्द्र जी दुनू गोटे छलाह—अमर बाबू परिहास सँ बाजल छलाह—हँ, तखन, आय वर्कशाप मे की सभ प्रोड्यूस भेल ? हम साहू भाय के सहरसा लिखब.

दोसर दिन भिनसरे नींद टूटैत अछि तँ देखैत छी हीटर पर चाहक पानि चढ़ल अछि आ दीपिया बिस्तर पर औंघायल. हँसी आबि जायत अछि कतेक काज करैत अछि भरि दिन. समष्टि लेल व्यष्टिक समर्पण—नारीक शक्ति अमोघ अछि. हम अधखुजल आँखिसँ ओकरा दिसि ताकि रहल छी पानि केतली महक उधियाई रहल अछि-- पता नय ओ कोना बुझि जायत अछि—धड़फड़ा कें उठैत अछि—चाह बनाए हमर पएर हिला रहल अछि. हम तुरत उठबाक अभिनय करैत चाहक कप ल' लैत छी ? पंखा चलि रहल अछि मुदा कतेक तपन आ घुटन कलकत्ताक वातावरण मे घुलल अछि. शंभु जी अबैत छथि आ गुड मार्निंग दीदी बजैत चाह पीब लगैत छथि.

नहा धो क' दुर्गा पाठ करबा लेल बैसैत छी. मोन पाठ मे लागि नय रहल अछि. मुदा, टूकू जी घर कें साफ सुथरा कय पूजा करबा लेल ठीक कय देने छलाह. मोन कें एकाग्र करबाक चेष्टा करैत छी.

सुकान्त जी नजदीके रहैत छलाह. हुनका कहने छलौं कार्यालय जेबाक काल हमरो साथ क' लेबा लेल. अस्तु, हुनका एबाक उपरान्त अमर बाबू जय कें सेहो साथ कय देलैथ जे दबीक बस मे एतेक भीड़ रहैत अछि जे एक उतरैत अछि तँ दोसर छुटि जायत अछि. साँचे, बड़ भीड़ छल बस मे. हमरा तँ बैसबाक स्थान भेटि गेल मुदा सुकान्त जी आ जय ठाड़े रहलाह. सियालदह स्टेशन अबैत अबैत बस मे जे भीड़ शुरू भेल तँ आदमी जांतक दुई पाटक मध्य दालि जकाँ दरड़ा गेल. हमर देह पर कतेको स्त्री पुरुष झुकल छल जे यदि हम बसक भीतर देखैत रहितौं तँ दहसत सँ मूर्च्छित भ' जेतौं. हम खिड़की सँ बाहर देखैत रहलौं—लोग कोना रहैत अछि एहि कलकत्ता मे ? कवीन्द्र रवीन्द्र क कलकत्ता, शरत शंकर क कलकत्ता, बिमलमित्रक कलकत्ता ! हम एक दिन बस मे जा रहल छी तँ हमर

बस छुटि रहल अछि मुदा, जकर दिनचर्या इएह थीक ? आह के स्त्री थीक आ के पुरुष — ई देखबाक समय केकरा अछि ? सभ अपन अपन धुन मे, अपन अपन प्रवाह मे जलधार जकाँ बहल जा रहल छल ! जेम्हर देखैत छी मनुक्ख मनुक्ख. मनुक्खक एहि जंगल मे केओ अनचिन्हार जाय तँ भटकि जाय. हम भयभीत भय जायत छी एकटा मृगशावक जकाँ—कहीं हम नय भोतिआय जाय एहि मानवक जंगल मे —कहीं हम नय ··

हमर सभक पड़ाव अबैत अछि. सुकान्त जी हमरा ओहि भीड़सँ घीचैत बस सँ उतरि जायत छथि. एकबारगी कलकत्ताक पवन हमर साँसे देहसँ लिपटि जायत अछि आ किछ क्षण पूर्वक स्मृति मेघमाला सन विलुप्त भ' जायत अछि.

जय बाबूकें ओहिठाम छोड़ि दैत छी कलकत्ता घूमबा लेल. स्वयं भगैत छी जल्दी जल्दी सुकान्तजीक संग. मोनमे एकटा भय — फेर केओ दबी बसमे हमरा नय चढ़ाय दैय—

सर्वोदयक कान्फरेंस हालमे सुधेन्दु दा सभ ग्रुपकें बाँटि दैत छथि. मैथिली ग्रुप कान्फरेंस हालमे छल. सभक आगुमे कागज देल गेल अपन अपन परिचय – पूर्ण परिचय भरबा लेल.

वीरेन्द्रजी छंद आ मात्राक विषयमे लिखि अनने छलाह. मोन नय लागि रहल छल. कहाँ तँ व्यासजी, गोविन्दजी कें अयबाक गप छल आ कहाँ सभ अपन अपन अनुभव सुना रहल छलाह. हमहुँ अपन किछ बीती—आपबीती बजलौं—कोना सत्य नारायण भगवानक पूजामे हम कविताक सृजन केलौं—हमर मोनक कोमल वृन्तसँ जहाँ निज नेह-गेह निर्माण केलौं. हमर भावनाकें वरि, हमरे पर शर-संधान केलौं – कोना गाममे नाह पर घुमैत घुमैत —कूल कतौ भेटि जायत, चलैत मझधारमेक सृजन भेल···.

एहि बीच सुधेन्दु दा हमरा सभकें लंचक लेल उपरका फ्लोर पर लय गेलैथ. सभ ग्रुप आबि चुकल छल. सभक हाथमे एक एकटा डिब्बा आ एक एक बंका चम्मच देल गेल. कागजक ओहि डिब्बामे पोलाव, प्लास्टिकक खोलमे रबर बेंडसँ बान्हल दूटा तरकारी, दूटा मिठाई आ माछक कटलेट. हम हँसैत रहलौं, डिब्बा सँभारी कि भोजनकरी—कलकत्तामे खुएबाक ढँग देखि लेलौं. वीरेन्द्र जी बजलाह—सहरसा जायब तँ कोना खुआयब—? —थारीमे सभ चीज सजाकय हृदयक संग परसब—औपचारिकताक सँग नय.

लीला बजलीह—एकटा तँ हृदय अछि—केकरा केकरा लग परसब ? हम बाजलौं—लीला, अहाँ गलत बुझैत छी. नारीकेँ हृदय छोड़ि अछिए की, जाहिमे स्नेह, प्रेम, ममता, वात्सल्य भरल रहैत अछि परसबा लेल—लुटएबा लेल आर अपन ओकरा किछ नय अछि. सभ अभिभूत भ' गेल. लचक बाद दोसर भागक बैसकीमे हम सभ भाषा भाषी एके संग बैसलौं. उड़िया ग्रुप अपन लेख 'कविता' पर सुनौलक. फेर बंगला ग्रुप, किछ देर धरि बहस चलैत रहल. सुधेन्दु दा बजलैथ हम सभ आब अपन अपन ग्रुप छोड़ि एक दोसराक ग्रुपमे मिलि बैसी. हमर बगलमे उड़िया कवि हरीश जी आबि बैसि रहलाह. एम्हर ओम्हरक गप होयत रहल. संस्कृति आ सँस्कारक ताना बाना बुनल जाइत रहल. हमर दृष्टि घड़ी पर गेल. तीन बजे जयके अएबा लेल बजने छलौं. गप करैत छलौं, मोने आशंका छल जय बाबू नय अओताह तँ फेर आदमीक एहि जंगलमे हम भोतिआय नय जाय. मुदा, जय आबि गेलैथ. सुखेन्दु दासँ आज्ञा लय बाहर अयलौं. बाहरमे प्रतिभा सत्पथी रोकि लेलीह—दुई मिनट हमरो लग बैसू तखन जायब. ओहि दिन कॉफी—अस्वीकारक दुख बिसरि हम हुनका लग बैसि रहलौं. ओहि ठाम साहित्य एकेडेमीक एकाउन्टेन्ट ओमप्रकाश जीसँ बड़ काल धरि गप सप होइत रहल. साहित्य एकेडेमीक गली गलीकेँ चीन्हैत रहलौं. हमर सभक कलकत्ता प्रवासक फूल पान ओहि ठाम ओ दय देलन्हि.

जयक सँग टैक्सी सँ रवीन्द्र सारणी लेल विदा भेलौं. जय दिनमे भोजन नय कैने छलाह. हमरा कारण ओ भरि दिन शेक्सपीयर सारणी लग चक्कर लगबैत रहलाह. एक हमरा कारण अमर बाबू अपन काम धाम छोड़ि सदिखन हमर आगु पाछु करैत छलाह. हरदम बजैत छलाह—दीदी लेल कोनो 'फार्मेलिटी' नय—जहिना हम सभ रहैत छी दीदी रहथीन—मुदा, रोजे माछ. मौसक किछ न किछ, विशेष सरंजाम रहैत छल.

तैयार भ' क' हम सभ मौसी ओत' महात्मा गाँधी लेन लेल विदा भेलौं. ओहिठाम माँक समाचार ज्ञात भेल. पेट भरि जलखै, मोन भरि हँसी मजाकक सँग हम सभ वापस रवीन्द्र सारणी आयलौं. हम दीपूसँ साफ कहि देलौं जे आब रातुक खेनाय बंद. शंभुजी बजलाह—दीदी. अहाँ बड़ थाकल लगैत छी. चलु अहाँकेँ शरबत पिआय दैत छी. दीपूक घरक तिमंजिला सीढ़ी पर बेर बेर चढ़नाय-उतनाय हमरा लेल दुष्कर छल. मुदा, हुनक आग्रहकेँ स्वीकार कर' पड़ल. रुक्का आ सोनीक संग शरबत हाउस गेलौं. पहिने गुलाबक शरबत पुनः केवड़ाक शरबत

पीबि मोन सरिपहुँ तरोताजा भ' गेल. ज्ञात भेल जे० पी० एहिठाम बैसि शरबत पीबैत छलाह.

विचित्र प्रकृति अछि शंभुजीक. भोरे हुनकासँ पुछने छलहुँ—अहाँ की करैत छी तँ कहने छलाह—पुजारी छी दीदी. हम चौंकि गेल छलौं—की बजैत छी अहाँ ?—ठीके बजैत छी दीदी—हम कतेक देर धरि भावनाक सागरमे डूबैत उबरैत रहलौं—कतेक गंभीर प्रभावशाली व्यक्तित्व शंभुजीक, मुदा कतेक [illegible]—

दोसर दिन भोरे सुकान्त जीक संग विदा भेलौं. हम ओहि दिन कान पकड़ने छलौं अपन, कि बसी० बससँ आब कहियो नय जायब. हम कलकत्ता मृत्युक वरण करबा लेल नय आयल छी. भरि रास्ता हम घर-गृहस्थीक गप करैत रहलौं. आर्थिकता पर निर्भर संबंध कोना बनैत-बिगड़ैत अछि—रुपया पैसाक तुला पर कोना रिस्ता नाता तौलल जाइत अछि—सब संबंधक जड़ि अर्थ जे अनर्थ अछि. रवीन्द्र सारणीसँ शेक्सपीयर सारणीक एकटा नम्हर यात्रा छल जकरा कविक कर्मशाला जकाँ दुई सिरान सँ बाँध' पड़ैत छल. एक [illegible] रवीन्द्र सारणीसँ एसप्लेनेड—दोसर एसप्लेनेडसँ प्लेनिटोरियम.

एसप्लेनेड पहुँचला पर हम सभ अपना मे गप कर' लगलौं कत' लागत प्लेनिटोरियम वाला ट्राम. तावत एकटा ट्राम कन्डक्टर मैथिली मे हमर सभक उलझन केँ रास्ता बताय देलक. मैथिली सुनि हम एकदम चौंकि गेलौं. एतेक बड़का विदेश मे अपन भाषा—मोन आह्लादित भ' गेल.

कन्फरेंस हाल मे मैथिलीक दुइए गोटे पहुँचल छलौं. ओमप्रकाश जी बैसल छलाह. बड़ काल धरि हुनकेसँ गप होइत रहल. हमर सभक ग्रुप आबि गेल—बहसक विषय छल—समकालीन कविता. बहस चलैत रहल. काल-निर्धारण होयत रहल. पायन्टस बनैत रहल, बिगरैत रहल. आलोचनाक रंग ढंग देखि हमर मोन उचाट भ' गेल छल. वीरेन्द्रजी बजलाह—अहूँ किछु बाजु.

हम तँ एखन आलोचना करबाक ढंग सीखि रहल छी, फेर हँसैत बाजलौं—मल्लिक जी, हम अहाँ आलोचना कर' वाला के छी ? काल सभ कृतित्वक आलोचना करैत अछि. फेर हम किछु गंभीर होइत बाजलौं—किछु व्यक्तिकेँ ल' क' हम पूर्वाग्रहसँ ग्रसित रहैत छी. तँ आलोचना करबा काल आलोचक यदि व्यक्तिकेँ बिसरि मात्र कृतित्वक आलोचना करय तँ ओ स्वस्थ आलोचना होयत. अपनो सभकेँ व्यक्तिकेँ बदला रचनाक आलोचना करबाक चाही—आ स्मृतिमे

चमकि जायत अछि, तड़ित-रेखा सन—डॉ० शेखर हमरा सभसँ संबंधित रचना सभ पर शोधक' रहल छलाह तँ हमरा नौ गोट प्रश्न पठौने छलाह उत्तर देबा लेल. जाहि मे एकटा प्रश्न छल—"आपकी तुलना महादेवी जी से की जाती है और महादेवी जी के जीवन से हम सभी परिचित हैं. आपकी क्या राय है?"

आ हम क्षण भरि लेल अकचकाय गेल छलौं, किछु मोनक खिन्नता सेहो तन-मोनकेँ उदास क' देने छल मुदा वर्मा जी जेना, हमर आगु आगु सतत प्रकाश ल' क' चलैत छलाह—एहि मे अहाँ उदास किएक भ' गेलौं? एकर तँ सोझ उत्तर अछि—'हम जनैत छी लोग हमर रचनाक तुलना महादेवीसँ करैत छथि नहि कि हमर जीवनक…"

आ हमरा स्पष्ट आलोकमय पथ देखा पड़ि गेल छल "आय वएह स्थिति वएह वातावरण…"

की सोच' लगलौं…वीरेन्द्र जीक स्वर सुनतहि हम यथार्थताक भावभूमि पर टकराय गेलौं—सभक पोथी पर विचार करैत करैत आब आबि गेल हमर पोथी 'विप्रलब्धा'. आ सभ जेना अकचका गेल छलैथ. सभ एक दोसराक मुँह ताकय लगलैथ. एखनधरि ओ लोकनि सभ कवि, कवयित्री पर मुक्त कंठे चर्च करैत छलाह. स्वयं अपन-अपन कृति पर सेहो. अचानक ठीक हमर नामक बेर—! ओहि समय हम स्वयं अपन दृष्टि मे अनचीन्हार भ' गेल छलौं. विचित्र जिनगी लोग जीबैत अछि, बाहर किछ भीतर किछ हमर दम जेना घुट' लगैत अछि दुई गोटे धरि ठीक रहैत अछ मुदा तीन सँ चारि जेना हमरा लेल भीड़ भ' जायत अछि. ओहि भीड़ मे हम असगर रहि जायत छी, कतेक असगर – के बुझत? मानव दोसराकेँ अपन हृदयसँ चीन्हैत अछि. अपन मोनक बटखरासँ. की हमर मोनकेँ केओ जानि सकल? कवि बच्चन ई पाँती जेना हमरे लेल लिखने होथि—

"मैं छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता
शत्रु आज बन गया छल रहित व्यवहार मेरा।"

अचक्के इलाजीक प्रश्न जेना झकझोरि देलक—अहाँ अपन कविताकेँ कोन 'वाद' में बुझैत छी?—आ हम सोच' लगलहुँ—हम अपन हृदयकेँ कोन 'वाद' मे बान्हि 'विप्रलब्धा' मे रखने छी—प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, छायावाद…? हम किछ लिखैत छी तँ मात्र अपन मोनकेँ हल्लुक करबा लेल. लिखबाक उपरान्त जेना प्रसव वेदनासँ मुक्ति भेटि जायत अछि. एकटा नम्हर सांस शान्तिक, चैनक छातीक

[illegible] वातावरण मे [illegible], [illegible] लिखबाकेँ पोस्टमार्टम हम [illegible] करी? आ हम [illegible] भ' गेलौं. निरपेक्ष रहि गेलौं हम [illegible] प्रार्थना करैत छी जे हम केकरो [illegible] नीक जे हम केकरो सांत्वना दय सकबाक योग्य बनी.

[illegible] देखि रहल छलाह. आ हम हुनक [illegible] रहि गेल छलौं. आ फेर ओहिठामसँ उठि [illegible] गप करबा लेल चलि गेलौं. दस मिनट बाद [illegible] नाँघि आगु बढ़ि गेल छलाह.

[illegible] उदास छल. मुदा, ऊपरसँ हम एकदम सहज आ शांत छलौं. [illegible] हृदय मे [illegible] अरस्तू प्लेटोक आलोचना सिद्धांतकेँ मोन पाड़ि [illegible], कोनो साहित्यकेँ बुझबा लेल तर्क वितर्क संशय-असंशय भरल [illegible] कवि मोनक सहृदयता एवं सहसंवेद्यता रहबाक चाही, तखनहि [illegible] आत्मा धरि पहुँचि ओकर गुण-अवगुणकेँ उजागर कयल जा सकैत [illegible].

—[illegible] लेबा लेल समय भ' गेल पूरा ग्रुप हम सभ उठि लंच रूम [illegible]

पुनः वएह पैकेट. आइ पोलावक संग माछ सेहो छल मुदा, हमर मोन वसन्तक [illegible] सन सांय सांय करैत उदास लागि रहल छल.

भोजन क उपरान्त नीचा हॉल मे हम सभ एकत्र भेलौं. हमर बगल मे [illegible] कवि भास्कर चक्रवर्ती बैसि गेलाह, केओ हमरा सभक समक्ष 'ऐश ट्रे' राखि देलक. सामने बैसल इलाजी बजलीह—एहिठाम ऐश ट्रेक कोन आवश्यकता अछि? हम बाजलौं—इलाजी ई ऐशट्रे हमर सभक जिनगी सन अछि जाहिमे तमाम इच्छाक छाउर राखल रहैत अछि—एकर सही स्थान वएह थीक भास्कर जी बाजि उठलाह, हमर एकटा दोस्त लिखने छथि—"मैं ऐश ट्रे की तरह टेबुल टेबुल घूमता रहा…" हम अपन हिन्दी कविताक दुई पाती सुनयलौं –

अपना जलता सिकसता दिल याद आ जाता है
जब तुम्हारे होठों में लगे सिगरेट देखती हूँ…

भास्कर जी वाह वाह कर' लगलाह. किछ क्षण उपरान्त भास्कर जी सिगरेट सुलगाय लेलन्हि. आब धुँइयाक महक सँ हमर हाल बेहाल. भास्कर जी, हम सिगरेट पर कविता लिख सकैत छी मुदा सहन नय क' सकैत छी –ओ तुरते माफी माँगि सिगरेट बुता लेलन्हि.

प्रसिद्ध साहित्यकार नरेन्द्रनाथ जी हमरा सभकें कविताक गतिविधि बंगलामे बताय रहल छलाह. हुनक रसपूर्ण, कवित्तपूर्ण वक्तव्य स हमर हृदय आह्लादित भ' रहल छल. उड़ियाक कवि अश्विनी जी हुनका सँ किछ प्रश्न पूछलन्हि. किछ प्रश्न आसामी कवि नवकान्त बरुआक दिसि सँ छल. हमरो मोनमे प्रश्नक किछ लहरि उठि पुनः मोनमे समाहित भ' गेल.

उड़िया कवि हरप्रसाद जी हमरा "वोरटेक्स" पत्रिका भेंट केलन्हि. वोरटेक्सक अर्थ पुछला पर राजेन्द्र पाधा जी इशारा सँ बुझेलन्हि नदीमे जे गोल गोल रहैत अछि''''' हम बाजलौं –भँवर यस यस ओ बजलाह—

हम कहलौं इ तँ बड डेंजरस—डुबि जाउतँ उबरु नय—

चारि बाजि गेल छल. हमरा ल' जेबा लेल जय आबि गेल छलाह. वीरेन्द्र जी बजलाह—समय भेल नय कि अहां नेना जकां बस्ता समेटय लगैत छी. हम मुस्काइत विदाभ' गेलौं त' बाबु सिंह पुछलन्हि—किधर ?—हम बाहर दिसि इशारा केलौं—उधर—

इला जी केकरो सँ कहि रहल छलीह—शेफाली जी ततेक हँसैत छथि जे सभ, हुनके पाछा रहैत अछि. हँसबाक मोन होय त' हुनके लग जाउ. —कानमे हमरा, इ स्वर पड़ैत अछि आँखिक आगु गंगेश गुंजन जीक छवि काँपि जायत अछि, पटना आकाशवाणीमे ओ जखन छलाह. हमर कविताक पाठ छल—ओ पुछलन्हि—अहाँ एतेक हँसैत छी आ कथा कवितामे एतेक वेदनामयी छी ? हमरा अपन उत्तर मोन नय अछि—हँ हम हँसैत ओहिठामसँ आबि गेल रही. गुंजन जीक प्रश्नक छाहरिसे 'हमर हास' कविता घर पहुँचतहि लिखने छलौं ''

हमर हास अहाँ सुनलौं/अविकल निर्झर झहरैत झर झर'''''' ओ कतए भेटत एहि यांत्रिक युगमे/चहकैत चुहकैत प्रकृत हँसी/अधरो बनि गेल मशीन/कौखन कोन काँटा गतए जायत/मुहक ठोर सिकुड़त सकुचायत तखन बनैत अछि एकटा हँसी/ जकर नाम छी 'फार्मेलिटी'/आजुक युगमे जहिना गन्हैत गन्हायत आबैछ घर नोड़ी/ जहिना ठोर पर नचैत अछि हँसी छौंड़ी'''

[illegible] क' [illegible] पहुँचैत छी त' माथ एकदम भारी छल. मोन नीक [illegible] सुकान्त जीक संग कर्मशाला लेल विदा भेलौं. देह जेना [illegible] हम सुकान्त जी कें टैक्सी लेबा लेल कहलौं —अपन सहरसा मोन [illegible], जाहि ठाम अपन पहिचान छल, अपन अस्तित्व छल, संगे चैन — [illegible] हमर [illegible] पीकी, लीली, गुड्डू, गुड्डी, अपन पापाक संग, भरल घर [illegible] अनुभूति—जे हम प्रतिपल बुझैत रहैत छी—

[illegible] पर कविता होइत रहल. टैक्सीक एक दिसि रौद अबैत छल, एक दिसि छाहरि. हमरा [illegible] रौद अबैत छल त' सुकान्त जी ससरि हमरा छाहरिमे ल' [illegible] आ सुकान्त जी लग रौद अबैत छल हम ससरि हुनका छाहरिमे ल' [illegible] जेना हम अपन छोट भाय असीम कें प्रतिपल दुख आ त्रास सँ [illegible] हँसी अबैत छल—सुकान्त जी इएह जिनगी थीक रौद आ छाहरि—सुख आ दुख. अचक्के सुकान्त जी घबड़ाय कें बजलाह — घसकु-घसकु — [illegible] दिसि बड़ देर सँ रौद अछि. हम घसकैत हँसि पड़लौं—कखनहुँ-कखनहुँ एहनो होइत अछि मानव दुख सहबाक एतेक अभ्यस्त भ' जाइत छैक जे सुखक क्षण अबितो अछि त' ओ बुझि नय पबैत अछि—

आ एहि रौद आ छाहरिक मध्य कार्यालय आबि गेल. सुकान्तजीकें मना करलहुँ उपरान्त टैक्सी भाड़ा हमहीं देलौं—सभ दिन त' अहीं दैतछी आय हमरे''' '''बीचेमे बात कटैत सुकान्त जी बजलाह—हँ, अहाँक कथीक कमी ? अहाँ तँ पीपीक पत्नी छी—मोने हँसी आयल—पीपी ? मुदई मुद्दालह केकरोसँ किछ लेनाय गोमांस बुझैत छलाह पीपी साहब. अपन सिद्धान्त पर हिमालय सन अडिग.

कान्फरेन्स हालमे एखन धरि केओ नय पहुँचल छल. तामसो उठल, मुदा, आस्ते आस्ते एकेक कय सभ आबि अपन अपन ग्रुप बनाय बैसि गेलाह. इलाजी समकालीन कविता पर लिखिकें अनने छलीह अंग्रेजीमे. कोना दन लागल. कारण जे एक दिन पहिनहि निर्णय भ' गेल छल जे सभ केओ अपन अपन भाषामे लिखिकें अनताह जाहिसँ हम एक दोसराक भाषा बुझब आ नहि बुझबाक आनंद लेब आ फेर संपर्क भाषामे ओकर विश्लेषण' कयल जायत. मुदा भेल किछ नय. हम कत' कमजोर भ' रहल छलौं ? हमरा सभकें जोड़' वाली भाषा या तँ बंगाली छल या अंग्रेजी. मातृभाषा मैथिलीतँ दूर, राष्ट्रभाषा हिन्दीयो निर्वासिता सीता जकाँ अरण्य

रोदन क' रहल छलीह जेकर अस्पष्ट ध्वनि कखनहुँ काल वातावरणमे पसरि जायत छल. हम विवश छलौं, हमर संगी सभ विवश छलाह. मुदा, इ विवशता कोन छल जे सभक हृदयमे सरस्वती जकाँ चुपचाप प्रवाहित भ' रहल छल. एकटा भय, एकटा संकोचक धार अंग्रेजीक उदधिमे हिलकोर क' रहल छल. पता नय के समझा पाओत के नहि ? मानव की कहियो अपन विवशता हँटा पाओत ? परंपराक निर्माता रहितो मानव आखिर कहियाधरि परंपराक शिकार होइत रहत ? सभ लेखक, सभ कवि एकेटा भावनाक साम्राज्य लय एहि बर्कशापमे एलैथ. आँचलिक भाषा पाँच छल मुदा संपर्क भाषा विदेशिए किएक ?

समकालीन कविताक आलेख पर चर्चा होइत रहल. हम मौन मूक मैथिली आलोचनाक जन्म देखि रहल छलौं. इला जी, वीरेन्द्र जी, सुकान्त जी सभक कविताक उद्धरण छल. सभ नामक मध्य एकटा, हमरो नाम कलमसँ टघरल स्याही जकाँ ओहिठाम पड़ल छल. हमरा रहल नहि गेल—'इलाजी कवि जकाँ कवयित्री गणक संख्याक सेहो कमी नय अछि. अपन मैथिली साहित्यमे डॉ॰ शान्ति सुमन, नीरजा रेणु आदि आदि—इला क्षमा माँग' लगलीह' 'गलतीसँ छूटि गेल' आ हम सोच' लागलौं मैथिली आलोचनाक इ ठकुर सुहाती रूप कोना—किएक'''. लंचक बेर सभ ग्रुप एक भ' गेलौं हाथमे पैकेट आ चम्मच नेने, एक दोसरासँ गप करैत हम सभ खाय रहल छलौं. हर प्रसाद अपन पैकेटसँ एकटा मिठाई हमर पैकेटमे द' देलन्हि आ एकटा राजेन्द्र जीक पैकेटमे. राजेन्द्र जी अपन मिठाई हमरा द' देलन्हि. बाबू सिंह हमरा बजाय पुछ' लगलन्हि— 'विप्रलब्धा' अहाँ लिखने छी ? हम ओकरा पढ़ि बुझि गेलौं. हर प्रसाद जी बजलाह विप्रलब्धा उड़िया शब्द थीक एकर अर्थ अछि 'सेपरेटेड वुमेन'. नवकान्त बरुआ कहलन्हि अहाँक विप्रलब्धा हम किछ किछ बुझैत छी. आ हम एहि संवेदनशील वातावरणमे सभसँ मैथिलीमे गप करय लागलौं सभ अपना अपना ढंगसँ मैथिलीमे उत्तर देबा लेल तत्पर.

आय कर्मशालाक अन्तिम दिन छल, कालिह साँझमे खाली कवि सम्मेलन होयत. बाबू सिंह बजलाह— हम अहाँ लग बैसवा लेल चाहैत छी. अवश्य-अवश्य कहि हम अपन बगलक कुरसी हुनका दिसि बढ़ाय दैत छी आ ओ हमरे कविता हमरा सुनव' लगलन्हि. बीच-बीचमे अर्थ सेहो बताय दैत छलाह. मणिपुरी कविक मुँहसँ अपन मैथिली कविता सुनि मोनपाखी सुदूर नीलाकाशामे खुशीसँ नाच'

[illegible] अनुभूति ! कतेक [illegible] प्रशंसा करयमे कओो पाछा [illegible].

[illegible] हृदय [illegible] छल. मैथिली आत्मामीक लेख [illegible] कविता रचि रहल छलैक—

[illegible] संगम, आत्मा एक, भाव एक. मुदा
[illegible] दोसरा लेल/अनचीन्हार, अनजान
[illegible] समीप—एतेक नजदीक/जेना
[illegible] दोसरा केर अंश होय, मुदा भाषा'''?

[illegible] डूबल छलौं आ बगलमे बाबू सिंह हमर कविता जोरसँ पढ़ि [illegible]. सुधेन्दु दा बजलाह—आब अहाँ सभ एक दोसराक ग्रुपमे मिलि [illegible].

राजेन्द्र जी हमरा लग आबि गेलाह—वीरेन्द्र जी, इलाजी हमरा घेर लेलन्हि. सभक आग्रह छल हम एकटा कविता सुनाबी. मुदा, हम नकारि गेलौं. बाबू सिंह बजलाह—सी इस ए रीयल पोएटेस. इ आशु कवि छथि—हमरा सामने एकटा कविता लिखलन्हि— फेर हमरा दिसि तकैत बजलाह— शेफाली जी ! हू इन्सपायर्स यू ? हमरा बाजवासँ पहिनहि वीरेन्द्र जी बाजि उठलाह ओनली—हर हसबेंड. बाबू सिंह चौंकि गेलाह—इज इट ट्रू ?

यस, ट्रू हँड्रेड परसेन्ट ट्रू—हम हँसैत बजलौं—आय हैभ ओनली माय हसबेंड टू इन्सपायर मी. हाउ लक्की यू आर—बाबू सिंहक दृष्टि हमर आनन पर सार्थक रेखा खोज' लागल.

हर प्रसाद जी उड़िया लोकगीत गाब' लगलाह—पाँचो भाषाक आंगुर टेबुल पर ताल द' रहल छल. सुकान्त जी आस्तेसँ बजलाह—अहाँक सरदार जी आबि गेलाह.

देखैत छी जय बाबू आ अमर बाबू. हम दूनू मोटेकें भीतरे बजाय लेलौं कारण जे निकलवाक संभावना नय लगैत छल.

मणिपुरी कवि इबो पिंगाकक कविता—

आय एम ए पेशेन्ट
आय ट्रॉड बरीली अपोन द रोड ऑफ लाइफ···

लगैत छल जेना भावनाक स्तर पर हम सभ एक छी मात्र भाषाक देवार हमरा सभकें अलग केने अछि. आब उड़िया कवि अश्विनी मिश्रा गाबि रहल छलाह—

तुमकु देखिबा पाने/सात पूर्वजन्म आउ
सात परजन्म एक संगे निभायबा···

पाँचो भाषाक ताल अनवरत छल. फेर हमरासँ आग्रह भेल. हम क्षमा माँगलौं—हम खाली कान' जनैत छी गाब' नहि. लीला मधुर स्वरे विद्यापति गीत गओलीह. मणिपुरी गानाक बारी आयल. मैथिली लोक गीत लेल आब हम अपन देओर जय (मोहन कुमार बर्मा) कें फँसाय देलौं—'अहाँ अबैछी किएक ने पहाड़ भेल छी—असमंजसमे ओझा हम तार देल छी···फेर जे सभा बन्हल—पाँच भाषाक थपड़ी उन्मादावस्थामे समस्त वातावरणकें अपन आलिंगनमे बान्हि नेने छल. कतेक देर धरि मैथिलीक माधुर्यमे लोकक मोन रमल रहल, डूबल रहल—

हर प्रसाद जी कहलन्हि—ए ब्यूटीफूल वुमेन कान्ट बी, ट्रूथफूल - ए ट्रूथफूल वुमेन कान्ट बी ब्यूटीफूल.

हम छुटतहि बाजलौं—परहैप्स इटस योर ओन एक्सपीरीयेन्स—

सभक ठहाका गुंजि गेल. ओहि समय हॉलमे पसरल उन्माद वस्तुतः हँसीक नहि रूदनक छल. सभ कानि रहल छल. बाबू सिंह—बजलाह—

आजुक बाद हम सभ एहि जनममे फेर मिलब वा नहिंके जनैत अछि.

हर प्रसाद जी बजलन्हि—हम जगन्नाथ संगीत गायब.

बंगला – हम कवीन्द्र संगीत

मैथिली—हम विद्यापति संगीत—

आ [illegible] थपड़ी बाजि उठल छल. समस्त वातावरण झुमि रहल छल. [illegible] मोन नय होयत छल. सभकें होयत छल समयकें मुट्ठीमे बान्हिकें [illegible].

[illegible] एक आँखि मे हँसी सजल—एक आँखि मे [illegible] ! हँसी आ [illegible], सर्द आ गर्म, राति आ दिन, अंधकार-प्रकाश सभ जेना [illegible] भ' थिरकि रहल छल.

[illegible]—उड़िया ग्रुप पहिने विदा भ' गेल. हम लिफ्टसँ [illegible] उड़िया ग्रुप लिफ्ट लेल ठाढ़. हमरा [illegible]—[illegible]काजीजी !

[illegible]
[illegible]

[illegible] विदा भ' गेलौं. रास्ता मे [illegible] तँ कविता किएक एतेक ट्रेजिक [illegible] ?

हम [illegible] नय [illegible] जीबि नय सकब. हम बिना हँसने—बिना बजने रहि नहि सकैत छी एहि कारणे लोक कतेक बेर हमरा गलत बुझलैय दोसर जे हम असगर नहि रहि सकैत छी. जे भीतरे भीतर कनैत छथि वएह उपर उपर खूब हँसैत छथि, इलाजीक एहि उत्तर पर हमरा लग हँसी छोड़ि किछ नय छल.

कलकत्ता प्रवासक अन्तिम उषा. हम प्रणाम करैत उठि जायत छी. आय तीन दिनसँ जाहि साहित्यिक वातावरण मे मोन मानसक राजहंस बिचरैत छल अचक्के जेना सभ पाछा छुटि गेल. शंभुजी संग कालीघाट गेलौं कालीजीक दर्शन लेल. मुदा, सदिखन हमरा लगैत अछि जे मंदिर मस्जिद मात्र मानवकें संतोष लेल निर्मित अछि. जखन भगवान आ खुदाक बँटवारा, नाप-जोख, मोल—मोलाय होइ'छ तँ—एकटा अवसन्न मानस-धार अवरुद्ध भ' नास्तिक होमऽ लागैत अछि.

ओना हम पूजा करैत छी. भगवानक फोटो मूर्ति, धूप दीप सभ रखैत छी सभसँ अर्चना करैत छी किन्तु, हम हृदयसँ कबीर पंथी छी, निर्गुण निराकार ब्रह्मक उपासिका. जे हमर अन्तर मे अवस्थित परमात्मा अछि ओकरा छोड़ि हम कस्तूरी

मृगजकाँ विक्षिप्त भटकैत रहैत छी'''जकर हृदय जतेक निश्छल पवित्र रहैत अछि
तकर हृदय मे ईश्वर ओहिना वास करैत छथि'''

आ ओहि दिनक कालीजीक पूजा हमर मानस पटल पर एकटा पेंटिंग जकाँ
उजागर अछि. पूजा एवं दर्शन लेल भक्त जनक अपार जन समूह पंक्तिबद्ध ठाढ़
छल, कतेक दीर्घ पंक्ति ! ओर छोर नय बुझा पड़ैत छल, शंभुजी हमरा संग ओहि
पंक्ति मे लागि गेलाह, डेग डेग पर हृष्ट-पुष्ट पंडा सभ ठाढ़ भ' काली माताक
नाम पर पैसा मंगैत छल. पैसा देबाक बादे आगु बढ़' दैत छल. एकटा साकर
जगह छलैक, जाहि ठाम पंडा स्थानाभावक कारण एक पायासँ दोसर पायाक शीर्ष
पर ठाढ़ छल आ ओकर दूनू पैरक मध्यसँ भक्त जन ओकरा दक्षिणा दैत आगु
बढ़ैत छल. हमर तँ साँस रूकल छल—माताक प्रति सिर्फ विह्वलता छल—मूर्ति-
दर्शनक उत्कंठा तँ खत्म भ' गेल छल. मुदा, शंभुजीक निश्चयसँ शक्तिक दर्शन भेल.
फेर जयक संग अपन छोट मौसी ओत' महात्मा गाँधी मार्ग गेलौं जे कहियो हरिसन
रोड नाम सँ प्रचलित छल. ओहिठाम शंकर माछ खेलौं जकर स्वाद बेस्वाद लागल
छल.

भरि दिन टुक्कू आ मंजूक हंसीसँ घरक संग संग हृदयो भरल रहल'''साँझखन
जयक संग ट्रामसँ विदा भेलौं कवि-सम्मेलन लेल—

थाकल हारल भाषा परिषद्क गेट पर जहिना पहुँचलौं मणिपुरी कवि सभ
रोकि लेलक—फर्स्ट टेक अ कप आफ टी—

एक्सक्यूजी—हम एकदम थाकल छलौं—आय हैव गोट टायर्ड. आय वान्ट
वनली अ ग्लास आफ वाटर.

अंतिम दिन—अंग्रेजी मे हमहुँ जबाब देलौं—नो नो दिस इज आवर फर्स्ट एंड
लास्ट ऑफर ऑफ टी.

आ एहि निर्दोष आग्रहकेँ हमरा स्वीकार' पड़ल.

उपर पहुँचि हम सभक पता हुनके हस्तलिपि मे लेम' लगलौं. कालिह जखन
पता लैत छलहुँ तँ मणिपुरी कवि इबोमेहा सिंह बजने छलाह—हाउ कैन यू रिमेम्बर
ऑल दिज परसन्स ? मि० सिंह, यू नो वेल, पोएट्स हैव ओनली मेमोरीज विथ
देम. वी नो इच अदर विथ आवर सेन्टीमेन्टस.

—हमर उत्तर सुनि ओ सभ मुस्काय लगलाह जेना हम सभक मर्मकेँ छुबि
नेने होय. सरिपहुँ, आयोजक लोकनि लेल कर्मशालाक प्रयास श्लाघनीय रहल.

[illegible] सुन्दर संयोग देलक. पूर्वांचलीय कविक
[illegible] —सभ अनुभूत करैत छल.
[illegible] मुदा, हमर सभक हृदयक भाषाक अभि-
[illegible]

[illegible] जोशी आबि गेलाह. शुभ्र परिधान मे आवेष्टित चिर
[illegible] हमर प्रणामक प्रत्युत्तर दैत हमरा चकित विस्मित कय
[illegible] की, अहाँक [illegible] हम राखि नेने छी. एखन धरि पढ़बाक
[illegible] कर्मशाला खत्म भेलाक उपरान्त पढ़ब.

[illegible] दिय'—हम नमित छलौं.

[illegible] होइत अछि—सभ अहाँ लेल अछि.

[illegible] होइत छथि जिनक व्यक्तित्व मात्र लेखन मे प्रतिभासित नहि
[illegible] अनेक दिशासँ दृष्टि मे प्रकाशमान होइत अछि. अपन जीवन काले
[illegible] पर अपन छाप छोड़ि जायत अछि. किछु एहने व्यक्तित्व छल
[illegible] उमाकांत जोशीजीक.

[illegible] सुविख्यात कवयित्री नवनीता देव सेन आबि गेलीह. हमर बगलमे आ
[illegible] बड़ आत्मीयतासँ टेबुल पर बैसि गेलीह. हमर सिल्कक लाल
[illegible] साड़ी देखि बजलीह.

—अहाँ मिथिलाक भय बंगाली साड़ी पिन्हने छी आ हम बंगालक भय कटकक
साड़ी पिन्हने छी.

—एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे विभिन्न प्रान्तक रहितो हमर सभक आत्मा
एक अछि—विभिन्नता मे एकता.

हमर बात पर जोशीजीक संग सभ हँसय लगलाह.

कवि-सम्मेलन आरम्भ भेल. मंच पर हमर एक दिसि असमिया कवि हीरेन
भट्टाचार्य आ दोसर दिसि उड़िया कवि राजेन्द्र पाधा बैसल छलाह. पाछा कुरसी
पर बाबू सिंह छलाह. हमरा सभकेँ इत्रसिक्त गुलाब भेंट कयल गेल. राजेन्द्र जी
अपन गुलाब उड़िया दिसिसँ हमरा भेंट केलन्हि. शिष्टाचारवश हमहु मैथिली दिसिसँ
अपन गुलाब हुनका देलहुँ. सभसँ पहिने राजेन्द्रजी उड़िया कविताक पाठ केलन्हि—
ओहि बीच हीरेन जी पुछलैथ—अहाँक हसबेंड की करैत छथि ?

पी० पी० छथि - हमर उत्तर

यानी पब्लिक प्रोसीक्यूटर—?

आर बच्चा सभ—?

सभसँ पैघ बेटा दिल्ली मे बी० ए० मे पढ़ैत अछि, व्हाट डू यू से—?

वनली फैक्ट—ओहिसँ छोट बेटी आइ० ए० मे – ओहिसँ···हमर बात कटैत ओ बजलाह—

की अहाँक विवाह चौदह बरीस मे भेल अछि—?

नहि, सोलहम बरिस मे –

तावरि राजेन्द्र जी कविता पाठ कय चलि एलाह, हीरेन जीकेँ विस्मित छोड़ि हम राजेन्द्र जी दिसि उन्मुख भेलौं—

कविता पाठ होइत रहल. सभ भाषा अपन-अपन कविता मे साकार भ' रहल छल. हमर नाम आयल. थपड़ी बड़जोरसँ गुंजि उठल. हम अपन कविता "पिआसल पिआस" (अनक्वेंच्ड थर्स्ट) क पाठ केलौं.

पता नहि एतेक दिनक मिलनक बाद इ अलग हेवाक व्यथा छल आ कि पिआसल पिआस···हमर कविताक पाती-पाती दर्द सँ तीति गेल—पूरा हॉल जेना वेदना सँ भीजि गेल—हम स्वयं अनुभूत कथ रहल छलौं···मौन मे कविताक एकटा पाती नाचि गेल.

सहरसाक कवि सम्मेलन मे वरिष्ठ पत्रकार साहित्यकार जयानन्द झा जी हमरा पर एकटा कविता पाठ केने छलाह—एहि शहर मे एकटा कवयित्री रहैत छथि—दर्दसँ भीजल—व्यथा सँ तीतल···

आ फेर विदा बेलाक अनुभूति मे डूबल उमाकांत जोशी जीक कविता संग कवि सम्मेलन खत्म भय गेल—

मस्त प्रोफेसर हरप्रसाद जी सभ सँ प्रगाढ़ प्रेम मे आबद्ध हाथ मिले लैथि. हम एक कोण में मौन मूक ठाढ़ छलौं.

हरप्रसादजी स्नेहपूरित स्वर सँ बाजलाह—रीमेम्बर अस.

समस्त वातावरण विदाईक व्यथा मे डुबि गेल. सभ एक दोसरासँ विदा ल' रहल छल. असमिया कवि नवकांत बरुआ—

—बहिन जी, अपन हाथ बढ़ाउ—

हम यंत्रचलित हाथ बढ़ा दैत छी—

ओ बड़ आदर आ श्रद्धासँ हमर हाथ अपन माथा पर रखैत बजलाह—

[illegible]—

[illegible]—

[illegible]—

[illegible]—

[illegible]···

[illegible] भाड़ा देब आ हास्पिटेलिटी···

[illegible] कम नय अछि—हमर बात सुनतहि ओ [illegible]—[illegible] आइ वान्ट ओनली हास्पिटेलिटी—

[illegible] निश्छलता पर कतेक अश्रु बिन्दु खण्ड-खण्ड [illegible]···

[illegible]—[illegible] नइ हम फिर मिलेंगे—अर्थ इज राउन्ड—

[illegible] मणिपुरी में अनुवाद कर तुम्हें भेजेंगे···

[illegible] स्नेहक बरखा अन्तरिक्ष सँ, अन्तराल सँ भए रहल [illegible] जाय—पहिल भेंटमे हम जतबा अनचीन्हार छलौं—आय [illegible] दोसरा सँ ओतबे एकात्म—कतेक बाहरोक श्रोतागण हमरा [illegible] कविता लेल बधाई दए रहल छलाह—

[illegible] नहि तँ रुकल अछि आ नहि रुकत—पाँच भाषा सँ निर्मित [illegible] टुटि रहल छल—बिखरि रहल छल हृदयमे नव संबंधक दर्द नेने [illegible] संग—

ओमप्रकाश जी दिल्ली एबाक निमंत्रण देलन्हि. इला जी अपन लोक मे लीला [illegible], सोमजी – वीरेन्द्र जी सभ—सभक चेहरा पर बिलग हेवाक अव्यक्त [illegible]—अस्पष्ट छटपटी आ असह्य यंत्रणा—छल—

एकटा नक्षत्र निलय खण्डित भए रहल छल.



अनन्त गगन (१९८३)

रेलक पटरीयो कतेक बिचित्र होइत अछि—चारू दिसि पसरल छितरल बिखरल कानपुर जंक्सन पर पटरी सभ पडल अछि—मानवो त' कालक पटरी पर एहिना बिखरल पसरल रहैत अछि. रेलक पटरी पर पड़ल यत्र—तत्र डिब्बा जकाँ चारू दिस कतेको चेहरा—कतेक आत्मीय—कतेक अपन मुदा पत्रहीन वृक्ष सन नहि तँ ककरो छाहरि दए सकल आ नहि तँ सुवासित पवनक झोंक.

एकटा गाड़ी आबि रहल अछि, एकटा जाय रहल अछि. केओ मिलनक उत्कंठा सँ विहँसि रहल अछि, केओ बिछुड़बाक दर्दसँ कराहि रहल अछि ! की प्रकृतिक रहस्य थीक ई ? आवागमनक प्रक्रिया जन्म मरणक काल-चक्र, मिलन बिछुड़नक जीवन चक्र सभटा एकटा धुरी पर अविरल चक्कर काटि रहल अछि. मोनक गति आ समयक गतिमे प्रतिक्षण होड़ लागल रहैत अछि. क्षितिजल पावक गगन समीरासँ बनयवाली प्रकृति समूचाकेँ समूचा मानवक तन मनमे प्रतिभासित रहैत अछि. तेँ तँ मानव स्वयं अपनोकेँ नंव चिन्हि सकैत अछि. ओ की चाहैत अछि काश, बुझबाक लेल मनन, चिन्तनक कनिको काल केँ समर्पित भ' सकैथ.

मुदा, रेलक पटरी तोड़ैत अछि त' जोड़ितो अछि. आ इएह भाव सभसँ बेसी हमरा आकृष्ट कैने अछि. तोड़ैत त' सभ अछि मुदा जोड़यवाला बड़ कम लोक. तोड़बामे क्षण नहि लगैत अछि मुदा जोड़बामे कतेको तन मोनक आहुति भ' जायत अछि किन्तु जोड़ि नय पबैत अछि. हम सभ दिन मानवकेँ मानवसँ जोड़बाक प्रयत्नमे लागल रहलौं. सतही मतिवाला व्यक्ति नय त' हमरा समझि सकल आ नहि त' प्रभावित भ' सकल. मुदा, हम अविचल रूपें "वसुधैव कुटुम्बकम्" क उद्देश्य पूर्तिमे सतत प्रयत्नशील रहलौं.

आई ई रेलक पटरी हमरो तँ अपन बेटासँ जोड़बा लेल, मिलयबा लेल लए जा रहल अछि जाहि ठाम जेबाक हम कल्पनो नय करैत छलौं हँ हमर ई भारतवर्षक राजधानी दिल्लीक प्रथम यात्रा छल जाहिठाम हमर ज्येष्ठ पुत्र राजीव वर्मा हिन्दू कॉलिजक इतिहास प्रतिष्ठाक तृतीय वर्षक छात्र छल. एहि तीन बरिस मे ओकर जिनगी कोना-कोना बीतल कहियो हम ध्यान नहि दए सकलौं सिवाय कि दिल्ली वि० वि०मे प्रथम, द्वितीय स्थान लगातार ल' रहल छल. आय ट्रेनक

[illegible] हमर मोनक गति अछि जे राजू लग उड़ि [illegible]

[illegible] छोटकी बेटी तरुणाक जन्म सहरसामे [illegible] हमरा इनफेक्सन भए गेल छलैक. आ ओहि [illegible] सेवा सहानुभूति देखि हमर करेजमे जेना किछ [illegible] दौड़ि-दौड़ि औषध अननाय, भूखल, पियासल [illegible] —ओकर बदला हम ओकरा की देलौ ? ओहि [illegible] निकलि गेल छल. हमर चैन छिना गेल छल. राजू-[illegible] मुदा हम असहाय बिछाओन पर पड़ल छलौं.

[illegible] 'सफर' अछि जकरा हम सभ पार करैत छी. सफर यानी [illegible] 'सफरिंग' यानी पीड़ा. जिनगीक यात्रा तय करबामे कतेक पीड़ा, कतेक [illegible] शारीरिक, मानसिक सह' पड़ैत छैक मानव केँ. मानसिक प्रक्रियाक संग [illegible] जुड़ल रहैछ ! इ अंग्रेजी शब्द 'सफरिंग' सफर केर पीड़ा केँ व्यक्त [illegible] विचित्र संयोग छैक—सफर करैत ई मानसिकता आ सफरिंगसँ जुड़ल [illegible] हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागसँ श्रीधर शास्त्रीजीक पत्र आयल [illegible] हिन्दी साहित्य सम्मेलनक चालीसम् अधिवेशन प्रतापगढ़मे होम' जा रहल [illegible] उपस्थिति अनिवार्य छैक. कतेक बेर हमरा इलाहाबादसँ आमंत्रण [illegible] श्यामकृष्ण भाइ केर बेर-बेर आग्रह ? मुदा सफरिंग भोगि रहल छलौं—सफर नय कए सकलौं.

आ प्रतापगढ़ वर्माजीक संग गेल छलौं. ओहिठाम कालाकिंकर पन्तजीक जीवन स्थलीक प्राकृतिक सुषमा सम्पन्न. सभ किछ अभूतपूर्व छल नहि छलाह त' श्यामकृष्ण भाइ. ज्ञात भेल छल जे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग दूइ पाटमे बँटि गेल छलैक, श्रीधरशास्त्री आ प्रभातशास्त्री. श्यामकृष्णजी सहायक मंत्री प्रभात जीक संग छलाह. साहित्य जोड़ैत अछि तोड़ैत नहि—मुदा, टूटल साहित्य देखने छलौं—भोगने छलौं. ओतेक दूर प्रतापगढ़ पहुँचला पर जखन हम ओहिठाम पुछने छलौं जे एत' सँ दिल्ली कतेक दूर अछि – ज्ञात भेल जे जतबा दीर्घ यात्रा तय कए हम सभ एहिठाम पहुँचल छी ओतबे यात्रा आर करैक उपरान्ते दिल्ली पहुँचब. तखन लागल जे दिल्ली सरिपहुँ बड़ दूर अछि''' ''रस्तामे इलाहाबाद स्टेशन आयल, मोनमे कचोट उठल जे श्यामकृष्ण पांडेयजीकेँ खबर कैने रहितहुँ त' आइ ओ स्टेशन पर अवश्य अबितथि. चित्रकूट

धामवासी धर्मभाइ शिवप्रसाद सोनी, हुनक पुत्र दीपचन्द जिनक हृदयमे हमर एक-छत्र राज्य छल आय यदि हमर यात्राक लेल ज्ञात रहितैक त जहिना सुदामाक आगमन पर कृष्ण खाली पएरे दौड़ल रहैथ तहिना भागि पहुँचि जायतथि. नहि तए हम श्यामकृष्ण भाइकें, नहि शिव आ दीप कें देखने छी, मुदा, कादम्बिनी, सारिका आ राष्ट्रभाषामे प्रकाशित हमर कथा-कविताक माध्यम सँ हम सभ एक दोसराक जन्म-जन्मक संबंधी बनि गेल छी. प्रत्येक राखीमे शिवभाइ पहिने हमर पठाओल राखी पूजाक फूल सन, देवताक वरदान सन धारण करैत छथि, तखन अपन बहीनि सभक. सरिपहुँ, सिनेहक सत्यता कें समयक खण्डसँ नय जोखि हृदयक गहरायसँ अनुभूत करबाक चाही. रिस्ता मात्र रक्तक नहि होयत अछि—हृदयक होइत अछि. रक्तक संबंध कहियो काल तँ विवशता भए जाइत अछि आ कहियो अपन उदात्ततामे विशाल. ''''''आ ओहि अनदेखल भाइ कें प्रति हम सजल हृदयसँ, सजल नयनसँ सादर आभार आ स्नेहसँ भरि जाइत छी. मैथिली साहित्य गगनक जाज्वल्मान नक्षत्र डॉ० जयकांत मिश्र, डॉ० सुधाकांत मिश्र सभ एहि इलाहाबादक पावन भूमि पर छथि. श्रद्धा आ आदरसँ माथ झुकि जाइत अछि—'हे स्टेशनक पावन पवन ! हुनका सभ लग हमर संदेश पहुँचा दिअ', हमर प्रणाम द' आउ, आ हमरा दिसिसँ क्षमा मांगि लेब—हम काते-कात तिनका सदृश प्रबल प्रभंजनक वेगमे उड़ल जा रहल छी—सभक स्नेह स्मृतिक संग.

कोनो पटरी पर गाड़ी लखनऊ दिसि जाइत छल—माथ फेर झुकि जायत अछि एकटा अदबसँ लखनऊक ओहि शायर कवि मौसीकारक लेल—"ये क्या जगह है दोस्तों ! मेरे लिए भी क्या कोई उदास बेकरार है''''''''''" उमराव जानक दर्द जेना लखनऊ दिसिसँ उड़ैत हमर नस-नस कें सिहरा' दैत छल. जेना हमरो लेल कत्तौ केओ उदास अछि, बेकरार अछि''''''. आ ओहिकालक समाजमे नारीक अवस्थाक, हीनताक परिचय मोनकें अवसन्न क' दैत अछि. उमरावजानक पिता फूसि गवाही देलक तकर 'फल भोग' पड़ल बेटीकें. अपहरण कए ल' गेल लोक मुदा, माय बाप लौटबाक दुआर बन्द क' देने छलाह'''''''''''एतेक दयनीय स्थिति छल. नारीक—समाज त' दूर माता पिता धरि ओकर विवशता नहि बुझैत छलाह.

गाड़ी भागि रहल छल—अपना गति मे अपन चालि मे—हमर मोन सहरसाक एकटा सांझ मे डुबिगेल—हम राजू आ अपन देओर जयक संग सड़क पर टहलि रहल छलौं—इजोरिया राति जेना हमरा सभकें अपन श्वेत शांत परिधान मे

[illegible] सहरसाक रेलवे लाइन छल. सामनेसँ [illegible] अबैत अछि जेना हम आत्महत्या कर' [illegible] दिसि भाग लगलौं. राजू नाटक कर' [illegible] डैडी, मम्मी कें रोकू—राजू अपन चाचा [illegible]

[illegible]

[illegible] लंगोट कसिकें अबैत छियौक—सामनेसँ अबैत [illegible] अपन पटरी पर चलि गेल– हम बाजि उठलौं—

"[illegible] रहि गेल—ट्रेन चलि गेल आ मम्मी पटरी पर किस्त – किस्त [illegible]—"

[illegible] भावनाक आँधी छल जाहि मे अहाँ किछु देर लेल चक्कर काट' [illegible] जहिना उठल छल ओहिना अपन बाट ध' चलि गेल—अहाँ फेर [illegible] रहि गेलौं—

—[illegible] अचोक्के में जय कतेक पैघ सत्य बाजि देलन्हि—आ ई हमर [illegible] यात्रा– जे हमरा लेल सर्वथा अकल्पनीय छल. सहरसाक उदास [illegible] स्वयंमे हेरायल खिड़कीसँ अबैत आकासक एकटा खंडकें [illegible] रहल छी. नील आकासक रंग धूसर सन, निश्छल हृदयक सत्यता सँ [illegible] छथि सन. हृदयक सत्यता पर लोककें सहजहि विश्वास नहि होइत अछि – [illegible] जीबाक प्रक्रियासँ त्रस्त मानव. पोस्टमैनक देल एकटा पत्रक [illegible] स्मृति मे आबि गेल—

संबलपुर, उड़ीसासँ पत्र आयल छल समास प्रकाशनक दिसिसँ पूर्व भारत कवि सम्मेलन आ सेमिनार ३-४ जून १९८३ कें छल—आबै जेबाक फर्स्ट क्लासक खर्च संग सभ खर्च। तीन-तीन टा आई० ए० एस० आफीसर आ अश्विनी मिश्राक अनुरोध—हार्दिक अनुरोध—की करी, नय करी ? विचित्र मानसिकतामे छलौं. ९ जूनकें वंदनाकें "आल इंडिया मेडीकल टेस्ट' दिल्लीमे छल—सहरसासँ पटना-पटनासँ दिल्ली आ दिल्लीसँ उड़ीसाक त्रिपेक्षण. मुदा, सभ समस्याक समाधान वर्माजीक संग प्रतिपल रहैत अछि, तखन तँ ओ हमर पतिसँ बेसी फ्रैंड फिलासफर आ गाइड छथि, घर मे हम रजनी छी, बाहर शेफालिका. रजनीसँ

शेफालिका बनएबाक श्रेय हिनके छनि. एकदम निर्णय—हम दिल्ली जायब. १ जूनकें बंदनाकें परीक्षा दिआय २ जूनकें कलिंग एक्सप्रेससँ उड़ीसा लेल विदा भए जायब. —अचक्के एकटा झटकासँ गाड़ी रुकिगेल—स्टेशन छल भर्थना—सोनभद्रकें एहिठाम नहि रुकनाय छल—मुदा रुकबाक कारणे, लगैत छल जेना सोनभद्रक भर्थनाक' रहल होए—अहाँ अपन गति कें सुचारु नहि राखि सकैत छी ? —आ ओहि सँ आगू स्टेशन सकैत छी—अपनो नियम पर नय चलि सकैत छी ? —आ ओहि सँ आगू स्टेशन छल इक दिल—लागल जेना हमरे मोन जकाँ सून-सून, चहल-पहलसँ भरल मुदा अपना आपमे इक दिल—आ सोनभद्र ओहि स्टेशनक उपेक्षा करैत विजित मुद्रा सँ आगु बढ़ि गेल. इकदिल मौन मूक रहल. टुण्डलामे गाड़ी रुकल. हमरा सभ छोले-भटूरे स्टेशनसँ कीनि खयलौं. सभसँ बेसी गहमागहमी एहि स्टेशन पर यात्रीगणक रहल.

गाड़ी आगू बढ़ल त जाहि स्टेशनक नाम हमर सभक ध्यान आकृष्ट केलक ओ छल मितावली. इ बाजलैथ—देखू तँ कतेक सुन्दर नाम अछि—

हम बाजलौं—हँ मित्रताक आमंत्रण दैत कतेक स्नेह भरल नाम ! इएह सोन-भद्र यत्र-तत्र, चाहल अनचाहल स्टेशन पर नियम आ समयक उल्लंघन करैत रुकैत रहल मुदा इ इकदिलक व्यथा कें नय बुझि सकल, मितावलीक दोस्तीकें नय स्वीकारि सकल—

मानवो कहियों-कहियो अपन आनकें नय चीन्हि अनजानहि कौड़ीक मोल हीरा गँवाय दैत अछि—दिल्लीक ई यात्रो विचित्र लगैत छल. राजूक फाइनल परीक्षा थीक. तीन बरीस मेहनतक कठोर तापमे तपि दिल्ली वि० वि०मे ओ दुबर पातर लड़का अपन एकटा अस्तित्व बना नेने अछि—ठीक एहि बीच हम सभ जा रहल छी उहो मात्र दूइ दिन लेल—

सोनभद्रकें दिल्ली पहुँचबाक समय ११.५० मे छल मुदा, लगैत अछि जेना आय ४-५ बजेसँ पहिने नय पहुँचत.

बरहन स्टेशनक अगल-बगल गहूमक तैयारी मईक अंतिम दिन धरि भ' रहल छल. गहूमक टाल नूतन डिजाइन सँ गुंबदनुमा मंदिर जकाँ बनल छल. सोनभद्रसँ यात्रा बड़ थकान वाला लागि रहल छल नया नया एहि ट्रेनक उद्घाटन भेल छल. मुदा बेकार कोच, बेकारकें बर्थ, के एकर नाम सोनभद्र राखलक ? एकर नाम तँ काठभद्र हेबाक चाही. सोनाक गुणतँ एहिमे कत्तौसँ नहि अछि. सी०-७

[illegible] रूपगुणक विवेचना क' रहल छी जे [illegible] रहल अछि. किछु यात्री बजैत [illegible] अछि बाकी सभटा सोन सन चमकैत [illegible]

[illegible] यात्रा हमर सभक, ओहूमे दुर्भाग्य सामने आबि [illegible] भेटल.

[illegible] हीन स्थिति पूर्ववत् अछि. रास्ता भरि गाम सभ [illegible] ओहिना अर्द्धनग्न—निरक्षर—

[illegible] हम सभ अलीगढ़क बाद दिनकौर स्टेशन पहुँचैत छी. [illegible] प्याससँ छटपटाइत गरमीसँ हमर सभक हाल बेहाल. [illegible] पानि कीनलहुँ. एकर बादे गाड़ी खुलि गेल. ओहि छोट [illegible] पानि हम, ई, बंदना तीनू गोटे एक-एक घोंट पीबि गलाकें [illegible] मुदा पिआस ओहिना लागल छल—

[illegible] छल—नहि तँ डायनिंग कार छल. नय चाह, नय पानि— [illegible] —पिआस—हँ जिनगीमे हम जे चाहलौं ओ चाह सेहो [illegible] देखाय हमर पिआसो कें पिआसल क' देलक— तृप्ति कतए ? [illegible] प्यार अपूर्ण. मृत्यु सँ पहिने बाबूजी स्नेह-जलधार देखाय अतृप्तिक [illegible] भरि भटकाय देलैथ. —भाय, बहीन, देओर, ननदक प्यार राति-[illegible], प्रकाश-अँधकार, नोर-मुस्कान चान-सूरज सन उगैत रहल डूबैत रहल. [illegible] भान होइ'छ जे असगर असगरमे सभ एक दोसरासँ बढ़ि प्रेम आदर [illegible] मुदा जखन सभ एक स्थान पर एकत्रित होथि तँ हम अलग-थलग [illegible] चातकी सन स्नेह स्वातीक एक बून्न लेल तरसैत. ई हमर नियति रहल. [illegible] सँ तन-मन दूनू झुलसि रहल छल. पता नय कखन दिल्ली पहुँचब. [illegible] ओहि ठामक लड्डू होयत जे खायकें पछतायब नहि खाकें पछताएब—

दिनकौर मे गोयठाक बड़ पैघ घर बहुत कलात्मक ढंग सँ बनल छल. कतेक [illegible] छल ! सरिपहुँ, सभ व्यक्तिक भीतर कलाक रूप-स्वरूप अछि—जकरा [illegible] अभिव्यक्ति छैक ओ ईश्वरक बरदान कहल जाइछ. बिहार मे एहि प्रकारक [illegible] अभाव कखनो काल लगैत छैक. मुदा, नहि, अर्थहीनता अभावक [illegible] भ' जाइछ. दौड़ैत ट्रेनक संग, भगैत गाम घर पर दृष्टि पड़ैछ छल तँ पुरान

सभ्यताक अवशेष प्रतीत होइत छल. जीर्ण शीर्ण भग्न मकानक अंश, मौन होइत छल ओहि खंडहर सँ जाक पुछी—अहाँ अपन कथा बाजु।अहाँ केँ की की भोग' पड़ल इ तँ कहैत जाऊ, कोना-कोना अपन यात्रा तय केलहुँ मुदा! ट्रेनक गति मे सभटा पाछा छूटल जाइत छल.

मारीफत स्टेशनसँ किछ फर्लांग हटि कोनो समृद्ध गाम वा कि शहर सन बसल लगैत छल। फिरोजाबाद देखि हाथमे पड़ल चूड़ीक चमक पर दृष्टि गेल जे अहिवात बाँटबाक, सौभाग्य बाँटबाक सभसँ पुण्य कार्यमे लागल छल—चारूदिसि मिल, फैक्टरी आ ताहिसँ निकलैत धुँइया समस्त वातावरणक प्राकृतिक रंग केँ धूमिल आवरणमे नुका नेने छल. औद्यौगिक शहर आ गाम कतेक अप्राकृतिक !

हाथरस स्टेशन आँखिक आगुसँ भागि गेल. काका हाथरसीकेँ हम मोने मोन प्रणाम केलौं—हवा बेईमान नय भेल अछि. एखनहुँ किछ ईमानदारी हवाक झोंकमे बाँचल अछि. अस्तु, काका धरि हमर प्रणाम ओ अवश्य पहुँचाय देत.

चिपियाना बुजुर्ग पहुँचैत छी. गुलाबी साड़ीक लहँगामे सजल एकटा तन्वांगी टमटम पर ठाड़ छलीह. गाड़ी फेर रूकि गेल. कोनो ट्रेन जखन एक बेर लेट होइत अछि तँ ओ हरदम लेट होइत रहैछ. ग्रीन सिगनल लेल ओकरा रूक' पड़ैत छैक. सोनभद्र लेट चलल आ भिखारिन जकाँ ठामे-ठाम सिगनलक भीख मँगैत आगु बढ़ैत अछि.

चिपियाना बुजुर्गसँ ल' क' गाजियाबाद धरि जेना एक शहर पसरल हो, औद्योगिक शहर. तरह-तरहक कल-कारखानामे साँस लैत औंघाइत औनाइत—लोहालक्कड़क मशीन जकाँ जिनगी जीबैत ई शहर ! मिलक बँबासँ निकलइत साँसक सियाह उच्छ्वास'''

छोट पैघ नव पुरान अर्द्धनिर्मित मकानक पंक्ति. गोइठाक छोट—छोट सुन्दर मनमोहक मंदिर—बड़ दूर धरि छितरायल अछि. सघन आबादीक बस्ती सभ अपन पुरातनताक छटामे दर्शकगण केँ आमंत्रण दैत.

गाजियाबाद शहर सेहो दूर दूर धरि पसरल अछि. आ हमर सभक संग-संग चलि रहल अछि. शहर बएह, क्रम बएह बीचमे आबि जायत अछि साहिबाबाद.

सोनभद्र ओहि साहिबाबादक आदरमे फेर रूकि जायत अछि—आगु बढ़बाक सिग्नल पएबा लेल.

[illegible] अवसर चूकि जाइछ ओ चूकि गेल. घिसल [illegible] जाइछ. पता नय एहि साहिबाक अन्तरमे [illegible] अछि? मौन होयत अछि बेनकाब क' दी एही [illegible] पीड़ाक अक्षर-अक्षर —

[illegible] जलधारक ऊपरसँ हमर सभक गाड़ी हहराय [illegible] भ' जायत अछि जमुनिया पवनक आलिंगनसँ. आनन्द [illegible] रहल छल. ओहिठाम नव मकानक नूतन डिजाइन एक [illegible] सभ केँ बनैत देखि आनन्द बिहार नाम बड़ सार्थक [illegible]

[illegible] हम सभ पयलहुँ इन्द्रप्रस्थ स्टेडियमसँ. मौन तन [illegible] —तँ इएह थीक दिल्ली ! हिन्दुस्तानक दिल दिल्ली ! समस्त [illegible] दिल्लीसँ साँस ल' रहल अछि ! दिल्ली हिन्दुस्तानक [illegible] ! दिल्ली हिन्दुस्तानक गुलदस्ता थीक ! कतेको कवि शायरक उक्ति [illegible] कल्पना साकार करैत ई दिल्ली -देशक राजधानी—सुदूर [illegible] साक्षी.

[illegible], मिन्टो ब्रिजसँ नीचा ससरैत सड़कक छाती चीरैत, भगैत वाहन [illegible] वाहन—जेना जनसमूहक बदला गाड़ीक समूह उधिआय रहल अछि. [illegible] नाना प्रकारक विचार तरंग अलगे प्रवाहित भ' रहल छल. राजू [illegible] पर आयल होयत—शिवकुमार—रविशंकर'''की सोचि रहल छी? आब तँ [illegible]—हिनकर स्वर सुनतहि चौंकि जायत छी.

[illegible] बुझैत छी किएक जेनाजेना स्टेशन लग आबि रहल अछि—मौन एकदम [illegible], घनीभूत भेल जा रहल अछि. रेलक पटरी अचोके चाकरसँ चाकर भेल [illegible], जेना कोनो पहाड़ पर छितरायल एकपैरिया. यात्रीगण समान ठीक कर' [illegible]. करीब अढ़ाइ बजे दिनमे दिल्ली पहुँचलौं. राजू प्लेटफार्म पर ठाढ़ छल. [illegible] देखितहि हमर आँखि नोराय गेल.

'[illegible] मम्मी ? आँखि पोछि लिय' पींकीक स्वर सुनतहि हम चेतन भ' आँखि [illegible] पोछ' लगलौं. वात्सल्य, ममता, प्रेमक त्रिवेणी जेना राजू लेल हमर [illegible] निःसृत होमए लागल. राजूक आँखि नेनपनेसँ नोरायल रहैत छल जेना [illegible] अथाह सागर वेदनाक ओहिमे साकार होय. ओकर आँखिमे सभ दिन

हमरा अपन हृदयक प्रतिबिंब देखा पड़ैत छल—जेना राजूक आँखि नय--हमर अपन आँखि हो'···प्रेम जखन सघन भ' जायत अछि तँ वाणी अवरूद्ध भ जाइत छैक···

शिवकुमार हमर छोट भाय आ भगिन जमाय जे ईशर कम्पनीमे जेनरल मैनेजर छलाह आवश्यक मीटींगक कारण स्टेशन नहि आबि सकलैथ. राजू हमरा सभ' के' टैक्सीसँ अशोक विहार स्थित शिवकुमार ओत' ल' गेल.

हिमांशु दौड़ल आयल. शिप्राक प्रेममय व्यवहार, स्वीटीक मीठ-मीठ गप्प हिमांशुक अपनत्व-लागल जेना हम सभ अपन घर सहरसा पहुँचि गेल छी. राजू हिन्दू कॉलेज होस्टलमे रहैत छल. ओकर काल्हि परीक्षा छल खाय-पीबि ओ वापस होस्टल चलि गेल. स्वीटी हिमांशुक गप सुनैत-सुनैत थाकल ठेहिआयल हम सभ कखन सुति गेलौं बुझा नहि पड़ल.

साँझ खन नीन टूटल तँ सात बाजि गेल छल. गौतम आबि गेल. बाल्कोनीमे बैसि चाह पीबैत रहलौं. गौतमसँ गप्प करैत रहलौं. जी मे होइत छल एक बेर दौडि राजू कें देखि आबी--मुदा, सभ मना कय देलक जे एखन [illegible] समय छैक ओ पढ़ि रहल होयत···

दिल्लीक पानिमे ब्लीचिंग पाउडर हमरा बर्दाश्ते नहि होइत अछि—[illegible] बाजल—ब्लीचिंग पाउडर कीटाणु मारबा लेल देल जायत अछि पानिमे.

ई बजलाह—हँ दिल्लीमे लोक मरैत नहि अछि.

गौतम बड़नीक जबाब देलक--हँ दिल्लीक लोकमे जिनगी जिबाक [illegible] छैक.

सभ' केओ हँसय लागल. बात ठीके छल—एतेक फास्ट जीवन. [illegible] गति—केकरो पाछाँ मुड़ि देखबाक फुरसत नहि. [illegible] आगु नहि बढ़ैत अछि—जे आगु बढ़ैत अछि ओ [illegible] वला सभ' अपन जीवन कें एहि नियम पर आधारित क' [illegible]—

साँझखन शिवकुमार आयल. [illegible] आबि सकबाक ग्लानिमे डूबल. हिमांशु, गौतम, शिवकुमार, शिप्रा [illegible] मुक्त कण्ठसँ राजूक बड़ाई क' रहल छल. हम सभ' चुपचाप सुनैत छलौं. [illegible] सात करैत छलौं आ सुनैत छलौं—कतेक विशाल हृदयक लोक [illegible]

[illegible] एक दोसराक बड़ाई नहि करैत' अछि. बड़ाई ! [illegible] एक पाई नहि खर्च होइत अछि—कतेक कंजूस होइत अछि [illegible] बड़ाई नहि क' सकैत अछि. केओ मनुष्य सर्वगुण सम्पन्न [illegible] किछु नीक किछु बेजाय. मुदा केकरोमे अच्छाई खोजु [illegible] जायत अछि—केकरोमे बुराई खोजू तँ एक लाख अवगुण [illegible] नहि मानव जीवनक उज्जवल पक्ष कें देखबाक [illegible] एहिठाम शिवकुमारक परिवार हमरा सभकें जीवनक रजत [illegible]

[illegible] राति. कतेक राति धरि हम पींकी आ ई—एहि परिवारक [illegible] नहि—कतेक आत्मीयता, कतेक अपनत्व···क्षण भरि लेल [illegible] अचक्के नीन्न टुटि गेल. फेर यादक मेला—स्मृति [illegible] राति भरि बेचैन व्यथित करोट लैत रहलौं—सम्बन्धकें, [illegible] जोखैत रहलौं—जाति-पाति—रक्त संबंध--आन [illegible] हेतीयैक, अपन संबंधी यदि अप्पन हेतीयैक तँ आइ भाय-भैयारिक [illegible] घिनमा-घिनाओज कहियो नहि हेतीयैक···

[illegible] सभकें उठबासँ पहिनहि हम सभ नहा-धो क' तैयार भ' [illegible] शिवकुमारक गाड़ीसँ हम बहुनि ओत' यानी डॉ० नरेन्द्र वर्मा [illegible] अनुज) ओत' पहुँचलौं. पाहुन सभ गाम गेल रहथि. [illegible]—सून-सून घर दुआर पर हुनक उपस्थितिक अनुभूति छल-- [illegible] छल—ऐ मुहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया···

[illegible] तैयार भ' हमर सभक संग स्टेशन चलल. उड़ीसाक रिजर्वेशन [illegible] ए० सी० में. स्टेशनसँ हम सभ दिल्लीक गहमागहमी देखैत [illegible] मंदिर देख' गेलौं. मंदिर बड़ भव्य छल—सिद्धपीठ कहल जाइत [illegible] कहियो किछ भगवानसँ नहि माँगने छलौं. आय पहिल [illegible] सभ लेल आँचरि पसारि देने छलौं. मौन होइत छल जे [illegible] हमर पुकार पहुँचत कि नहि ? सभ केओ माँ-माँक' गोहारि [illegible] हमर स्वर कत' बिला जायत ? के जानत ? मंदिरक भीतर [illegible] बैसल छल. हम चौंकि गेलौं—एना किएक ? सभ' बाजल [illegible] मौने-मौन हम नमित भ' गेलौं.

[illegible] हम सभ बिड़ला मंदिर अयलौं. गेटे पर लिखल छल—"जो [illegible] प्योर हों एवं प्योरली ड्रेसड् हो वही अंदर जाएँ"—आ

हम सभ श्रद्धा आ आदरसँ विनीत भ' गेल छलौं. मुदा व्यवस्थाक ओहि अव्यवस्थासँ सोच' लगलौं—कतेक गोटे एतेक परिशुद्ध छथि···? लक्ष्मी-नारायणक भव्य प्रतिमाक सम्मुख हम संपूर्ण आत्माक संग नतमस्तक भ' गेलौं. गीता मंदिरमे कृष्णक मूर्त्ति बड़ भव्य छल. फेर कृष्णक छोट छीन प्रतिमा—चारु कात स्वच्छ निर्मल दर्पण लागल—जाग दिस जित देखू तित स्याममयी आ ओहि मध्य भटकैत हमर आत्मा ! आत्मा—परमात्मा कतेक लग—कतेक दूर ?

बारह बजे दिनमे राजूसँ भेंट केनाय छल. हिन्दू कालेज हॉस्टल—लाल-लाल ईंटसँ बनल अंग्रेजी हुकूमत कालक कारीगरीसँ अपनामे भव्यता नेने विशाल इमारते कहल जा सकैछ इ कहबामे कोनो संकोच नहि जे अंग्रेज कालक सभ चीज ठोस सशक्त आ चारित्रिक उत्कर्षसँ भरल रहैत छल. यदि चारित्रिक उत्कर्ष नय रहितैक तँ आइ गाँधीजीक अहिंसा आंदोलनक समक्ष झुकि ओ हिन्दुस्तान नहि छोड़तैक. हँ ओकर सभसँ पैघ दुर्गुण छलैक—"डिवाइड एंड रूल" जे हम सभ सीखि लेलौं आ आइ धरि ओकरे राजनीति मानि नेने छी. भनहिओ राजनीतिक, सामाजिक वा पारिवारिक क्षेत्र होय—

बेटाक होस्टल जा रहल छी. विचित्र रोमांच भए रहल छल. रास्तामे अमरेन्द्र भेटि गेल—राजूक रूममे ताला लागल छल. एम्हर ओम्हर ओसारा पर हम सभ टहलए लगलौं. एकटा छात्र आबि पुछलक—राजीव कें खोजैत छी की ? परीक्षा द' क' नहि घुरल अछि आब अबैत होयत—आ, ओ राजूक उड़िया दोस्त छल जे हमरा सभ कें अपन कोठरी मे ल' जा क' बैसेलक. हम ओकरासँ पुछलौं—बरगढ़सँ पुरी जयबा मे कतेक देर लागत ? बड़ निश्छलतासँ ओ बाजल—बरगढ़सँ पुरी डायरेक्ट बस आइत अछि. बड़ नीक बस—मात्र पन्द्रह घंटामे पहुँचा दैत अछि. मात्र पन्द्रह घंटा सुनि हमरा सभ कें हँसी लागि गेल. ओ हमरा सभकें सुराहीसँ पानि पिऔलक मुदा, पन्द्रह घंटा कहि सरिपहुँ पानि पिआ देलक.

राजू संजय संग आबि गेल. ओकर छोट छीन कोठरी खूब नीकसँ सजल छल. ओहिमे राजू अपन पंजाबी दोस्त चावला संग रहैत छल.

भूखल पिआसल राजूक संग हम सभ डेरा अयलौं. दिल्लीक जरैत रौदक कोनो असर हमरा पर नहि होइत छल स्यात् हमर अंतर अहिसँ बेसी तपि रहल छल. हँ शिप्रा सभक प्यार आदरक छाहरिमे मोन शांत भेल. बेसुध भ' हम पड़ि रहलौं···

दोसर दिन [illegible] परीक्षा [illegible] छल. हम सभ शिवकुमारक संग कारसँ सात बजे भोरे निकलि गेलौं. [illegible] नेहरूजीक समाधि छल शांति वन. ऊँच-ऊँच [illegible] पर [illegible] गोलाकारमे छतरल—हरियर दुबिक [illegible] पर पसरल—कोनो कविक पंक्ति मोन पड़ि गेल—हरित दूबि पर बैसि प्रिया संग निशि बासर जौं होइत इजोरिया [illegible] अवक्के [illegible] पर [illegible] मरण पर्व पर जीवन-गीत. इएह विरोधाभास तँ जीवन [illegible] !

ओहि [illegible] स्पर्शक अनुभूति छल. ओहि ठाम "मोतीक [illegible]" [illegible] छलाह. जवाहर जे राजनेतासँ बढ़ि संवेदनशील, भावुक, [illegible] साहित्यकार छलाह. हुनक राजनीतिक आधारशिला अपन भावुकता, [illegible], संवेदनशीलता छल नहि कि धोखाधड़ी—दोहरा व्यक्तित्व आ स्वार्थ ! ! [illegible], सांस्कृतिक गरिमासँ ओत-प्रोत छलाह. हुनक भाषण मात्र आडम्बर नहि छल वरन् श्रोताक अन्तरक गहीराइमे उतरि हृदय कें स्पर्श करैत छल. [illegible] सम्मोहित भइ जाइत छल शब्दक सेहो एकटा अपन व्यक्तित्व [illegible] ई हुनक कथनसँ स्पष्ट परिलक्षित होइत छलैक. हँसैत गुलाबक फूल हुनक जीवनक प्रति आशावादी दृष्टिकोणक प्रतीक छल. आ आइ वएह जवाहर [illegible] एकटा परिच्छेद बनल शांति वनमे निश्चिन्त, निर्द्वन्द्व पड़ल छलाह. शांति वन नाम [illegible] सार्थक छल ! हमरा होइत छल यदि एक मास हम [illegible] एहि कोनमे बैसि साहित्य सृजन करी तँ एकटा अनुपम पुस्तकक सृजन निश्चित रूपसँ क' लेब. ओहि शांतिवनमे प्रेरणा छल. संस्कृति छल. भावनाक औदार्य···चिन्तनक प्रवाह···

बगलमे संजयक समाधि-स्तम्भ छल. शांतिक विपरीत अशांत सागर सन [illegible] भरल. एकटा दुर्द्धर्ष अग्निशलाका प्रज्वलित भए भक्क द' मुझा गेल···आ फेर राजघाटक प्राकृतिक वैभव संपदा···या लकुटी [illegible] कामरिया पर अंग्रेज शासनसँ अहिंसाक बल पर मुक्ति दिआब' वाला [illegible]—महात्मा गांधी—भारतक गरीबी देखि बैरिस्टर गांधी स्वयं एकटा [illegible] जिनगी जीब' लगलाह—देश कें आजाद करौलन्हि. बिना कोनो कुरसीक [illegible] मुदा, सोनमे एकटा कचोट करोट लैत अछि—गांधीजी अपना जीवन कालमे [illegible]—गरीब दुखु वर्गक भव्य देवार कें ढाहि सकैत छलाह. तखन आइ अहँकार [illegible] शिखर पर कुरसीक लोभें पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोकतन्त्रक आड़मे राजतंत्रक खेल

नहि करितैक. ओहि समयमे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री आ सभ पदाधिकारीक दरमाहा बराबर-बराबर बाँटि सकैत छलाह. राष्ट्रपति भवनक विशाल विस्तृत परिधिमे असगर राष्ट्रपतिक रहबाक बदला पूरा सरकार यदि ओहिमे निवास करितैक—तँ कतेक घर, कतेक बंगला; कतेक जगह जनता लेल सर्व सुलभ भ' सकैत छल. तखन प्रत्येक कुटियामे आलोक लोक सजल रहितैक. आइ कुरसी खानदानी संपत्ति नय रहितैक. गरीबसँ गरीब जनताक हृदयमे स्वतंत्रताक गरिमाक बोध रहितैक'''.

विचारक अराल जालमे ओझरायल पींकीकेँ सेन्टर पर टेस्टक लेल उतारि दैत छी—आ फेर लाल किलाक दर्शन परीक्षाक उपरांत'''. जीवंत इतिहासक साक्षी—लालकिलाक ईंट-ईंटमे रानी महारानीक वैभव विलासक झलक भेटैत छल. शाही हम्मामक कमल दल पर रानी बैसैत हेतीह, फव्वारा जकाँ यमुनाक जलधार ओकर अंग-प्रत्यंगकेँ सुवासित—सिक्त करैत होयत. दीवाने खासमे एकटा शिलालेख छल फारसीमे—

"अगर फिरदौस बरुए जमीन अस्त
हमीन अस्तो हमीन अस्तो हमीन अस्त'

अर्थात् यदि पृथ्वी पर कतौ स्वर्ग अछि तँ एहिठाम—एहिठाम. अन्तः-पुरक जालीदार खिड़कीसँ तन्वंगी यमुनाक नील जलधार लाल किलाक डाँड़मे मेखलासन प्रतीत होइत छल. दिल्लीक लालकिला—राजा-महराजाक वैभव-राजस्थल. ओहि पर गणतंत्र दिवसक तिरंगा आब फहराइत अछि. मुदा, ठीक ओकर बगलमे मीलो धरि पसरल झुग्गी—झोपड़ीक दयनीय स्थिति हृदयकेँ हिलाकेँ राखि दैत अछि. गन्हैत-गन्हायत नालामे, फाटल-चिटल वस्त्रमे स्वतन्त्र देशक भावी कर्णधार नेता-सुटका शून्य आकाश दिशि सून आँखि आ खाली पेटसँ तकैत रहैछ.

'बड़ भाग मानुस तन पावा'—की इएह कीड़ा-मकोड़ा सन जिनगी जीबा लेल ओकर ऊर्वर हृदय बन्ध्या बनि गेल. कोनो आकांक्षाक अंकुर कोना पनपत ? कूड़ा-कर्कट बेचि पेट पोस' बला मानव स्वयं कूड़ा-कर्कट बनि गेल. केकर हिम्मत छैक एकर भाग्य बदलत ? कोन आरक्षण एकर सभक जीवनमे नव-विहान आनत ? नहि, नहि, गरीब सभ दिन गरीबे रहत. अमीर आर अमीर, आर अमीर. एक दिसि दिल्लीक संसद भवन, ३५० कोठरीक राष्ट्रपति भवन, प्रधानमन्त्रीक निवास-

[illegible], [illegible], दोसर दिसि दीन-हीनक हाहाकार. दिल्लीक जीवन, [illegible] समानांतर पटरी पर छैक. के ई वर्ग-विभेद बनौलक ? [illegible] ? मुदा, रहैत अछि सभ दिल्लीक आनन्द-तरंग पर [illegible], ओ दिल्ली वाला छथि. अमीर होथि आ कि गरीब.

[illegible] देखि माथ अपने आप झुकि जाइत अछि. एहिठाम निर्गुण, [illegible] वास अछि जे खुदाक नामसँ प्रसिद्ध छथि. 'शबेबरातक' मध्यरात्रि [illegible] धुमहुँ अगरबत्ती बारि, खुदाक बन्दगी मे बैसल रहैत छलौं. [illegible] शब्द अछि—मुस्सलम होय ईमान जकर—मुसलमान ! [illegible] एकटा अदृश्य शक्तिसँ संचालित अछि. समस्त ब्रह्मांड [illegible], एकटा फोर्स व्याप्त अछि, जकरा हम देखि नहि पबैत छी. मुदा, [illegible] शक्तिसँ चान उगैत अछि समय पर सुरुज उगैत अछि—प्रकृतिक [illegible] एकटा नियम पर चलैत अछि. ओहि शक्तिकेँ केओ भगवान कहैत [illegible], [illegible] खुदा, केओ ईसा तँ केओ पैगम्बर. ठीक ओहिना जेना कोनो [illegible] माय दुलारसँ राजू कहैत अछि, पिता राजा, दादा बंटी, नाना [illegible]. [illegible] तँ एके जातिकेँ जन्म देलन्हि मानव जाति आ एके गुणक खेती देलन्हि [illegible] केर. मुदा, सभ्यताक विकासक संग-संग मानवक सोचक [illegible] होइत गेल. हिन्दु-मुसलमान, सिख, ईसाई आदि कतेको रूप मे [illegible], मानवक धरती बँटल. मुदा चिरंतन काल सँ मानव मात्र केर हृदय [illegible], ममता, मोह, वात्सल्य, काम, क्रोध, मद, लोभ आदि सभ भाव वर्तमान [illegible]. [illegible] नहि होइत अछि जे एकटा हिन्दूक खून लाल होइछ, एकटा [illegible] कि जहिना एकटा मुसलमान माए अपन बेटाकेँ प्यार करैछ [illegible]. हिन्दी साहित्य गगन मे चमकैत कबीर, जायसी, रहीम, रस-[illegible] अपन लेखनी सँ हृदयक इएह चिरंतन भावधारा प्रवाहित [illegible] अछि. मानव-मूल्यक ओ जे सीमा निर्धारित केलन्हि [illegible] अछि जतबा चान सुरूज. एहि देशकेँ स्वतंत्र करएबामे [illegible] पार करए पड़ल ओहि मे हिन्दू, मुस्लिम सभक सोणित मिलल [illegible]. [illegible] देशकेँ स्वतंत्र केलन्हि एहि लेल कि भारत मे रह' वाला सभ [illegible] शांत आ अखंड जीवन बीताय सकथि. मुदा, आइ [illegible], [illegible] हम बिसरि जाय तँ हमर संस्कृति सीता जकाँ पताल मे [illegible]. [illegible] संस्कृति वास्तव मे सीता अछि जे अवमानना नहि सहि

सकैछ'. राम आ रहीमक देल संस्कार आइ हिन्दुस्तानक जनताक जीवन-मूल्य बनल अछि.

'टाइम्स ऑफ इंडिया'क कार्यालय जाइत छी, राजेन्द्र अवस्थी जी, शीला झुनझुनवाला जी एवं गौरीशंकर राजहंस जी सँ एकै संग भेंट भ' गेल ·· हमर डायरी पर लिखल हुनक पंक्ति सभ जेना दिल्ली यात्रा कें सफल बनाय गेल. शीलाजी बजलीह—शेफालिका जी निष्ठा को जीवन का धर्म रखें. राजेन्द्र अवस्थी जी पुछ' लगलाह—आपको काल चिंतन 'कादम्बिनी' का कैसा लगता है ? —सरिपहुँ बड़ नीक लगैत, छल—आ हम ओहि 'नौकपन' कें हुनका समक्ष व्याख्यायित कयलौं. ओ बड़ खुश भेलैथ. हमर डायरी पर शुभकामनाक संगे लिखलन्हि—आप साहित्य की दुनिया में अपना अलग अस्तित्व बनाएँ—सोच' लागल छलौं वर्माजी सेहो इएह बात कहैत छथि. जखन वर्तमान युग मे कुंठा संत्रास, गाम घर सभक वास्तविकताकें उजागर करैत रचना सभ देखैत छी तँ अमर कृति सभ बड़ निरर्थक लगैत अछि. मुदा, ई कहैत छथि—जे सभ लिखैत अछि—लिखैत अछि—जे अहाँ लिखैत छी ओ केओ नय लिखैत अछि. भावनाक एतेक विपुल भंडार कतए छैक ? तँ जेना हमरा संतोष भेटि जायत अछि. आनन्द सँ मोन उमग' लगैत अछि.

आनन्द मोनक वस्तु थीक जे मानव भोगैत अछि आत्माक रस मे. दुख-सुख, प्रकाश-अंधकार, हास-रुदन ईश्वरक देल जीवनक वरदान थीक. मुदा, मानव ओकरा ग्रहण करैत अछि अपन मोन सँ. आधा गिलास पानि सँ भरल देखि केओ कहैत अछि, आधा भरल अछि, केओ आधा खाली छैक ? ई देखबाक अपन-अपन दृष्टिकोण होइत छैक. ओहिना जीवन जीवाक अपन ढंग होयत छैक. तँ की गरीब, की अमीर !—दिल्ली सभ लेल आनन्द भरल दिल रखने अछि. स्वतंत्रताक चालीस वर्ष बीति गेल. हम स्वतंत्र छी—मुदा कोन अर्थमे ? स्वतंत्रताक की परिभाषा, की परिणति रहल ? छब्बीस जनवरी—पन्द्रह अगस्तकदिन दिल्ली मे खूब पतंगबाजी होइत अछि ! हजार हजार टाका लोक स्वतंत्रताक उल्लास मे गुड्डी उड़यबाक पाछा स्वाहा कय दैक छैक. गरीबो व्यक्ति एहि उल्लास-पर्व मे पाछा नहि रहैत छथि. देशक आन भागमे इ उल्लास कत' स्वतंत्रताक ? साँच अर्थ मे आजादीक खुशी दिल्ली धरि सीमित रहि गेल अछि. सोचि रहल छी किएक दिल्लीएटाक आनन्द गगनमे हजार-हजार गुड्डी—लाख-लाख स्वर—वहकबाइ टा······??



पाथरक बाट (१९८३)

मकरा त्रिवेक्षण होइत अछि, शिवमंदिरक चारु दिसि, एकटा त्रिपेक्षण शिव लिंगक चारु दिसि. हमर ई भारतक आधा हिस्साक त्रिपेक्षण, शिव लिंगक त्रिपेक्षण छल.

सहरसासँ पटना, पटनासँ दिल्ली, दिल्लीसँ उड़ीसा, उड़ीसासँ टाटा, टाटासँ पटना आ पुनः ओहि दिसिसँ मंदिरमे प्रवेश पवलहुँ ओहि रास्तासँ "एक्जिट"—माने पटनासँ सहरसा, की यात्रा छल भूतपूर्व वाकि अभूतपूर्व—! ४ जून ८३ कें दिल्लीसँ धरगढ़ लेल कलिंग एकसप्रेससँ विदा भेलहुँ हम दूइ गोटे—

आय सोचैत छी कोना ई त्रिपेक्षण संभव भेल. तखन युवावस्थाक उन्माद—युवा खूनक गरमी—नव-नव वस्तु देखबाक आकांक्षा—नवस्थानक सांस्कृतिक, सामाजिक परिवेश जानबाक अभिलाषा आ कवि सम्मेलनक लोभ सेहो कम नहि. कलिंग एकसप्रेससँ उड़ीसाक यात्रा पाथरक बाट छल—पलवल, मथुरा, आगराकैंट ग्वालियर झाँसी, खजुराहो आदि ऐतिहासिक स्थलक झाँकी सभ आँखिमे चमकि जायत छल. खास कए ताजमहलक एक झलक सूर्यक प्रखर किरणमे दमकैत जेना हमरा सभकें विस्मृतिक स्मृतिमे ल' आनलक······सहरसामे अपन मकान बनबैत छलौं—चून-पसीनासँ बनलओ मकानक आगुमे छत पर जखन वर्माजी अपनेसँ घरक नामकरण क' लिखए लगलाह—"शेफालिका" तँ समस्त महल्लाक लोक ठाढ़ भए गेल छल. सभक मुँहसँ एकै बात—ताजमहल मुमताज कें मृत्युक बाद बनल मुदा वर्माजी अहाँक जीवन कालेमे "शेफालिका" बना देलन्हि—हम लजाकें भीतर भागि गेल रही.

एहि चित्र-विचित्रमे डूबल गाड़ी पर चलैत-चलैत उबि गेल छलौं. मोन होयत छल राउरकेला अपन छोट बहीन मृणालिका लग उतरि चलि जाए—फेर भय होयत छल एना अचक्के पहुँचब ओ लोकनि नय हेताह तँ फेर हम सभ पाथरक बाट पर माथ धुनब ! हँ-नहिक अनिश्चिततामे हम सभ झरसुगुडा पहुँचि गेलौं. ई एकदमे राउरकेलाक एक्सटेंसन टिकट करवाय लेलन्हि.

माथ परसँ बोझ हटल. लगातार ट्रेनमे हम उबि चुकल छलौं। भीतरे-भीतर पागल सन मनोदशा भ' गेल छल. लगैत छल कतौ ट्रेनसँ कूदि जाथ—एहि ट्रेनक

कारासँ मुक्ति भेटए. ट्रेन २-३ घंटा बाद कोनो स्टेशन पर रुकैत छल आ ५ मिनटमे खुलि जायत छल—

झरसुगुडाकें बाद मुँह धोवा लेल टायलेट गेलौं. पटनासँ दिल्ली आ दिल्लीसँ झरसुगुडा धरि कतौ हमरा दतमनि नहि भेटल छल. हम आय धरि ब्रश आ पेस्टसँ मुँह नहि धोने रही. मुदा, दिल्लीमे राजू ब्रश हमरा लेल राखि देने छल. हारि के ब्रश निकालि हिनकासँ पुछैत छी—ब्रशसँ कोना मुँह धोअल जाइत अछि. गाड़ीक हिचकोलमे हमार जकाँ कोहुना ब्रश करैत छी कि खट्टसँ शोणित निकलय लागल. विचित्र अनुभव छल साँच कहु तँ एहि अनुभव पर हम कतेको पृष्ठ लिखि सकैत छी.

राउरकेला प्लेटफार्म पर पएर रखितहि लगैत अछि जेना आजाद भए गेलौं. होइत छल पंख लागि जाय आ उड़ि पाहुन लग पहुँचि जाए. अचक्के आँखि आकास दिसि उठैत अछि—चौंकि जायत छी—आकासक एक टुकड़ी आगिक लाल-लाल लपटिसँ लहकि रहल छल. —आय धरि आकासके एहेन रंगमे नय देखने रही मुदा, तुरत ध्यान आयल—ई फैक्टरीक क्षेत्र लगैत अछि जाहिठाम पाथरक शहरसँ लाल-लाल ज्वालामुखीक लावा फुटैत अछि. टेम्पो पर बैसल सेक्टर २ दिसि बढ़ि रहल छी. जनैत छी मृणालिका यानी अंजू नय अछ राउरकेलामे—एकर रंजो नहि अछि मुदा, पाहुन विजय बाबू कोहुना भेटि जायथ. ई छटपटी जरूर छल. रास्ता भरि पाथरक बाटकें देखि लगैत छल एहि पाथरक देशमे हमर नाम्हि वहीन अंजू कोना रहैत हेतीह. टेम्पो राउरकेला शहरकें छोड़ैत, पहाड़क बीचसँ गुजरि रहल छल. पहाड़क कोरमे बसल टाउनशिप देखि मोन खुश भ' गेल. अंजू कतेक नीक जगह रहैत अछि एकदम प्रकृतिक सभ्य. विजय बाबूक क्वार्टर लग पहुँचि देखैत छी कि गेट पर ताला लागल अछि. घरोमे बड़का ताला हमर सभक उपहास क' रहल छल—ऐ परिश्रान्त यात्री ! हमर सून घरमे अहाँ सभकें शरण देबा लेल केओ नय अछि—मोन एकबारगी उदास भए गेल. थकानो हमरा सभसँ लिपटल थाकि गेल छल. तखन एकटा श्यामांगी उछलैत फानैत पहुँचल—दीदी सभ नहीं है—हमरा बुझल अछि—अहाँक साहब कत' छथि—

ओत' फैक्टरी गेल छथि—तावत बगलसँ एकटा महिला पुछलीह—आप लोग कर्णजी को खोज रही है ? मैं दास बाबू को कह देती हूँ वे तुरत खबर कर देंगें—

[illegible] बाद धरि हम सभ कौशलजीक आतिथ्यमे रहलौं · · [illegible] एकटा अंग बनि गेलौं. अंजू नय छलीह मुदा [illegible] कण-कणमे छल. विजय बाबूकें लगैत छल जेना [illegible] खुश छलाह—मुदा ओ गरमी ! बगलमे पहाड़ीक [illegible] —फेर हमर मनोदशा—की पाथरोक श्यामशिला [illegible] अछि ? प्रकृति सरिपहुँ बड़ रहस्यमयी अछि कार्य-[illegible] बड़ दुष्कर. आ इएह प्रकृतिक प्रतिकृति मानवक स्वभाव [illegible] अगम्य. सांझखन गायत्री मंदिर जायत छी पीत [illegible] श्वेत प्रतिमा आय धरि हमर मोन मानसमे ओहिना [illegible] अछि.

[illegible] बरगढ़ रोड भोरे छह बजे उतरैत छी —छोट-मोट स्टेशन—[illegible] चलि आयल छी—हिनकर पारो गरम भए गेलैक. टाउन [illegible] ३-४ किलोमीटर पर छल जाहिठाम सम्मेलन स्थल छल.

[illegible] पाथरसँ भरल बड़ पैघ शहर छल. होटल ओरियण्टलक दुई [illegible] लेल पहिलेसँ रिजर्व छल. एकटा दूबर पातर श्यामल लड़का [illegible] अहाँ सभकें कष्ट भ' गेल. अहाँक पत्र छल जे ३ ता० कें [illegible] हम सभ काल्हि स्टेशन पर बड़ काल धरि खोजैत रहलौं. [illegible] छल जे झरसुगुडामे अपन बाट बदलि राउरकेला चलि [illegible] होटल ओरियण्टल एकटा विशाल एवं भव्य होटल छल. हम सभ नहा [illegible] आगु पाछु वेटर सभ, स्वागत समितिक सदस्य सभ पानिक [illegible] रहल छल. अश्विनी मिश्रा ओहिठामक बी० डी० ओ० आ [illegible] आत्रि कष्टक लेल माफी मंगलन्हि.

[illegible] उद्घाटन समारोह छल. हम सभ आय धरि एतेक गरमी [illegible] होटलक बिस्तर धरि तपि रहल छल. ई थाकल छलाह. [illegible] नहि जाए आराम कर' लगलाह. कार लागल छल. प्रो० [illegible] कैनेल रेस्ट हाउस गेलैथ. ओहिठाम, कलकत्तामे आयोजित [illegible] निहार, पूर्व परिचित कवि राजेन्द्र पाँधा, प्रो० हरि [illegible] अश्विनी कुमार मिश्रा. आर के मधुवीर आदि कतेको [illegible] परिचित मुस्कानक आदान-प्रदान भेल.

जरैत दुपहरिया, सूर्यक तप्त यौवन, प्रखर किरणक मध्य उद्‌घाटन भए रहल छल. मोन गरमी सँ पिघलल मोम जकाँ बरकि हृदयकेँ कुंठित कए रहल छल कि सामे दृष्टि पड़ल—मोन आँगन जगमगा उठल. कवि सम्मेलनक बड़का बेनर टाँगल. मोन अचानक हर्षित भए गेल. छह भाषाक कवि सभ भाग लय रहल छलाह तकर नाम कार्ड बोर्ड पर टंगल बड़का-बड़का अक्षर मे जगमगाय रहल छल. पहिलुक नाम छल मैथिली तकर बाद आसामी, मणिपुरी, बंगाली, हिन्दी आ उड़िया उड़ीसा मे अपन मैथिली बड़ सुन्दर लगैत छलीह. जेना प्रेमीकेँ अपन प्रेमिकासँ अनायास साक्षात्कार भए जाय वएह रोमांचक स्थिति हमर छल. ज्ञात भेल जे बिहारसँ हम असगरे छी यानी मैथिली हमही टा छी. आब अपन मैथिलीक आन बान शान हमरे हाथ मे छल—हम मैथिलीकेँ अपन अंक मे सटाय फुसफुसाय लगलौं—घबड़ाउ नहि—उड़ीसाक एहि कार्यक्रम मे अहाँक स्थान सर्वोच्च रहत. हम अहाँकेँ स्वर्णमुकुट पहिराय एहिठामसँ विदा होयब.

आ सरिपहुँ जखन साँझ मे दोसर सीटींग भेल तँ हम अपन सलाह देलौं जे सभ वक्ता अपन-अपन भाषा मे बजताह जाहिसँ हम सभ एक दोसराक भाषा जानि सकी, आ नहि बुझबाक आनन्द ली—हमर सलाह सहर्ष स्वीकारल गेल. बरगढ़क सियाही भरल साँझ मुदा जरैत दुपहरियासँ कम नहि. हवा नहि बहबाक प्रण कए मानिनी नायिका जकाँ कसौ रूसल छलीह—लोक कोना जीबैत अछि एहि पाथरक नगरी मे !

साँझुक संगीतारक अध्यक्ष उड़ीसाक भूतपूर्व मुख्यमंत्री छलाह. संचालन संबलपुर रेडियो स्टेशनक प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव अभयशंकर पाँधा क' रहल छलाह. बैनर मे टँगल नामक अनुसार सभसँ पहिने मैथिलीक अभिभाषण लेल हमर नामक उद्‌घोषणा भेल—आ हम मैथिलीकेँ ल' क' आत्म विश्वासक संगे मंच पर अयलहुँ—सभसँ पहिने अश्विनीजीकेँ धन्यवाद देलौं—मैथिली भाषा सुनतहि समस्त पंडाल मे एकटा चमक, एकटा लहरि खुशीक व्याप्त भेल. "हॉटेस्ट स्टेट, हॉटेस्ट दिन" आ ताहि मे बारह बजे दिनक प्रखर रौद, जरैत सूरज माथ पर. शामियानाक नीचा बैसि हम सभ गप कथीक कयने छलौं तँ साहित्यक-काव्यक—कतेक विरोधाभास अछि. कविता इजोरियाक भाषा थीक. कोमलता मृदुताक—मुदा हम सभ तीक्ष्ण तापक मध्य कविताक गप करैत छलौं इएह थीक आइ काल्हिक कविता. कुंठा आक्रोश हाहाकारक मध्य कवि जीवन जीबैत अछि तँ इजोरिया कतए—रौदे-रौद-तापे ताप—

पुनः भाषणकेँ आगु बढ़बैत मैथिली साहित्यक कवि रचनाकारक कविताक गुण गुनैत बजलौं—जहिना कोनो अनुष्ठान वा कि यज्ञ बिना महिलाक संपन्न नय होइत अछि तहिना कोनो साहित्य ताधरि संपूर्ण नय होइत अछि जा धरि ओहि मे महिला साहित्यकारक योगदान नहि होय.—आ तकर बाद महिला रचनाकारक नाम हम विस्तारसँ गुनब' लगलौं—

बीस-पचीस मिनटक वक्तव्यक बाद थपड़ीक गुंजित स्वर मे हम मंचसँ नीचा अयलौं. राजेन्द्र पाँधा—आइ० ए० एस० बाजि उठलाह—बड़ नीक शेफालिका जी—आ मोन आर हर्षित भए गेल जखन देखलौं कलकत्ता मे आयोजित 'पीपुल्स बर्कशापक' कतेको कवि सभसँ हम चारू कातसँ घिरल छी—मैथिली विजयिनी छलीह. आ राजेन्द छलीह—थपड़ी-वाह-वाही—नव आशा नव स्पन्दनक सफल संरचना भेल. 'ब्यूटीफुल—एक्सलेंट' आदि विदेशी प्यार सेहो भेल. सभ साहित्यकार गदगद छलाह. मुदा, हमर हृदय मे मात्र मैथिली छलीह—मैथिलीक गरिमा छल. अभय पाँधा हमर भाषणकेँ पहिने उड़िया फेर अंग्रेजी आ हिन्दी मे अनुवाद केलनि.

पुनः मणिपुरी, आसामी आ उड़ियाक वक्ता सभ बजलाह. उड़ियाक कवि भाषणक मध्य अंग्रेजी मे बजलाह—शेफालिका जी, अहाँ बजलौं जे महिला साहित्यकारक कमी मैथिलीमे नय अछि-स्त्री-पुरुषक योगदानसँ यज्ञ पूरा होइत अछि—हम सभ सभटा मानैत छी. हमरो उड़िया साहित्य मे महिला साहित्यकारक कमी नय अछ मुदा महिलाकेँ कत्ती जेबा मे दिक्कत भए जाइत अछि. घरक झंझट रहैत अछ—संग आबबला केओ नए जेना कि अहाँकेँ—हम डालसँ चिकरि उठलौं—हमरा संग वर्माजी आयल छथि—हँ तँ अहाँक संग वर्माजी आयल छथि—बहुत बोटेक एहनो संयोग नहि भेटैत अछ

हमर सोन पाँखि उड़ि रहल छल, चहकि रहल छल. सभक चेहरा पर छलीह मैथिली. ओ गर्वसँ मुस्काय रहल छलीह. मैथिली-मैथिली-सभ भाषा मैथिलीक अनुपम तेजक सम्मुख निष्प्रभ भए गेल छल. अधर पर एकटा प्रश्न बेर-बेर आबि नचैत छल मुदा बहराइत नए छल—अहाँ लोकनि एतेक भाषण देलौं, कविक उल्लेख कयलौं मुदा कोनो कवयित्रीक नहि. ई वैमात्रिक व्यवहार महिला संग किएक ? महिलाक चर्चसँ की अहाँक अहं पर चोट पहुँचैत अछि आ की अहाँ

छोट भए जाइत छी ? जाहि ठाम सम्मान देबाक भाव ताहि ठाम इनफिरियोरिटी कम्प्लेक्स किएक ?

गरमी बड़ जोर छल. हवा बंद छल. कोना जीबैत अछि एहिठामक लोक—कोना साँस लैत अछि एहिठामक लोक.

उड़िया कवि लोकनिक दुई ग्रुप छल. आइ० ए० एस० आफिसर सभक एवं दोसर प्रोफेसर सभक. कतेक सौहार्द्र, कतेक प्रेम. रातुक दस बाजि रहल छल. मंच पर मणिपुरी कवि प्रो० इबोमेहा सिंह, इम्फाल विश्वविद्यालयक भाषण चलि रहल छल अंग्रेजी मे. दीपक मिश्रा संग हम आ वर्मा जी पंडाल सँ उठि पार्क मे टहलि हवा खोजए लगलौं—कतए नुकायल अछि. जनैत छी दीपक जी. हमरा सभ दिसि जखन हवा बंद भए जायछ तखन एकटा लोक कविता पढ़ैत छी—बगबहो बसात—बगबहो बसात—आ समाप्त भेला पर हवा बहए लगैत छैक'''

लोक कविता ?—दीपक जी अकचका गेलाह.—लोक कविता की होयत छैक ? हम हँसैत सुनयलौं—

मुसाक धोकड़ी मुसाक कान/धोकड़ी धोकड़ी हवा आन/धोकड़ीसँ बक बाहर भेल/नगरक लोक सुषुप्त पड़ि गेल/बक गेला कतए कमलपुर—बैसला कथी पर कनैलक गाछ पर/माछ कौन खेलैथ कबई/पानि कतय पीलैथ, कावेरी मे—

एहिना क' सँ ल' ह' धरि सभटा फकड़ा पढ़ैत छी—ह' लग आबि खूब जोरसँ बसात बहय लगैत अछि. बशर्ते सभटा नाम-गाम ठीक-ठीक आ अक्षरक अनुकूल होय—बड़ काल धरि दीपक जी हँसैत रहलाह.

मंच पर प्रख्यात उड़िया कवि रवि सिंहक भाषण भऽ रहल छल—उड़िया एकटा एहेन भाषा अछि जकर कवि सभकेँ किछु पारिश्रमिक नहि भेटैत छैक. आर सभ भाषा मे लोग कमबैत अछि—

दीपकजी कहलन्हि—हिन्दा लोग आगि कहैत अछि.

रातुक खाना मे पुलाव-मीट तीन-चारि प्रकारक तीमन-तीबामे पात पर बैसि खायत छलहुँ कि—हाँ-हाँ. अहाँक पातसँ दालि बहि रहल अछि—बगलक मे

मैथिली !—एकटा नवयुवक बालटी हाथ मे लए बाजि रहल छल. अहाँ मैथिली छी ? हम चकित छलौं ? हम मैथिल थीकहुँ. सीतामढ़ी घर अछि. एहिठाम बिजली विभागमे छी. आइ अहाँक भाषण सुनि मैथिली मोन पड़ि गेल'''बारू विदि उड़िया लोक-उड़िया भाषा, प्रकृति आ पाथरक कोरमे बसल बरगढ़ शहर—जाहिमे अचानक एकटा मैथिलकेँ देखि हर्षो भेल - विषादो. पता नहि केहेन अनुभूति एहि मानव केँ होयत हैत ?

दोसर दिन ५ सा० के [illegible] प्रोग्राम छल. ८ बजे दिनसँ स्थानीय कवि लोकनिक कविता. आ ७ बजे रातिसँ आमन्त्रित कवि. हमरा बरगढ़सँ बाहर [illegible] बोकारो मद्रास. [illegible] अपन शहरसाँ—पटनासँ [illegible] विशाल होटलक [illegible] आमलेट सभ किछु फी [illegible]'''.

दोसर दिन १० बजे दिनमे कवि सम्मेलन शुरू भेल. होटलसँ तैयार भ' [illegible] कविसम्मेलन. स्थान जयवामे हमरा सभकेँ देर-स' गेल. कवि सम्मेलन चलि रहल छल. ज्ञात भेल हमर आइ रातुक जयबाक प्रोग्राम सुनि बाहरक आमन्त्रित सभ कवि अपन-अपन जयबाक प्रोग्राम बना लेने छलाह. कवि सम्मेलन स्थानीय आ आमन्त्रितक एके संग भ' रहल छल. अभय पाधा पुनः सम्मेलनक संचालन क' रहल छलाह. अभय पाधाक व्यक्तित्वमे हिन्दी, अंग्रेजी, उड़िया मैथिली सभटा भरल छल—भव्य एवं प्रतिभा सम्पन्न. देवी दास मिश्र स्थानीय कविक कविता चलि रहल छल. आशु कवि कहल जाइत छथि. ओ कविता लिखैत नहि छथि वरन् बजैत छथि.

सिगरेटक धुँइआँसँ घेरल हम बैसल छलहुँ. कखनहुँ राजेन्द्रजीक अधरमे सिगरेट तँ कखनहुँ डा० सौभाग्य मिश्रक ठोरमे तँ कखनहुँ हरिप्रसादजीक. विचित्र माहौल छल. राजेन्द्र पाधा अपन कविता पाठ क' रहल छलाह—अंग्रेजीमे बुझा' रहल छलाह—द इनटायर वर्ल्ड इज डिभाइडेड इन टू टू कैंप्स, वन ह्वीच टू लव एन्ड द अदर ह्वीच प्रीचेज हेट्रेड, आइ एम फार लव.

मनुष्य पर ओकर नामक असर अवश्य होइत अछि. डा० प्रसन्न मिश्रा गुलाबी शर्टमे सदिखन अपन मोहक मुस्कान छिरियौने रहल छलाह. ओ उड़ीसा-सरकारक पत्रिका 'शिशुलेखा'क सम्पादक छलाह संगे कटक कालेज मे उड़ियाक प्रोफेसर. प्रख्यात उड़िया कवि डा० सौभाग्य मिश्राक व्यक्तित्वसँ भाग्यक रेखा छलकि छलकि रहल छल - सुने पाखी उडे जाय, ठना फड़फड़ करी ...". पुनः उड़िया कवि नृसिंह प्रसाद त्रिपाठी, रायपुरक एसिस्टेन्ट इनकमटैक्स कमिश्नर अपन कविता 'नि:स्थिति'क संग अयलाह.

आब मैथिलीक अवसर भेटल मधुगन्धी दशालक संग हम माइकपर अयलहुँ... आ मैथिली- सभक आननपर स्मित रेखा संग छलीह, मैथिली गर्वसँ मुस्का रहल छलीह—मैथिली-मैथिली सभ भाषा मैथिलीक अलौकिक आभाक समक्ष निष्प्रभ भ' गेल. मैथिलीक माधुर्यक कतौ जोड़ नहि.

अंग्रेजीक प्रोफेसर हरिप्रसादजीक पारी आयल आ हुनक स्वर वातावरणमे लहरा उठल—सुन' सुन' आगि बेड़ कुछुक लागे छे सते बारम्बार ईश्वर हसन्ते.

उड़ियाक कविता नम्हर होइत अछि. मुदा, प्रसन्न कुमार प्रतल्ली स्थानीय कवि आ एम० एल० ए० आचार्य रजनीशक वेशमे बड़ छोट कविता पढ़लाह 'चिलिका'. मणिपुरी कवि इबोमेहा सिंह अपन कविता—'देबोय-देबोय' (डान्स-डान्स) संग उपस्थित छलाह. दोसर कविता ओ सुनयबाक प्रार्थना कय सुनओलनि असहाय मंदिर—जगन्नाथ मंदिरक विषय—'जस्ट ट्डे जस्ट टूडे एभरीथींग डेसर्टेड डेड जगन्नाथ, डेड जगन्नाथ'''

गरम-गरम हवा बहि रहल छल. बीच बीचमे कॉफी आ पानिक दौर चलत छल. मुदा हम एक विचित्र आ सुन्दरतम स्थिति देखलहुँ. कवि सम्मेलन १० बजे दिनमे शुरू भेल आ ३ बजे दिन धरि अनवरत चलैत रहल. जन समूहक उमड़ल भीड़ एकदम मंत्रमुग्ध भ' कवि लोकनिकेँ ओहि तन्न, तापमे सुनि रहल छल. कवि सम्मेलन लेल, ई धैर्य, ई आतुरता, उत्सुकता, रौदमे बैसि, भूख पिआस बिसरि सुनबाक अधीरता एहिसँ पहिने हम कहियो नहि देखने रही. अभूतपूर्व समा छल. नमित भ' हम ओहि साहित्य प्रेमी श्रोता सभ लेल पूजा-भाव अनलहुँ.

तीन बजे सम्मेलन खतम हेबाक बाद भोजनक ओरिआओन होमय लागल. ओना तँ स्वागत समितिक सभ सदस्य बैजसँ लेस भ' क' सभ कार्यमे सदिखन

[illegible] छलाह बेसी आइ० एस० अफीसर आ [illegible] आगूमे कुरसी खींचि अपन अपन [illegible] कोनो अवमानना आ कोनो गौरव नहि, [illegible] नहि. भात दालि, दू टा तरकारी आ बड़का [illegible] कुटिया, दही चीनी लगैत छल मिथिलासँ खा [illegible] ओहिना अपेक्षा, ओएह आग्रह, ओएह प्रेम.......

[illegible] वर्मा साहबसँ पुछलनि 'डोन्ट यू स्मोक' जवाब हम देलहुँ—'नो [illegible] नो ड्रिंकिंग'. वर्मासाहेबक हाथ पकड़ि 'बेचारा' ओ कहलनि—'दन [illegible] दिन [illegible] मिजरेबुल'. हमरा मोन पड़ि गेल, राति एकटा एकान्त [illegible] मदिरा पानि जकाँ बहि गेल छल. हुनक दावा छनि बिना [illegible] कविता नहि लिखि सकैत अछि. हरिजी कहलनि हमर पत्नी हमरा नहि [illegible] छलीह. हम ओकरासँ एके प्रश्न कयलौं अहाँ पोएटसँ ब्याह केने छी कि [illegible] ओ कहलीह निश्चित रूपसँ पोएटसँकेने छी—तखन हमरा पीब' दिय' [illegible] आ धरि हम कविता करैत छी ताधरि शराब पिबाक आज्ञा हमरा भेटल. कविता करबाक एहि विचित्र प्रक्रियापर हमरा हँसियो आबि गेल आ किछु [illegible] विवशता.

५ बजे प्रो० अशोक चंदन, उड़िया कवि होटल अयलाह. "शेफालिका जी, ५ मिनटक लेल रेस्ट हाउस चलू. नवयुवक उड़िया कवि आ छात्रगण अहाँक इन्टरभ्यू लेताह" भरि दिन थाकिकेँ, बैसिकेँ आयल छलहुँ, आलस्यक जोर छल. मुदा वर्मा साहबक एके डाँटमे—'एहि ठाम अहाँ आयल छी. कोनो कार्यक्रममे नहि [illegible] कहियौक' – कहि अपने पलंगसँ दोस्ती क' लेलनि हम चंदनजीक संग पुनः रेस्ट हाउस अयलहुँ. बड़का मजमा लागल छल. 'टेपरिकार्डर' बीच मे राखल, बहस चलि रहल छल कविताक सृजन कोना होइत अछि—की शेफालिकाजी अहाँक की मंतव्य ? की अहाँ जहिना कविता बनबैत छी तहिना ओकरा प्रकाशित करबैत छी—हम हुनकर सभक समस्या आ बहसक कारण बुझि रहल छलहुँ—हम [illegible] "जहिना प्रसव पीड़ाक समय माय छटपटाइत अछि—तहिना रचनाक जन्म हेबासँ पहिने रचनाकार छटपटाइत अछि. संतानक जन्मक उपरान्त माय अपन शिशुक रूप सँवारबा लेल कखनो ओकर माथ ठोकैत अछि, कखनो ओकर नाक [illegible] करैत अछि—ठीक ओएह हाल रचनाकारक अछि. कविताक जन्मक

पश्चात अपन कविताक रूप आर सुन्दर आर सुन्दर बनयबा लेल ओकर काट छाँट करैत अछि.''···सभ खुश भ' विस्मित-मुग्ध छलाह आ हम खुशीक संतोषक अपरिमित खजाना ल' होटल चलि अयलहुँ !

अभयशंकर पांधा कहलनि — अहाँक भाषण संबलपुर रेडियो स्टेशनसँ बुध दिन साँझमे न जूनकेँ प्रसारित होयत. अवश्य सुनब.···विदाक बेला आबि गेल छल. स्वागत समितिक दूनू सदस्य सनत कुमार आ अशोक महापात्र बी० ए०क परीक्षाफलक इन्तजार मे छलाह—एको मिनट लेल हमरा सभकेँ नहि छोड़लक. हम सभ समानक संग कारक प्रतीक्षामे छलहुँ. सभ कवि लोकनि हमरा दूनू गोटेकेँ घेरने. बिहार बजयबाक आमंत्रण लेल उत्सुक. पुनः अयबाक आग्रह. एकटा आत्मीयताक स्नेह रश्मिमे बंधा गेल रही. ताबत एकटा युवक पत्रिकाक ढेर ल' पहुँचलाह 'मैडम, ई सोवेनीर प्रकाशित भेल. एहिमे अहाँक मैथिली कविताक अंग्रेजी रूपान्तर अछि, कतेक देर धरि रोहिनी कान्त मुखर्जी सोवेनीरक संपादक मैथिलीक प्रशंसा करैत रहलाह आ हम ओहि प्रशंसा ओहि भाव, ओहि उन्मादमे डूबल बरगढ़ शहरकेँ नमस्कार कय सभक आत्मीयतामे डूबल हृदयसँ बिलग हेबाक भाव नेने, व्यथा वेदना नेने···सनत कुमार आ अशोक महापात्रक संग चलि देलहुँ स्टेशन लेल — मैडम, अहाँ हमरा सभकेँ पत्र देब ने ? एतेक भीड़क मध्य दुनू गोटेकेँ कहियो नहि बिसरब—अशोक आ सनत एके संग बाजि उठलाह. रात्रिक आठ बजैत छल. कार बरगढ़ स्टेशन दिस दौड़ि रहल छल 'हँ अशोक पत्र देब अवश्य मुदा शर्त्त एकेटा—अहाँ हमरा मैडम नहि कहू—दीदी कहू दीदी—

हँ-हँ अवश्य कहब दीदी. अहाँक हम सभ कहियो नहि बिसरि सकब, दीदी कहियो नहि—

—आ हमर मोन ट्रेनक गतिक संग संग भगैत रहल···मणिपद्म जी हाले सहरसाक कवि मंचपर कहने छलाह शेफाली जी, अहाँक मोन तँ सिमरक फूल जकाँ उड़ैत रहैछ—उड़ैत रहैछ···आ सत्ये हमर मोन उड़ैत रहल उड़िया लोकनिक संस्कारपर. आई० ए० एस० होथि वा कि प्रोफेसर कि प्रिन्सिपल सभ गप करैत छलाह अपन मातृभाषा उड़ियामे, कलकत्ताक अधिवेशनमे सभ बंगाली गप करैत छलाह बंगलामे— उड़िया बंगला कतेक गौरव कतेक अभिमान कतेक आत्म सम्मान संग···आ हमरो मोनमे प्रतिबद्धता आयल हिन्दी हमार राष्ट्रभाषा थीक, मैथिली मातृभाषा—जखन हम माएक आदर करब तखनहि तँ राष्ट्रक आदर क'

सकब, जननीकेँ आदर देब' जन्मभूमिकेँ आदर द' सकब. स्वराज्यक उपरांत भारत भाषाक दृष्टिसँ दुई भागमे बँटि गेल. संविधानमे छैक 'इण्डिया दैट इज भारत' यानी भारतक ऊपर इण्डियाक राज छैक. एखन' धरि भारत पर भारतक राज नहि भेल अछि. भारत जे देहसँ भारतीय अछि मोनसँ अंग्रेज. हम जीवनक प्रत्येक कार्य-कलापमे एकटा भारतीयसँ अपेक्षा रखैत छी जे ओ कतेक नीक (स्मार्टली) अंग्रेजी बाजि सकैत अछि. मुदा हम कहिओ कोनो साक्षात्कारमे ई देखबाक प्रयास नहि करैत छी जे ओ कतेक सुन्दर धारा-प्रवाह राष्ट्रभाषा बाजि सकैत अछि या कि अपन मातृभाषा बाजि रहल अछि. आ इएह कारण थीक जे कतेको मातृभाषाकेँ एखन धरि संविधानमे स्थान नहि भेटल छैक.



काल अजगरसँ मुक्ति (१९८६)

जाहि बातकेँ मानव बिसरबाक कए देबा लेल चाहैत अछि बएह किएक बेर-बेर स्मृति पट पर छेनी मारैत रहैत अछि ? जीवन मे चारू दिसिसँ शान्तिक सुमधुर अदृश्य कलनाद होइत रहैत अछि. हृदयक उल्लाससँ मानव बंधनहीन भए जाइत अछि. मोन मयूरी जकाँ नृत्य कर' लगैत अछि कि कोनो अज्ञात कोनसँ काल बैसाखी सन मेघक एकटा खंड आस्ते आस्ते समस्त आकाशकेँ झाँपि लैत अछि केकरो किछ जानबाक, समझबाक अवसर देबासँ पहिनहि. तखन बुझा पड़ैत छैक जे मोन मयूरी किएक नृत्य कए रहल छल—

मानव जीवन स्वयं एकटा अनंत-पथक यात्रा कथा छी जेकर मंजिल अस्थि-चर्म-मय देहक अंत थीक—किन्तु, मानवक कोनो-कोनो यात्रा कतेक दारुण कतेक मर्मांतक होइत अछि जाहिसँ स्वयं यात्री नए वरन् अगल बगलक समस्त परिवेश प्रभावित भए जाइत अछि—

—कटिहार-गौहाटीक ट्रेन मे हम सभ बैसल छी, हमर कोर मे माथ रखने सद्यः परिणीता हमर प्रथम पुत्री भावना निश्चेष्ट पड़ल अछि. सामनेक बर्थ पर वर्मा जी अपन योगीक समाधि मुद्रा मे निश्चल बैसल. राजू समान ठीक सँ राखि रहल छल. गाड़ी खुजि गेल—स्टेशनक भीड़ बिखरि गेल. अचक्के गाड़ी रुकि गेल. हमर डिब्बाक बाहर फेर लोकक भीड़ लागि गेल. हमर छोट भाइ रेलवे अधिकारी शरदक चेहरा एकदम फक्क छल.

हमर भावना अचक्के चिकरि उठलीह की भेल'' की भेल ? गाड़ी किएक रुकि गेल ? हमर सभक जी सन्न द' उठल. शरद जकरा प्यार सँ हम सभ सेन्टू कहैत छी ओकरा पचासो आदमी घेरने छल'''डिब्रूगढ़सँ खबर आयल छल जे ब्लड सरकुलेशन प्रकाशजीक रुकि गेल छैक हुनका डॉक्टर तुरत भेलोर लए जेबा लेल कहने अछि. हुनकर केओ अभिभावक ओहि ठाम नहि रहनसँ डॉक्टर असमंजसमे अछि. डिब्रूगढ़ भेलोर'''जेना माथ पर घनाक खट-खट भय रहल छल. मुजफ्फरपुरसँ हमर समधि प्रकाशजीक पिता बिदा भए गेल छलाह. मुदा डिब्रूगढ़ तुरत पहुँचनाए मामूली गप नए थीक. शुकू हाहाकार कए उठलीह''गाड़ीकेँ तुरत खोलि देल गेल

[illegible] रेलवे अधिकारी सभ शरद कुमार मल्लिक'क कारण एहि विषम परिस्थिति [illegible] गेल छल'''इ परिस्थिति पड़ला पर क्यो जानि सकैत [illegible] जीवन-मृत्युसँ लड़ैत अपन जमाए प्रकाशक चेहरा मोन पड़ि [illegible] हिमालयक पंक्तिबद्ध चोटी सभ भागि रहल अछि. हम [illegible] हिमालयकेँ प्रणाम करैत छी'''जहाँक सघन अरण्य मे कतेको ऋषि मुनि [illegible] तपस्या मे लीन छथि'' हे देवराहा बाबा अहाँ सभ अभि-[illegible] बेटा लग पहुँचि जाऊ'' हम कल विकल हृदयसँ आर्तनाद क' रहल छली.

[illegible] मुखड़ा शुकू पर दृष्टि पड़ैत अछि—भरि-भरि हाथ लाहक लाल-लाल [illegible] माथ पर [illegible] टिकली भगवती सन सुन्दर कांतिमय चेहरा'''हमर टकटकी [illegible] लागि गेल—गौरी सन निर्मल अंतःकरण, गंगा सन पावन विचार धारा, कैलाश सन शुभ्र चरित्र, मानसरोवर जकाँ करुण, एहि बेटीक सुहाग सभ दिन [illegible] रहत सभ दिन अचल रहत—सामने तपस्वी सन मोने-मोन दुर्गापाठ करैत [illegible]. [illegible] कंपार्टमेंट जेना पाठ क' रहल छल. इ असह्य वेदनाक क्षणकेँ अभिव्यक्त [illegible] क्षमता की विश्वक कोनो लेखनी मे छल ?

[illegible] राति हम सभ सहरसा मे छलौं. भरि राति केकरो आँखि मे नीन नय छल. इ मंगलवारी केने छलाह. हम अपने आब जल्दी कोनो [illegible] नय करैत छी, पेप्टिक अल्सरक मरीज हेबाक कारण. मुदा, की व्रत [illegible] ? हमर माँ (सासु) एतेक व्रत उपास करैत छथि. पूजा पाठ मे अपन [illegible] क' देलीह. दानी एतेक जे अपन आगुक थारी तक लोककेँ द' दैत [illegible] ईश्वर हुनका संग अन्याय केलन्हि. जवान आ बाल-बच्चावाली बेटी रेणुक [illegible], पुनः [illegible] वंश द' बाबूजीक महाप्रयाण—तखन इ उपास तिहारक [illegible] हम तँ निर्गुण ब्रह्मक उपासिका छी. ईश्वरक वास अपन आत्मा मे [illegible] छी. हमर आत्मा जतेक शुद्ध, जतेक निष्कलुष रहत ईश्वर हमर ओतबे नजदीक रहताह. हमर [illegible] जतेक निःस्वार्थ रहत जिनगी ओतबे सद्भावसँ भरल. मंदिरो [illegible] ओनके चुपचाप धो' देबा लेल. अपनाकेँ उत्सर्ग करबा लेल.

[illegible] एगारह बाजि रहल छल. फोनक घंटी बाजल. पटनासँ अर्जेन्ट काल [illegible] आयल छी. पापा तँ बिना कोनो खास प्रयोजने फोन नय करताह [illegible] मुदा, गप नहि भ' सकल.

गुडूकेँ बुझैत छी—भ' सकैत अछि तें चतुर्दशी मे चललह पटनासँ तैं मामाजी तोहर कुशल जानवा लेल फोन कयने हेथुन.

गुड्डू हँसि देलक—पिन्टू मामा त्रिशूल मे गेल छथि से किछु नहि, हमरा लेल अर्जेन्ट कॉल—बात जँचि गेल मोन जेना एकदम पीपरक पात जकाँ आशंकासँ काँपि रहल छल. पापा—आ अर्जेन्ट काल ?

एहि कोठरीसँ ओहि कोठरी घुमि रहल छलौं भांति-भांतिक आशंका ! पति आ संतान एहि मे हमर प्राण बसैत अछि. ओ की सोचि रहल छथि—हुनका मोन मे कोनो बातक चोट तँ नहि पहुँचल छैक—निरुद्देश्य एहि छोट छोट बातकेँ पैघ महत्व द' हम मोने-मोन सोचैत रहैत छी सदिखन…

उधेड़बुन, मोनक अस्त-व्यस्तता, संशय जेना इर्द-गिर्द पसरल रहल. राजूकेँ बनारस मे एयर फोर्सक इंटरव्यू छल दस अगस्तकेँ. कॉलेज मे हड़ताल, इ कचहरी, गुड्डी स्कूल. राजू खा-पीकेँ हमरा कहलक मम्मी अहूँ खा लिय—

नय बेटा, पता नय आय किएक नवाक मोन नहि करैत अछि—

तीन बाजि गेल—फोनक घंटी फेर घनघना गेल. पटनासँ छल—डाक्टर भाई मन्ना जीक फोन—दीदी आसाम मे पाहुन प्रकाश जीक सीरीयस एक्सीडेंट भय गेल अछि. फोन आ तार जी॰एड॰एस॰ होस्टल मे सूकू लग आयल छल 'सेन्ड मिसेज नवीन इमीडिएटली—

—तखन सूकू जी॰एड॰एस॰ होस्टलमे एम॰ए॰क परीक्षा देबा लेल छलीह—

…आ तकर बाद क व्यथा कथा. कटिहार लेल जानकी भिनसर छल—राति भरि दुर्गा पाठ करैत रहलौं. राति भरि कुकुर कनैत रहल, पानि पड़ैत रहल—कोना हम सभ सेन्टू लग पहुँचलौं, कोना सूकूकेँ बेसुधिक हाल मे पटनासँ कटिहार पहुँचायल गेल, कोना अन्नु माय बनि सूकू के अपन कोर मे समेटने छलीह, कोना ओहि प्रकाश जीकेँ माता-पिताकेँ ई हृदयद्रावक समाचार ज्ञात भेल—अपना आप मे नोरक सागर नहि महासागर बनि गेल छल. गाड़ी झटकासँ रुकि गेल. सिलीगुड़ी स्टेशन छल—एकटा रेलवे स्टाफ दौड़ल आयल—वर्मा जी इसी में है—सभ केओ एके संग उछलि खिड़की लग जेबाक प्रयास केलौं. "प्रकाश जी पहले से ठीक हैं. चिन्ता की बात नहीं." रेलवे वाला खेनाय भेज देलक. हम एक दुइ कौर सूकू के खुअयबाक प्रयास केलौं—मुदा ओ बाजल—नय हमर मधुश्रावणी चलि

रहल अछि हम प्याज लहसुन किछु नय खायत छी. हम ओहि—सुहागिन बेटीसँ आँखि नय मिलाय पबैत छलौं…

गाड़ी खुलि गेल… कोहुना कोहुना सातक भोर कामख्या स्टेशन पहुँचलौं—माताक दर्शन दूरसँ भेल. शक्तिक संचार भेल. सेन्टूक साथी रेलवे अधिकारी रविप्रभात जी हमरा सभके अपना ओत' लय गेलैथ. ओहिठाम फेर खबर भेल जे पाहुन ठीक भ' रहल छैथ.

केकरो केकरो जीवन एहेन होइछ' जे सभसँ मिलि सभक सिनेह पाबैक आकांक्षा रखैत, सभक जीवनसँ संबद्ध होइत आगु बढ़वा लेल चाहैत अछि. किन्तु एकटा एहनो जीवन होइत अछि जे सभकेँ अस्वीकारैत अपन अस्तित्वे केँ मुख्य मानि आगु बढ़बाक प्रयत्न करैत अछि. ओकर समक्ष हमे अहाँ किछ नहि अपनहि सभ किछु अछि. संसारमे एहेन लोकक संख्या बेसी अछि. मुदा, उत्तर-पूर्व रेलवेक कर्मचारी, पदाधिकारी गणक सह-संवेद्य परोपकारी स्वभाव अपना आपमे उदाहरण छल. जखन सहरसासँ इ आकस्मिक यात्रा आरम्भ भेल हमरा सभक संगे एको पाइ नय छल. ओकिलक जीवन सदिखन आकाश वृत्ति लेल टकटकी लगौने रहैत अछि. ओकरा कोनो दरमाहा नहि भेटैत छैक. दिनागक कमाई खाइत अछि. ओहि फीस पर घर दुआर अतिथि सत्कार यानी जीवनक संपूर्ण कार्यकलाप, मुदा, यदि केओ बिन फीसक काज ओकरासँ लैत छैक तँ घरक कतेक बजटमे कटौती कर' पड़ैत छैक ई आन पेशाक लोग अनुमान नहि क' सकैत अछि. ताहि पर हमरा छह सन्तानक भरण पोषण पटना दिल्लीक पढ़ाई होस्टलमे राखि. बेटीक ब्याह दुरागमन तुरते केने छलौं—सभ दिसिसँ हारल लुटायल. हमर सभक बैंक बैलेंस मे साहस आ धैर्य छोड़ि किछ नहि छल. कोना कोना राजू किछ टाकाक इन्तजाम केलक—हमरा होस नहि छल. जिनगी भरि भगवान परीक्षे लैत रहलाह. कटिहारमे सेन्टू हमर सभक टिकट डिब्रूगढ़ लेल कटवाय देने छल. सुकूक ब्याहोमे ओ मदद केने छल. मुदा, जखन कामाख्यामे रवि प्रभातसँ किछु टाका पैंच लेलौं त' मोनमे किछ चैन आयल छल—एहनो दिन कहियो जिनगीमे आओत सोचैत नै रही. पटना साइंस कॉलेजक मेधावी आ ललितकला सम्पन्न छात्र फिजिक्सक इ छलाह. संगे कानूनक विद्यार्थी. माइबीगामे कम्पीट कय छोड़ि देलन्हि, बाबूजी कहलन्हि हमर बेटा खानक नौकरी नहि करत. इम्पीरियल टोबैको कम्पनी कलकत्तामे एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसरमे ज्वायन केलन्हि. ओ नौकरी सुरा-सुन्दरी आ तथाकथित हाई सोसाइटी हमरा नहि पसिन्न पड़ल,

इ समझौने छलाह— बंगला भेटत, गाड़ी भेटत— गहना जेवरसँ लदल रहब —मुदा, ऑफिसक वातावरण हमर मोन पर हावी भ' गेल छल. तखन हम अर्थक महत्व नहि बुझैत रही. कल्पनाजीवी छलौं आ ओहिमे जीब' चाहैत छलौं. नून रोटी खायब मुदा चैनसँ तँ रहब'—आ इ वकालतमे चलि अयलाह. बाबूजी चाहैत छलाह जे बी०डी०ओ० बनथि. हिनका सरकारी नौकरीसँ वितृष्णा छल. तखनहि ई मोने मोन शपथ ल' नेने छलाह हम गामसँ एक पाइ नहि लेब आ नहि तँ अन्न लेब. तकर फल भोग' पड़ल हमर बाल बच्चाकेँ. राजू, सूकू, पींकी माता-पिताक स्थिति आ संघर्ष देखि सभ जहरक घूँट पीबि जीवैत छल. एकटा संकल्प, एकटा सिद्धान्तक कारण इ गामसँ किछु नय ग्रहण करैत छलाह जखन कि गाममे भरि साल लेल अनाज राखि बेचि देल जायत छल. हम कहियो प्रतिवाद करैत छलौं तँ एतबे बजैत छलाह—अहाँकेँ हमर दूनू हाथ पर विश्वास नहि अछि ?—विश्वास कोना नहि हेतीयैक ? हिनक हाथमे शुक्र आ वृहस्पतिक स्थान अत्युच्च अछि. बड़ कम समयमे बड़ प्रतिष्ठा अर्जित कैलन्हि. खजन सुपौल मधेपुरा सहरसा जिलामे छल तखनहि बिहारक सभसँ कम आयुक ईमानदार आ सिद्धांतवादी पी०पी० ई भेलाह. वकालत हिनक नशा बनि गेल. सड़लो केसकेँ आक्सीजनसँ जीवित केनाय हिनक धर्म. मुदा, लोअर कोर्टक फीस ओहिनो कम होइत अछि ताहि पर कोसी पीड़ित क्षेत्र—हिनका पैतावा नहि छल, राजूकेँ गंजी नहि, दस टाका भेल छल. राजू बजैत छल पापाकेँ पैतावा खरीदबैक इ बजैत छलाह राजूकेँ गंजी नहि छैक—इ संवेदना बच्चा सभक छल आ इ स्थिति छल डुमरा नरेशक. हिनका ओहि इलाकामे नेनपनेसँ सभ डुमरा नरेश कहैत छल. ओहि समय दस टाकाक कीमत छल. २ रु० किलो करुआ तेल, २ रु० मन कोयला १०-१५ टाकामे नीक सूती लुआ भेटैत छल. नहि भेटैत छल तँ टाका. एहि सभ स्थितिमे साहसक पूँजी संग बच्चा सभ पढ़' लागल आ सभ वर्गमे प्रथम द्वितीय अबैत छल. राजू पटनासँ दिल्ली चलि गेल. सूकू, पींकी, लीली पटना वीमेन्स कॉलेज. छह रुपया मीटरक कपड़ा बाल बच्चाकेँ पहिर' दैत छलौं. वीमेन्स कॉलेज होस्टलमे रह' वाली बेटी सभ कहियो नहि बाजल ऐहेन कपड़ा नहि पहिरब. पाउडर स्नो सेहो ओकरा सभकेँ चाही से ओ सभ मंगैत छल नय हमही बुझैत रही. बएह वस्त्र राजू दिल्लीमे पहिरैत छल, मुदा केकरोमे 'इनफिरियोरिटी कम्प्लेक्स' नहि.

आस्ते-आस्ते हमर सभक स्थिति नीक भेल जा रहल छल. वकालतक आरम्भमे खाली कष्टे कष्ट अछि मुदा जखन लोग रिटायर करैत अछि तँ

जीति जवानी ओकिल जवान भ' जायत अछि. पैसा राखबाक जगह ओकरा नहि भरित ठीक. नौकरीमे लोक जावत रहैछ ऐश करैत अछि रिटायरमेंटक उपरांत केओ ओकरा राखबा लेल तैयार नहि होयत अछि. कतबो बड़का पोस्ट पर बाल बच्चा रहैत बनि पिता ओकिल छथि तँ आस भरल दृष्टिसँ सभ दिन पिता दिसि तकैत रहैत अछि. मुदा, रिटायरमेंटक बाद पिता सभ दिन बेटा दिसि आस भरल दृष्टिसँ तकैत छथि.

एकटा सिद्धान्तक रक्षा लेल एतेक संघर्ष हमरा कर' पड़ल ओहिमे हमरा आपन बाल बच्चाक जे सहयोग भेटल तँ आय बच्चा सभ जीवनमे प्रखर सूर्य सन समर्पित रहल अछि. देह रहितो विदेह भ' गेला वर्मा जी. सुख संपत्ति वैभव विलास ई सभसँ पैघ वारिस किन्तु, कोनो लिप्सा नहि. कोनो मोह नहि. एहिसँ पैघ ऋषि मुनि कि भ' सकैछ—? तँ विनयशीलता, आत्म सम्मान-पर दुखकातर, त्याग हमर सभी सन्तानक संस्कार बनल. पिताक कथन होइत छल—हमर छह संतान छह टा बैक बैलेंस शोक. आय ओहि संतानक दुख······समूचा अतीत जेना हमर मानस के' अपना बोझिल केने छल.

गोहाटीसँ तिनसुकिया लेल ट्रेन पकड़ैत छी. जंगल झाड़ गाछ बीरीछक मध्यसँ रेलगाड़ी चलल जाय रहल छल. सूकू शांत छलीह. एको बेर ओकरा नोर नव बहव' देलौं जे पाहुन पर ओकर प्रभाव पड़तैक. आखिर सहनशक्ति तँ कहाँ धरि तव कल. फेर तिनसुकियामे रेल्हूत दोस्त जतीन सरकार आयल जे राजूक संग बुझि लेलक. ओ ट्रेनिंगमे छल. राजूसँ बाजल—तुम एकेडेमीक्स छोड़ नौकरीमें मत आना. मेरी बीबी यदि हिन्दुस्तानी नहीं रहती तो मुझे छोड़कर चली गयी रहती. वातावरण हल्लुक भ' गेल छल. प्रकाश जी ठीक भ' रहल छलाह. खबर ल' क' जतीन सरकारक समस्त पार्टी आयल छल.

छह बजे करीब तिनसुकिया पहुँचल रही. ओहिठामसँ आठ बजे डिब्रूगढ़ लेल आसाम मेलसँ चललौं आ ११ बजे दिनमे डिब्रूगढ़ पहुँचलौं······स्टेशन पर बड़का भीड़ हमर सभक अगबानी लेल रेलवे स्टाफ सभक. जत' जे सूकूक चेहरा देखय ओतहि जेना अवचँक भ' जायत छल ओकरा.

अस्पताल पहुँचैत छी. पाहुनक दोस्त रावत जी ठाढ़ छलाह. सूकू हुनका पकड़ि जोर जोरसँ कानय लागल. जेना बान्हल नदीक धार अचानक किनार तोड़ि चीत्कार क' रहल होय. रावत जी ओकरा भरि पाँज पकड़ने समझाय रहल छलाह मुदा ओ बताहि जकाँ अपन देह हाथ पटकि रहल छलीह—तखन

लागल कोना इ भरि रास्ता अपनाकेँ नियंत्रित केने होयत कोना ५ ता० सँ आठ तारीख तक ओ धैर्य राखने होयत……

समधि राजेन्द्र जी मैल थैल कपड़ामे हारल लुटल सन एक कोना मे ठाढ़ की भय रहल छैक—एकटा संज्ञा शून्य सन विधिक विधान देखैत कनिके देर पहिने पहुँचल छलाह. हम जिद कय देलौ पहिने हम एक नजर देखब पाहुनकेँ. मिलबाक समय खत्म भय गेल छल. तैयो हमरा ल' क' रावत जी भीतर गेलाह. हम आगू बढ़ि गेलौं बेड पर खोजैत' खोजैत—तखन रावत जी पाछुसँ बजलैय.— हम आगू बढ़ि गेलौं बेड पर खोजैत' खोजैत—तखन रावत जी पाछुसँ बजलैय.— आय घरि हमर मानससँ ओ दृश्य हँटि नय पबैत अछि जे हम हुनका चीन्ही नय सकलौं. डाक्टरक पएर पर खसि पड़लौं.—डाक्टर साहब दो महीना हुआ है मेरी बेटी के ब्याह का'……जाइत डाक्टर ठमकि गेल. सूकूक चेहरा पर ओकर दृष्टि गेल सूकूक पीठ पर हाथ रखैत एतबे बाजल 'ईश्वर, से प्रार्थना करो बेटा.

अस्पतालक बरामदा पर कोनमे चद्दर बिछाय हम सभ सिकुड़ल सिमटल बैसल छी—भेलौर जेबाक प्रसंग मे सभ कह' लागल जखन ब्लडसरकुलेशन रुकि गेल तँ—डाक्टर कहलक अब जो हो मैं खुद प्रयोग करूँगा 'ओकर बाद ओ खून चढ़ेनाय शुरू केलक तँ ब्लौकेड खत्म भय रक्तसंचार होम' लागल. हम नमित भ' उठैत छी हिमालय स्थित ओहि पवित्रात्मा ऋषिमुनि सभक लेल जे हमर बच्चाक प्राण-रक्षा केलन्हि. रावत जी बजलाह—एक बेर ओकरा होश आयल छल तखन ओ मात्र सूकू बाजि अचेत भय गेलाह हम सभ नहि बुझि सकलौ जे सूकू के अछि ? हम सभ तँ भाभीजीक नाम भावना जनैत रही—आँखि भरि जायत अछि—सूकूक ब्याहसँ अढ़ाय मास पहिनहि प्रकाशजी अचक्के दरभंगा हाउस जाय सूकू केँ देखने छलाह. ब्याहक उपरांत ओ राजूसँ कहलन्हि—भैया, अहाँ तँ हमरासँ पैघ छी. तैयो एकटा बात अछि मोनमे. दोस्तो तँ अहीं छी. अहाँसँ नहि कहब तँ केकरा कहब—हम जहियासँ सूकू के देखलौं आय अढ़ाय माससँ नहि सूतल छी. नीन नहि आयल अछि—आय अचेतावस्थामे पहिलुक नाम सूकूक स्वरित कय अस्पष्ट हुनक कुहरब नहि जानि कतेक जनमसँ बिछुड़ल आत्माक पुकारि छल—केओ सह-संवेद्य सहजहि अनुभूत कय सकैत अछि.

आय दहेजक कैंसरसँ पीड़ित समाजकेँ कोनो बाट कोनो उपचार नहि भेटि रहल छैक. एकर कारण अछि जे टाका लैत छथि—जे अपन बेटाकेँ

केवल छथि ओकरा लोग बड़ चर्च करैत छथि खिधाँसमे मुदा चर्च तँ होइत रहैत छैक. किन्तु समाजमे एखनो कतेक परिवार एहेन छैक जे टाका नय लैत छथि. ओ अपन सिद्धान्त बना नेने छथि. प्रायः हमरा सभमे एकटा बत्तीसगाम मूलक होइत अछि. ओ अपनहिमे ब्याह करैत छथि. यदि बत्तीसगामसँ बाहर नीक बेटा भेटैत छथि तँ बेटीक ब्याह करबा लेल तैयार रहैत छथि मुदा, बेटाक ब्याह ओ किन्नहु बत्तीसगामसँ बाहर नय करय लेल चाहैत छथि. भलहि हुनक बेटा आन जातिमे ब्याह भय जैथ. इ सभ टाका-पैसा एकदम नहि लैत छथि. बड़ आदर्शवादी आ सिद्धान्तवादी होइत छथि. इ हिनका सभमे पैघ गुण छैक. हम सभ स्वयं बत्तीसगाम मूलक छी मुदा आन-आन गाममे बँसि गेलाक कारण ओ लोकनि हमरा सभकेँ बत्तीसगामसँ बाहर बुझए लगलाह. जे बत्तीस गामक नहि छथि. ओ प्रायः टाका लेबा लेल बदनाम छथि "ले डूबता है एक नाविक नाव को मझधारमे" मुदा एहेन बात नय होय छैक. बत्तीस गामसँ बाहरो पैघ पैघ खानदान अछि जे टाका नहि लैत छथि. हमर आठ बहीनक ब्याह मात्र एकटा घड़ी फॉउन्टेनपेन पर भेल—हमरा सभक खानदानमे दहेज लेनाय घोसांस बुझल जाइत छैक. हमर दुनू बेटीक ब्याह बिना कोनो समान, बिन एकटा नव पाइक भेल अछि. एहेन एहेन कतेको परिवार छथि जे टाका नहि लैत छथि—यदि संख्या गिनब' लागीतँ अनामदासक पोथासँ कतेको गुणा पैघ भ' जायत.

राजेन्द्र बाबू हमर पैघ समधि आ वर्माजी दुनू बड़ पैघ दोस्त छलाह. सूकू ७-८ बरीखक छल आ प्रकाश तेसर चारीम वर्गमे पटनामे पढ़ैत रहैथ आ तकर बाद हवाक एकटा झोंक आयल हम सभ सहरसा बैसि गेलौं, राजेन्द्रजी मुजफ्फरपुर. वर्माजी अपन वकालत सहरसामे शुरू केलन्हि. हमर श्वसुर स्व० सूर्यनारायण लालदास उर्फ दुलार बाबू जे १९५३ ई० सँ डुमरा पंचायतक मुखिया १९८२ तक यानी मृत्युपर्यन्त रहलाह—हुनक आदेश छल जे एतेक टा जमींदारीक सभसँ पैघ बेटा अहाँ छी—घर लग रहब तँ जगह जमीन देखि सकब—

अपन संगी राजेन्द्र जीसँ अलग भेनाय दस बरीससँ बेसी भ' गेल छल कि अचक्के ज्ञात भेल प्रकाशजी ओ० एन० जी० सी० मे इंजीनियर भ' गेल छथि. ओहि समय सूकू एम० ए० (इतिहास)क छात्रा पटना विश्वविद्यालयमे छलीह. तखन मोनमे आयल आब हमर बेटी पैघ भय गेलीह. इ एकटा पत्र सूकूक विषयमे राजेन्द्रजी केँ लिखलन्हि. राजेन्द्रजीक उत्तर पोस्टकार्डमे तुरत आयल छल जे—'अहाँकेँ प्रकाश केर आवश्यकता अछि. तँ आइसँ प्रकाश अहाँक बेटा भेल;

सूकू हमर बेटी भेलीह. हमर बहीनक ब्याह होयबला अछि. तकर उपरान्त हम स्वयं अहाँकेँ खबर करब'.— आय धरि ओ साधारण पोस्टकार्ड एकटा अमूल्य रत्न जका हमर अक्षय स्मृति कोषक संग हमर पेटीमे सुरक्षित अछि. कतेक लोग अछि बेटाक पिता जे एहि तरहे तुरत उत्तर दय सकबाक क्षमता आ सामर्थ्य रखैत छथि ! इ एकटा व्यक्तित्व छैक जे अपना आपमे गरिमामय छल.

ब्याहसँ पहिने हमरा सभक विरुद्ध खासक' सूकूक विरुद्ध कतेक तरहक बात लोग हुनका ओतए बाजल.—केओ बाजल सूकू लड़कासँ पैघ अछि—त' हमर समधीन कमलाजी तुरत उत्तर देलीह हमर दुइ बच्चाक जन्मक उपरान्त हुनक पैघ बेटा राजीवक जन्म भेल. एकर बाद सूकूक जन्म भेल.—केओ कहलक सूकू दाढ़ी बनबै छथि—हँसिकेँ हमर समधीन बजलि छलीह—की हेतैक हम दाढ़ी बनबऽ बला प्रेजेन्ट कय देबैक.—कहबाक तात्पर्य जे नाना प्रकारक विघ्न बाधा लोग उत्पन्न करबाक प्रयत्न केलक मुदा हमर समधीन ओ स्त्री रत्न छथि जे केकरो बात पर कान नय देलन्हि. ओ बी०ए० एम०ए० पास नहि छथि मुदा कतेको बी०ए० एम०ए० पास नारी हुनक व्यक्तित्वक समक्ष छोट अछि. एतबे नहि—समाजक एकटा व्यक्ति बजलाह जे मुजफ्फरपुरमे जमीन खरीदि दियौक. त' कमला जी तमसा गेल छलीह—नहि हमरा किछ नय चाही. हम मुजफ्फरपुरमे अपन मकानमे रहैत छी एक ईंच जमीन हमर बेटा सभक मध्य भविष्यमे विष वृक्षक सृजन कऽ सकैत छैक. हमरा बेटी चाही. ईश्वर हमरा बेटीसँ वंचित केने छथि—इ एकटा नारीक महानताक उत्कर्ष छल—

आ वएह समधीन कमलाजी यानि प्रकाशजीक माता सेहो पहुँचलीह हकासल पियासल विधिक मारिसँ दंडित हतवाक. मुजफ्फरपुरसँ डिब्रूगढ़—कोना ओ असगरे आयल हेतीह—इ सभ एकटा बाय छल जाहि पर सेमरक तुर जकाँ सभ उधिआय रहल छल—एकटा काल अजगर जेना सभक हृदयमे चकति मारि बैसि गेल छल. पार्वतीक कठोर तपस्या—सीताक सहिष्णुता आ सावित्रीक पतिक जीवन दान लेल हठधर्मिता सभसँ सूकूकेँ अभिसिक्त कय एतबे बजलीं—बेटा इ तोहर अग्नि परीक्षा थीक बड़ साहस आ' धैर्यक संग पतिक सेवा कर—आ कमलक सूकू - चेहरा पर कत्तौ वेदनाक भाव नहि—शांत स्मित आननक संग ओ लागि गेलीह अपन साधनामे आ आश्चर्य अछि जे सूकूक मात्र स्पर्श सँ मुर्च्छित प्रकाशक तनमे एकटा चेतना आयल जेना आत्मा परमात्माक मिलनक अद्भुत् संयोग होब

हम सभ आरोग्य भवनमे दुई कोठरीक एपार्टमेंटमे रहैत छलौं. अ[illegible] रंगशावला सभ मेडीकल कहैत छल. आब सभक मोन मानस हल्लुक छल[illegible]पतालकेँ

आरोग्य भवनसँ मेडीकल लेल साँझमे सभ केओ निकलैत छलौं त' [illegible] दिसि छल चाहक बगीचा तकर कात कात युक्लिपट्सक नमहर नमहर गा[illegible]काक दूर्र पट्सक सेहो अपन सुगंधि होइत अछि एकर प्रथम अनुभूति हमरा [illegible]. युक्लि-गार्डेनमे भेल—कतेक हल्लुक मादक अकथ्य, अनुभूतीय ओ स्वर्गिक सु[illegible]गढ़क टी मनहूस वृक्षकेँ हम सभ उपेक्षित केने छी - लोककेँ उपदेश दैत छी जे भा[illegible]ब. जाहि युक्लिप्टस जकाँ दीर्घ छायाविहीन, सुगंध विहीन नय हेबाक चा[illegible]च जीवन युक्लिप्ट्ससँ इ अलस तँद्रिल सुगंध-गंध ! [illegible]—ताहि

एगारह तारीखकेँ भिनसर जखन तूफानी हवा चलल त' दोसर दि[illegible] जाइत काल देखैत छी कतेक युक्लिप्ट्स धराशायी—भीतरसँ [illegible] मेडिकल कतेक गाछ झुकल-झुकल—सभटा गाछ वृद्ध भऽ गेल छल. पाकल [illegible] फोंक एकरामे सुरभि आयल. सद, युक्लिप्टसमे सेहो किछ न किछ गुण अछि [illegible]र तखन ओकरा उपेक्षित केने रहैत अछि. मानबो विचित्र होइत अछि. [illegible]। मानव गुणवानोकेँ नकारि दैत अछि आ गुणहीनकेँ सम्मानित कऽ दैत अछि. [illegible] कोनो चोट पहुँचेबाक मानवक प्रकृति नय प्रवृत्ति बनि गेल अछि. साहित्य होय[illegible] सेसराकेँ वा देश—परिवार सभ जगह इएह हाल— [illegible] समाज,

हम सभ आसाम मे छी कि बिहारमे बुझि नहि पड़ैत अछि. आ[illegible] मारवाड़ी समाज संस्थासँ निर्मित बड़ पैघ स्थापना अछि. एकर अप[illegible]य भवन सेहो अछि जाहिमे एक्सरेसँ ल' क' पैथोलोजी तकक व्यवस्था छल. बा[illegible] अस्पताल मरीज सभ लेल गेस्ट हाउसक रूपमे बनल छोट पैघ कोठरी सभ—आ[illegible]सँ आयल व्यवस्था. प्रत्येक कोठरी अलग अलग मारवाड़ी द्वारा निर्मित छल [illegible]क नीक ओकर नाम संगमरमरसँ अंकित अछि. हम सभ पन्द्रह नम्बर कमराके [illegible]हि ठाम कोठरीक ठीक सामने टेलीफोन एवं कार्यालय आ पुस्तकालय. सांझुक [illegible]रल छी. ओसारा पर राखि देल जाइत अछि आ चारू दिसिसँ सभ अपन अप[illegible] टी वी. बालकोनीसँ देखैत अछि आ नहि त' लग जा क' लागल कुरसी सभ पर [illegible] बरामदा, अछि. बाँया दिसि कैंटीन अछि जाहिमे छह रुपयामे एक प्लेट भोजन. [illegible]सि देखैत

भोरे भोर चाह पीवा लेल जाइत छी, कनि आगु बढ़ैत छी आ हो[illegible] मुँह कान देखि पूछैत छी—अहाँ बिहारी छी की ?—हँऽ सुनतहि [illegible] वालाक [illegible]भाविक

स्वरमे बजैत छी कत' घर छह हौ. मुजफ्फरपुर —सुनतहि हम चौंकि जायत छी समधीन हँसय लगलीह—याने इ दोकान हमर समधियाना भ' गेल. सरिपहुँ पचास पैसा कप बड़ नीक चाह पीऔलक.

भोजन लेल बगलक होटल जाइत छी —'होटल राजहंस'. मोनमे ज्वार उठैत अछि पुछि बैसैत छी—अहाँक घर कत' अछि— बिहार— होटल मालिकक नाम पुछलौं —तँ राजेन्द्र प्रसाद—ओकर सभ कर्मचारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मोतिहारीक छल—

सहरसासँ अठारह सय किलोमीटर दूर डिब्रूगढ़मे बिहारक लोकके देखि मोन अद्भुत उल्लाससँ भरि उठल. होटलक देबाल पर लिखल ई पंक्ति मोनकेँ हर्षित क' देलक—

If pleased tell other If not, please tell us.

यानी अहाँ एहि होटलसँ खुश छी तँ आन लग चर्च करु यदि नहि तँ कृपया हमरा कहु.

तीन रुपयामे एक थार भोजनक, भात दालि एकटा झोरगर तरकारी एकटा भुजिया देबो प्याज—अपनत्व मेला पर पापड़ सेहो. पवित्रता एवं आपकता जेना एहि होटलक विशेषता छल.

मेडीकल जेबाक रास्तामे बड़का जलान मंदिर राधाकृष्णक अछि. एक बगल आदि शक्ति—दोसर दिसि शिवलिंग. संगमरमरक बनल भव्य मंदिर शिल्पीकारक अद्भुत शिल्प. चारू दिसि बड़का मनोहारी उद्यान. कृत्रिम नहर आदि बनाय मंदिरक प्राकृतिकताके शाश्वत कयल गेल. राधाकृष्णक मंदिर उपरमे छल. नीचा बड़का हॉलमे सरस्वतीक भव्य प्रतिमा, दुनू दिसि गद्दादार कुरसीक पांती. विविध वाद्य यन्त्र राखल—जनसाधारण लेल वर्जित स्थान. देखतहि बुझि गेलौं जे इ सरस्वतीक मंदिर थीक जाहि ठाम नाना प्रकारक संगीतक कार्यक्रम होयत हएत. आदिशक्तिक मंदिर मे सहरसाक पुजारी—बड़का त्रिशूलक भीतर लालरंगक प्रतिमा क रूप रेखा मात्र—आगुमे रानी सतीक फ्रेम जड़ित फोटो. सुसंस्कृत, शालीन, भक्त पुरहित—

कत' घर छी पंडित जी—

सहरसा—

सहरसामे कतऽ

[illegible]सा लग गणेशपुर अछि. हम सुधाकर झा छी हमर पिता श्री राजेश्वर [illegible] गाममे रहैत छथि.……आ एतेक दूर पर एकटा प्रवासीक मुँहसँ सहरसा नाम सुनतहि हम सभ रोमांचित, स्पन्दित भ' गेलौं—मुख्य मंदिर राधाकृष्ण मे गोरख [illegible] मंदिर छल आ शिवजीक मंदिरमे छपराक.

रिक्शा पर बैसैत छी— कत' घर अछि अहाँ सभक—आब रिक्शावला हमरा [illegible] मैथिलीमे पुछैत अछि—हँसी लागि जाय'छ. केओ सहरसा सरडीहाक, केओ [illegible]पुरा भरौही चौक केओ मुजफ्फरपुर केओ दरभंगा—मधुबनी—तोरा सभ अपन [illegible] छोड़ि एतेक दूर किएक छह ! मोन लगैत अछि—पैव शहर छैक ने [illegible] लोक केँ तों सभ रिक्शा नय चलब' दैत छहक की—

एह, आसामीके दम कत' जे रिक्शा घीचत ? एकटा मधेपुराक रिक्शावला के पुछैत छी जे तों सभ कतेक लोक छह.

हम सभ खाली सहरसा मधेपुराक डेढ़ पौने दुइ सय लोक छी एहिठाम —

कतेक पैसा होइत छौक —

खा पीक' चालीस पचास टाका बचा लैत छी

[illegible] दोकान पर किछ कीनैत छी त' सभटा बिहारक—चाह पीवा लेल [illegible] कैंटीन जायत छी—[illegible] किछ होइछ. ओहिना अन्हारेमे तीर [illegible] छी—मैथिलीमे [illegible] पुछैत छी—

[illegible] आयल छी

[illegible] दरभंगा कमतौलसँ—१४-१५ बरसक छौंड़ा बाजल—कि १०-१२ वर्षक [illegible] छौंड़ा बाजल हमहु दरभंगासँ…

माय बाप सभ छौ आसाममे…

नहि देस पर छैक…

आ जेना कौतुक लागि गेल बिहारी सभक. जहिना अपना सभ मे डॉक्टर इंजीनियर विदेश जाक' पैसा कमबैत अछि तहिना तँ इ मजदूर वर्ग अछि जे पाइ कमबय लेल एक तरहक विदेश बसल अछि. जतेक शक्ति ओतेक भक्ति.

एहि मध्य सूकू आ प्रकाशके नव जीवन भेटि गेल छल—आब ओ कनि-कनि चल' लगलाह तखन हम सभ अपन कर्त्तव्यक इति बुझि ओहिठामसँ आबि गेनाय उचित बुझलहुँ. आब ओ घर समधियारी भय गेल.

आ राति भरि नीन्न नय आयल. जीवनक कटुमधु अनुभवक स्मृतिसँ लगैत छल जेना आँखि मे मरचाय चलि गेल होय. बिस्तर पर छटपटाइत रहलौं. रातिक तीन बाजैत छल. उठि के चुपचाप ओसारा पर ठाढ़ भय जायत रहलौं. रातिक तीन बाजैत छल. पीपरक पात टुटि-टुटि आरोग्य भवनक छत छी. मुसलाधार बरखा भय रहल छल. पीपरक पात टुटि-टुटि आरोग्य भवनक छत पर औंघड़ाय-औंघड़ाय छटपटा रहल छल ठीक हमर मोन जकाँ मर्करीक इजोत पसरल छल मुदा सघन अंधकार. कखनो कखनो बिजलीक चमकि पसरि जायत छल. चुपचाप बैसल रहलौं प्रकृतिसँ अपनाकेँ तादात्म्य करैत—समस्त प्राणी नींद मे डूबल छल मुदा प्रकृति कतेक चंचल. साओनी हवाक झोंकसँ उड़ैत प्रकृतिक आँचर, आ कनिके काल मे आसमानक चंपई तन पर सोन सन रौद चमकय लागल. लगैत छल जेना लहराय-लहराय प्रकृतिक चंचल प्रगल्भ आँचर हमरा बजा रहल हो. ओसकण सन बरखाक बुन्न, हीराक हार सन अरुणाभ ज्योतित···

दोसर दिन रिक्शा कय ब्रह्माक पुत्रक दर्शन कर' जाइत छी. ब्रह्मपुत्र नदीक तीर पर प्रकृतिक कोर मे बसल—डिब्रूगढ़ शहर जकर चारू दिसि ब्रह्मपुत्र नदी कोनो नायिकाक मेखला सन आसामक कटि मे लटपटायल छल. नदीक पार दूर क्षितिज पर नील पहाड़क छवि देखि पुछैत छी—ओ कोन स्थान थीक ?

अरुणाचल प्रदेश—

—सुनतहि चौंकि जाइत छी. अरुणाचल प्रदेश एतेक दूर-एतेक दूर—स्यात् सूर्यक प्रदीप्त रश्मिरेख अपन प्रथम अरुणाभा ओहि ठाम बिखेरैत होयत तँ-तँ अरूणाचल प्रदेश भ' गेल ओ. आगु मे पसरल ब्रह्मपुत्रक विपुल जल राशि, सुदूर क्षिति पर अरुणाचलक अरूणाभा जेना एकटा विराट सौंदर्यक दर्शन भ' रहल हो, जाहि मे प्राणक स्पन्दन, प्रकाशक रश्मि अरुणाभ अचंलसँ निःसृत भ' ब्रह्मपुत्रक नील जल धार पर काँपि रहल छल. एकटा मौन मूक सौंदर्यसँ दिव्य संगीतक अनुगूँज धरा आकासकेँ थरथरा रहल छल—जेना शेषनाग सन ब्रह्मपुत्र पर आकाशक क्षीर सागर मे विष्णु शयन करैत होथि कांतिमयी लक्ष्मीक संग.

ब्रह्मपुत्रक तीर पर खाली धोबि सभ कपड़ा पसारने' छल—आश्चर्य जे सभ बिहारक छल. दिनकरक अनेकता मे एकताक स्थान पर हमरा लागल जे लोग बिहारी पर हँसैत अछि मुदा, हिन्दुस्तानक प्रत्येक प्रदेश मे कतौ न कतौ छोट मोट बिहार बसल अछि आ ओहि ठामक लोक ओकरा पर आश्रित अछि—एकर लेखा जोखा के करत ! समस्त देश नहि समस्त विश्व एक मौंस तान तारमे बन्हल अछि एकरा बुझय बला के···भिन्नता मे अभिन्नता···

आ घुरती काल आसामक प्राकृतिक सुषमाक रसास्वादन करैत रहलौं—कतौ कतौ धरतीक छातीसँ धधरा निकलैत देखैत छलौं—यात्री गण कहलन्हि एहिठाम प्राकृतिक गैसक भंडार अछि—उपयोग एकर पूर्णतया एखन धरि नइ भ' सकल. तँ की धरतीक अन्तर नहि तपैत अछि ? की ओकरा चोट नइ लगैत छैक ? ओ की बात नहि होइत अछि···कोबुला छल घुरती कामख्या जा क' दर्शन करब. मोने-मोन कल्पना मे भगवतीकेँ अशेष प्रणाम करय लगलहुँ.

तन्त्र साधनाक दृष्टिसँ बंगाल आ आसामकेँ शक्ति उपासना लेल प्रमुख केन्द्र मानल जाइत अछि. पूर्वी भारतक सर्वाधिक महत्वपूर्ण—शक्तिपीठ मानल जाएत अछि आसामक कामरूप कामख्या. बाल्यकालेसँ सुनैत छलौं जे कामरूपमे बाला सभ पुरुषकेँ भेँड़ बकरी बनाय राखि लैत अछि—मोनमे उत्कंठा छल आ ध्यानाकर्षण अतीव गहीर. गौहाटी नगरक पश्छिम हिस्सामे नील-गिरि पर्वत पर माता कामख्याक मंदिर. एहि मंदिरमे एकटा गुह्याकार कुंड केँ शिवप्रिया सतीक गुप्त अंग मानि ओकर पूजा कयल जायत अछि. एकटा बंगाली पंडित हमरा सभकेँ माताक पूजन करबैत अछि—मुदा—महादेवीक उक्ति क्या पूजा क्या अर्चन रे—उस असीम का सुन्दर मन्दिर मेरा लघुतम जीवन रे···

ओहि पवित्र स्थलक कण कणसँ शक्तिक उर्जा निःसृत भ' हमर सभकेँ रोम रोम कंपित क' रहल छल. समस्त परिवेशक हमरा सभसँ तादात्मय भ' गेल. एकाकार भ' गेलौं माताक मंदिरमे जाहि ठाम नहि केओ सगुण साकार छल नहि निर्गुण निराकार– बस आत्मा परमात्मा—शक्ति आ शिवक एकात्म्य. अनिर्वचनीय अनतुभूत क्षण—आँखिसँ अविरल अश्रुधार जाय रहल छल—

सिरकेँ सिंदूर माँ हे हमतँ अहींके सौंपने छी
गोदीकेँ संतान माँ हे हमतँ अहींके सौंपने छी
हमतँ अबला दुखिया छी—

वारिद तरंग (१९९४)

साहित्य 'सत्यं शिवं सुन्दरम्'क अभिव्यक्ति थीक. मात्र सत्यक प्रतिष्ठासँ साहित्यकारक कार्यपूर्ण नहि होइत छैक. सत्यमे सुन्दरताकेँ समावेश होय तँ कलाक रूप छिटकि जायत अछि. आ दूनूक योगसँ सत्यक मंगल रूप मानव जीवनकेँ शुभ बनाय दैत छैक आ तखन ओ स्वयं आनन्द रूप भ' जाइत अछि. एहि तरहेँ साहित्यमे सत्यं शिवम् सुन्दरम्क अजस्र धार प्रवाहित होइत रहैत अछि.

साहित्य कोनो भाषाक होय—मैथिली मणिपुरी डोगरी आदि—ओहिमे स्थायित्वक बड़ पैघ महत्त्व होइत छैक. कोनो युग आबय मुदा प्रेम ममता मोह वात्सल्य घृणा, क्रोध आदि भावना चिरंतन होइत अछि, शाश्वत होइत अछि. साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि. आब साहित्य संस्कारक दर्पण भ' गेल. समाज रहल कतए ? जत' एकात्मकता रहैत छल, एक दोसरा संग मिलि सुख दुख बँटैत छल ओ समाज होइत छल. मुदा आब ? सभ अपना-अपना लेल. समाज टुटि रहल अछि, परिवार टुटि रहल अछ. पति पत्नी संतान—परिवारक अवधारणा भ' गेल. एकटा समय एहनो अबैत अछि जखन माय-बाप देखैत अछि जे हम सभ एकदम असगर छी. बाल बच्चा सभ अपन अपन परिवारमे लागि गेल. तखन हमर परिवार कोन—हम केकर—आ दुदिन तखन अबैत अछि जब माय बापमे भ' एकटा चलि जायत छथि ? आ फेर बचल एकटाक किस्मत—ओ एहि कलमसँ व्यक्त हेबामे पूर्णतः अक्षम अछि. एकटा माय बाप सात बाल बच्चाके पालि पोसि आदमी बनबैत अछि मुदा सातो बाल बच्चा मिलि एकटा माय बापकेँ नइ राखि सकैत छथि—की एकरा परिवारक संज्ञा देल जाय सकैत अछि ? की साहित्यक कोनो दायित्व नहि एहि दर्द लेल—की सोचि रहल छी—इ हमर हाथकेँ झटकारैत बजलाह—हमर तंद्रा टूटल कि ट्रेनो रुकि गेल—

मद्रास जम्मूमे बैसल छी दूनू गोटे.—सोचैत छी, लेखक, कलाकार उदार वैश्विक दृष्टिकोण रखैत छथि. समस्त मानवताकेँ एकटा परिवारक रूपमे देखैत छथि. समस्त पृथ्वी कुटुम्ब अछि. लेखक कलाकार यदि राजनैतिक प्रभावसँ मुक्त रहैथ तँ भारते नहि अपितु समस्त विश्वमे एकटा जबर्दस्त नैतिक शक्तिक निर्माण क' सकैत छथि जकर अनुपम प्रभाव राजनीतियो पर पड़ि सकैत अछि. विश्व शान्तिक स्वप्न साकार होयत. कलाकारक हृदयमे चैतन्यक जे स्फुलिंग जरैत अछि ओ

[illegible] विराट् चैतन्य-ज्योति अछि ओकर अंशमात्र थीक. एहि लेल ओ [illegible] अनिवार्य अंग थीक.

[illegible] सोचैत छी—सभ सोचय तखन ते—बसाजी बजलाह—राँचीमे [illegible] मैथिली सम्मेलन भेल छल. डॉ॰ धनाकर ठाकुरक हृदयमे जे स्फुलिंग [illegible] भ' रहल छलसे के गोजर दैत छैक—

मुदा डॉ॰ जयकांत मिश्र, बाबू साहब चोधरी जी सभ सन मूर्धन्य साहित्यकार [illegible] नै ओहि सम्मेलनमे आयल रहैथ—ठीक छैक आयल सभ रहैथ—[illegible] सेहो अपना आपमे उत्कृष्ट छल—मुदा किछ रिक्तताक आभास सेहो होइत छल. अभाव अछि एकटा एहेन मंचक—मैथिलीमे, जाहिमे नव पुरान जाति पातिसँ बाहर सभ लेखककेँ समायोजन भ' सकय. मैथिली बखारी मे बंद नहि रहि छिरिया जाइ, खेतमे लहलहा जाय, प्रकृतिक कण कण मैथिली मय भ' जाय—आवश्यकता अछि एहेन मंचक ……—मुदा की संभव छैक ?—समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिकाक संपादक गिरिधर राठीसँ भेंट भेल छल साहित्य अकादमीक कार्यालय दिल्लीमे. हँसमुख मिलनसार व्यक्तित्व—अपन रचना स्वयं अनुवाद क' पठावैक लेल ओ आग्रह कयलनि.

मुदा, महामायाक माया. हम अपन रचना अनुवाद क' पठेलौं—सधन्यवाद वापस भ' गेल. देवशंकर नवीन जी हमर ओहि कविताक अनुवाद केलन्हि ओ प्रकाशित भ' गेल. हँसी लागल—आइयो हँसि रहल छी. नव कवि लेखक पुछैत छथि—हम कोना प्रकाशित होय—हम स्वयं उत्तर नहि जनैत छी जे कोन मापदंड अछि जकरा आधार पर केओ प्रकाशित होइत अछि. हम तँ ओहि समय प्रकाशित भेल रही ६१ ई॰ मे जखन रचनाक मान सम्मान छल. हम मिहिर आ वैदेहीक आभारी छी जे हम अपन समयमे छपि गेल रही. सुधांशु शेखर चौधरी जी हमरा मिहिर कार्यालयमे अपार आशीर्वाद उत्साह दैत छलाह—जाहि बल पर हम आय एहि स्थान पर छी. डॉ॰ कृष्णकांत मिश्र'वैदेहीक' माध्यमे अजस्र आशीष धार देलन्हि—

हम बाल्यकाले सँ हिन्दीमे लिखैत रही आ बालक चंदामामामे प्रकाशित होइत रही. प्रसिद्ध लेखक दिनेश्वर लाल आनंदक आशीर्वाद भेटैत छल जिनका हम देखनो नहि छलौं, कालांतर मे हमर ननदोसि भ' गेलाह. १५ बरीसक आयुमे विवाह भ' गेल. पति महोदयक आग्रह भेल मैथिलीमे लिखि. हम अकचका गेल छलौं. मैथिली तँ हम कहियो पढ़ने नहि छी. हमर पापा स्व॰ ब्रजेश्वर मल्लिक डिप्टी

कलक्टर छलाह अंग्रेजक शासन कालसँ स्वराज्य धरि. मुदा ओ अपन घरमे सभ दिन मैथिली बाजलन्हि जाहिसँ— बाल बच्चा अपन मातृभाषा नहि बिसरि जायथ. आ तैं मैथिली बीजस्वरूप मानसमे पड़ल छल.

वर्माजीक आग्रह. ज्ञात भेल जे हुनका दोस्त रामदेव झा जीक सलाह छल जे हम मैथिलीमे लिखि. हमरा हिन्दीमे भावना अबैत छल—मैथिलीमे नहि— बड़ असमंजसमे रहैत छलौं—मुदा आस्ते आस्ते हमरा स्व० हरिमोहन झा जी, सुरेन्द्र झा सुमनजी अमरजी, मिहिरजी मणिपद्मजी, मायानन्द जी सभक एतेक स्नेह उत्साह आशीर्वाद भेटल कि हम सरपट भागय लागलौं मैथिलीक रचना संसारमे.

मोन पड़ि जायत अछि एकटा सरस्वती पूजाक दिन प्रो० डॉ० मनोरंजन झा जी आयल रहैथ भेंट करवा लेल.— आव सरस्वती पूजाक दिन अछि. हम प्रतिमाक दर्शन कय अहाँक दर्शन कर' आयल छी—साक्षात् सरस्वती केर.

अकचका गेल छलौं– मोनक तार झनझना गेल छल खुशीसँ नहि वरन् भयसँ माँ सरस्वती सुनतीह तँ की बुझतीह? डॉ० नवीन चन्द्र मिश्रा जी मैथिली विभागक अध्यक्ष भ' सहरसा आयल रहैथ. ओ डेरा पर हमरा सभसँ भेंट करय अयलाह. गपक क्रममे ओ अभिभूत भ' बजलाह—हमरा दरभंगासँ सहरसा एबाक एकोरत्ती मोन नहि छल. मुदा सोचलौं जे ओहि ठाम दुइटा भगवतीक दर्शन भ' जायत—भगवती उग्रतारा आ भगवती शेफालिका ·······हमही नहि ओहि ठाम बैसल वर्मा जीक अतिरिक्त आर तीन चारि गोटे— सभ आश्चर्य चकित भ' गेलाह. हम तँ सर्वथा लज्जासँ धरतीमे गड़ल जाइत रही—हम स्वयं अपनाकेँ कतेक तुच्छ बुझैत छी मुदा ई मान सम्मान मनोरंजनजीक, नवीनजीक हृदयक विशालता रहैक. ओ समय छल जखन साहित्यमे राजनीति नहि छल. सहरसाक कण-कणमे साहित्यक रंग भरल छल. प्रत्येक हफ्ता साहित्यिक कार्यक्रम होइत छल. एकटा आयोजन स्व० भवेश मिश्र जी करैत छलाह तँ तुरत दोसर जयानन्द झा जी. हम सभ दुनू समारोहके जान रहैत छलौं. एहि सभ आयोजनक सूत्रधार छलाह साहित्यमय मंत्रेश्वर झा जी जे तखन सहरसामे मार्जे ऑफिसर छलाह. ओ जा सहरसामे रहलैथ समस्त साहित्यकार केँ एकटा नव जीवन नव दिशा, नव आशा-उषा दय सहरसाक धरतीकेँ कृतार्थ केलन्हि. इ छल रस सिंचित सहरसा—

विद्यापति जयन्तीमे एकबेर आरसी प्रसाद सिंह जी आयल छलाह. हम गुलाबी दुआमे मौन मूक मंच पर बैसल छलौं. डॉ० जयकान्त मिश्रजी, मणिपद्मजी, अमरजी

मोन जी जीवकांतजी आदि मैथिलीक मूर्धन्य कवि लोकनि छलाह, असगर कवयित्री हम. कनिक काल मे आरसी जी हमरा बजौलन्हि –'अहाँ शेफालिका छी की'.

हम हुनका चरण रज लेलहुँ.

अहाँके देखतहि हम बुझि गेलौं जे अहाँ शेफालिके भ' सकैत छी. अहाँक रचना सभ तँ हम पढ़ैत छी······आ हमर दुनू हाथमे जेना खुशीक ताजमहल आबि गेल छल —अहाँ शेफालिके भ' सकैत छी. आ हमर मोने आरसी जीक कविताक पाती नाचि गेल जाहि पर हमर नामकरण भेल छल—मधुकरि! एहि विश्व विपिनक हम सरल शेफालिका छी खसि पड़ल आकाससँ जे विकच तारकमालिका छी— ओहि समय सहरसा साहित्यिकताक उत्कर्ष पर छल. मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकार प्रबोध नारायण सिंह जीक भव्य व्यक्तित्व जेना सहरसाक गौरव गरिमाकेँ बढ़ा देने होय. हुनक समस्त परिवार मैथिलीक लेल समर्पित अछि. अणिमाजी, नचिकेता जी, इलाजी—एकटा साहित्यिक परिवार—निष्पक्ष, आदर्श—आ गुण ग्राहक—चीनीया बदाम खायब—वर्माजीक स्वर सहरसासँ खीचि दुमका आनि देलक.

टाइम पास, टाइम पास चीनीया बदाम बला चिचिया रहल छल. टाइम पास कतेक नीक पर्याय बनि गेल अछ—.

देखुने, सहरसा मोन पड़ि आयल, मायानन्द जी, महेन्द्र जी, धीरजी, मनोरंजन जी, कुमार कमान, 'वियोगी', अंबिका मिश्रा जेना सभ केओ स्मृति पटलकेँ सजल बना देलथि. मोन कियाक फेर बएह स्नेह, प्रेमक बरखामे तीति भीजी—हमर अन्तर स्वर सुनि इ बजलाह—

नाड़ी आगु भजैत अछि अहाँ पाछु सोचैत छी. आगु देखु, नव नव परिवेश, नव लोक नव भाषा नव हँसी—

वर्माजीक बात पर हमरो हँसि लागि गेल. दुमकामे भाँति भाँतिक गप भ' रहल छल. जीजा साली दुनू खिलखिल कय सिंगरहार बरखा रहल छल. हम डोंगरीक विषयमे पुछैत छी तँ आर खिल खिल कर' लगैत अछि-डोंगरी तँ आब खाली गाममे घरमे बाजल जायछ. जे पिछड़ल अछि वएह बजैत छथि बाकी सभ हिन्दी बजैत छथि.

मोनमे एतेक अनादर किएक ? हिन्दी राष्ट्र
सोचैत छी मातृभाषा लेल लोकक केकरो ने केकरो मातृभाषा थीक.
भाषा अछि. मुदा, जतेक लोक भाषा छैक ओ सभ लोक अंग्रेजी,
नहि जानबाक अनुभूति सभमे स्यात् एकटा गौरव आनि दैत छैक मुदा, अपन मातृ
रसियन, चायनीज, फ्रेंच आदि जानबा लेल अनघोल केने अछि एक दिन
भाषाक नाम पर संकोच ? इ स्थिति बड़ भयावह अछि. के जनैत अछि समाज
एहनो आबि सकैत अछि जखन देशक भावी कर्णधार अपन देश की, अपन मातृ भाषाकें
परिवार आ माता पिता धरिकें बिसरि जायत. संगे एक बात छैक, आदर
कहियो राष्ट्रभाषासँ बैर-भाव नहि राखबाक चाही. देशक प्रति सम्मान, हिन्दीसँ कोनो
नेनाक हृदयमे भरनाय माता-पिताक पुनीत कर्त्तव्य छैक. राष्ट्रभाषा सागरमे
भाषाकें क्षति नहि होयत अछि. जहिना हिमालय सँ निकलल प्रत्येक नदी मंगलकारण
समाहित भ' जाइछ, ओहिना देशक प्रत्येक मातृभाषा, लोक-भाषाक लक्ष्य हमर सभक
होइछ जे राष्ट्र भाषा हिन्दीकें विपुल अलंकरणसँ अलंकृत करैत अछि. कोनो एक नक्षत्रसँ
दिशा गलत अछि. कोनो एकटा फूलसँ उद्यान नहि बनैत अछि, होयत अछि.—
आकाश नहि भरैत अछि. कोनो एकटा भाषासँ देश नहि समृद्ध

ओहि ट्रेनमे गप चलैत छल डोगरीक आ हमर मोन दोसर ट्रेनमे सवार भ'
गेल—जखन हम श्रमजीवी एक्सप्रेससँ पटनासँ चलल छलौं. विदा करबा लेल स्टेशन
पर राजमोहनजी, अग्निपुष्प आदि कतेको साहित्यकार आयल छलाह. व्यासजी, देव-
कातजी, मोहन भारद्वाजजी, सुभाषजीक संग इ साहित्यिक यात्रा दिल्लीक छल हमर.
श्रम करैत-करैत श्रमजीवी एकदम पस्त भ' बड़ लेट खुलल, ताहि पर अमियजी अपन
पत्नीक संग हकासल पिआसल खुजैत ट्रेनकें पकड़लन्हि. साहित्यकार सभक संग
एकटा प्रकाशक जा रहल छलाह. मनोविनोदपूर्ण यात्रा छल ओ. चूँकि हम
असगर छलौं तँ सभ हमरे खियाल रखैत छलाह. भारद्वाजजीक नेतृत्वमे
मीनी मीटींग यानी मीटींगक रिहर्सल ट्रेनहुमे चलि रहल छल. अमियजीक
पत्नीक आतिथ्य सत्कार मिथिलाक संस्कृतिसँ भरल छल. रेलगाड़ी घरगाड़ी बनि
गेल. मोनक हिलकोरक संगे ट्रेनक हिलकोरक अद्भुत साम्य छल. खास कय व्यास
जीक संत सुभाउ आ पूजा पाठ समस्त वातावरणकें पवित्र बनाय देने छल. ओहि
मीटींगमे दरभंगासँ सुरेश्वर जी रामदेव जी आ हंसराज जी, बेगुसरायसँ हाशमीजी
हैदराबादसँ नचिकेता जी पहुँचल छलाह. साहित्य अकादमीक सचिव इन्द्रनाथ
चौधरी जी अपन प्रभावशाली व्यक्तित्व आ मोहक मुस्कानक संग बजलाह—आप
लोग अपनी भाषा मैथिली में ही मीटींग करें—बड़ नीक लागल छल.

देवकांत जी हमर सभ बातक समर्थन करैत छलाह. जखन ओ मैथिली अकादेमीक निदेशक छलाह तँ सभसँ पहिने हमर कथा संग्रह 'एकटा आकाश'क प्रकाशन मोनसँ केलन्हि, ओ स्वीकृत पांडुलिपि चारि-पाँच बरिससँ अकादेमीमे पड़ल छल. रमेश भसीनजी अपन कार्य शैलीसँ सभक मोन मुग्ध क' देने छलाह. मीटींग चलैत रहल. अन्तरमे विरोध रहितहु एक मत' एक रसक भाव प्रवाहमे सभ बहैत रहलौं. इन्द्रनाथ चौधरीजी आ रमेश भसीनजी मैथिली परिवारक एकटा सदस्य लगैत छलाह, सहज, सरल, निर्विकार, निरहंकार.

'यात्रा अनुदानक' प्रसंगमे इन्द्रनाथ जी बजलाह—जे वृद्ध नहि होथि, आ यात्रा क' सकैथ वएह अनुदान लेल सक्षम छथि. हम अपन नाम बजलौं—चौधरी जी चौंकि हमरा देख' लगलाह—एकटा महिला घर परिवारसँ बन्हल ओ कोना यात्रा क' सकतीह ?

मुदा, हमर यायावरी तन आ मोनक व्यथा कथा के बुझत—जे सदिकाल यात्रे मे रहैछ. सभकेओ सहमति द' देलन्हि. हम अपरूप रूप संधानमे डुबि गेलौं खुशीसँ. यात्रा तँ तखनहि आरम्भ भ' गेल कल्पनामे.

मुदा, जाय रहल छी जाय ओहि अनुदानक आगाँ हम जम्मू. जम्मू विश्व विद्यालयक डोगरी अध्ययन विभागमे रीडर छथि हमर छोट बहिनोइ डॉ० वैद्यनाथ [illegible]. हमर सबसँ छोट बहीन नीहारिका [illegible] एम० ए० क' ओहिठाम रिसर्च क' रहल छलीह. अपन आगमनक खबर हुनका लोकनि कें द' देने छी. ओना तँ यात्रा अनुदानक राशि एतेक नहि होइत अछि जे दुई गोटे यात्रा क' सकैथ मुदा हम [illegible] जीक बिन कतौ जेबाक कल्पनो नहि करैत छी. कतबो व्यस्त रहैथ—कतबो हर्जाना होय हम अपना संग ल' जाइत छी—हिनकर बिन हमर कोनो अस्तित्व छैक—इ अकल्पनीय अछि.

पटना सँ दूर दिल्ली, दिल्लीसँ दूर जम्मू. दिल्लीसँ कोनो ट्रेनमे आरक्षण नहि भेटबाक कारण एहि मद्रास जम्मूमे आरक्षण भेटल. १२:३० बजे रातिमे खुजल अछि. दोसर दिन ३ बजे दिनमे जम्मू पहुँचत.

ट्रेनमे श्रीनगर मेडीकल कॉलेजक प्रोफेसर डॉ० आरिफ गुल सेहो यात्रा कय रहल छथि. हमर उद्देश्य जानि ओ बजैत छथि बड़ विवश भ' क' जकरा गेनाइए

अछि वएह एहि ट्रेन सँ जाइत छथि. आ सत्ये, हमरा जेनाथ आवश्यक छल. हमरासँ बेसी विवश आ लाचार के भ' सकैत अछि ?

डॉ० गुल कहलन्हि—वास्तवमे जम्मूमे डोगरीएटा एकटा भाषा नहि अछि. अपितु, कश्मीरी, गुर्जरी, बदराबसा आदि कतेको भाषा छैक.

हम 'गुर्जरी' पर चौंकि जायत छी—इ तँ राजस्थानमे छैक एतय कत' ?

—ओ बजलाह—इ एकटा जाति गुर्जरक होयत अछि जे राजस्थानी आदि भाषाक मिक्सचर गुर्जरी बजैत छथि.

आ फेर सभ यात्रीगण ट्रेन पर डॉ० करण सिंहक बड़ाय कर' लगलाह. हुनकै कारण आय डोगरीक एतेक विकास भेल अछि. डोगरीक अपन लिपि टाकरी छल जे चलल नहि. आब देवनागरीमे लिखल जायत अछि. कर्ण सिंहजीक मातृभाषा सेहो डोगरी थीक.……एहि सभक गप्प तरंग जीज्जा सालीक हँसी मजाकक मध्य हम थाकल ठेहिआयल जम्मू पहुँचि गेलौं.

स्टेशन पर वैद्यनाथजी नीहारिका आ अंशुक संग ठाढ़ छलाह. ओतसँ ऑटो रिक्सा पर हम सभ विदा भेलौं.

पहाड़ केँ काटि छाँटि बनाओल सुन्दर सन पर्वतीय शहर—जम्मू ! सौंसे शहर ऊँच नीच गाछ बीरीछसँ भरल. लगैत छल जेना जंगलक मध्य, तवी नदीसँ निःसृत सहस्रदल कमल अपन समस्त पंखुरिक संग विहँसि रहल होय. जम्मू विश्व विद्यालयक मनमोहक लालित्यपूर्ण एवं एके रंगक भवन देखि मंत्रमुग्ध भ' गेलौं. ओहि ठामक कारीगरीक अनुपम नमूना छल अभिनव थियेटर जकर बगलमे डॉ० लाभ जीक बासा छल. वर्माजीक मोन मयूर तँ प्रकृतिक एहि हरिताभ सम्पदाकेँ देखि नृत्य कर' लागल. जम्मूक एहि प्राकृतिकताकेँ देखबाक उग्र लालसासँ ओ हाईकोर्टक अपन सभटा केस जूनीयर सभक जिम्मा लगाय संग लागि गेल छलाह. अपना संग हुनका ल' जेबा लेल इ प्रलोभन सभसँ उत्तम छल.

ओहि दिन जम्मूमे सुरज नहि उगल छल स्यात् हम उगयवला छलौं एहि तलासमे ! जम्मूक जवानी जेना बताहि भ' गेल छल. दिग्भ्रान्त झंझाक वेग, सर्द हवाक झोंक, कखनो कखनो बरखाक रिम-झिम फूही, मेघाच्छन्न आकासक छाहरि धरती पर पड़ि रहल छल—सभ किछ नुकायल—नुकायल सन.

आ ओहि दिन नीहारिकाक बनाओल गरम-गरम कॉफी—अंशुक मीठ मीठ गप आ लाभ जीक प्रेमिलसँभाषणक संग हम सभ अपनाकेँ बन्द कोठरीमे सिमटल क' लेलौं.

—डुग्गरक इतिहासमे जम्मू राज्य बड़ महत्वपूर्ण छल जखन कि एहि राज्यक शासक राजा मालदेव अपन प्रतिद्वन्द्वी केँ पराजित केलन्हि. एहि वंशक राजा रणजीत देव प्रदेशक समस्त राज्यकेँ अपन अधीन कय एकटा सुदृढ़ राज्यक स्थापना केलन्हि. मुदा रणजीत देवक उत्तराधिकारी अयोग्य बुझना गेल' पंजाब नरेश रणजीत सिंह डुग्गर केँ अपन राज्यमे मिलाय लेलैन्हि. डोगरीक वीरगण खालसा राज्यक विरुद्ध एकटा छापामार युद्ध आरम्भ के' देलन्हि. अंततः विवश भ' डुग्गर प्रदेश विश्वासपात्र डोगरा सेनानायक गुलाब सिंहकेँ सौंपि देल गेल. ओ अल्पकालहिमे डुग्गरक छोट छोट राज्यक विलय कय जम्मूकेँ सुदृढ़ बनौलक……डॉ० सत्यपाल श्रीवत्स अनवरत रूपे हमरा लोकनि केँ जम्मूक इतिहास बताय रहल छलाह—मुख्यतः डुग्गर सभक जीवन दुइ भागमे विभक्त अछि. शहरक जीवन आ गामक जीवन, डुग्गर संस्कृतिक झलक मुख्यतः गामे मे बाँचल अछि. प्राचीन कालेसँ डुग्गरक धरती भारतीय संस्कृति केँ पल्लवित पुष्पित करबा लेल उर्वरा बनल रहलीह.

संस्कृत, हिन्दी, डोगरीक प्रख्यात विद्वान डॉ० वत्स ओत' बैसि हम सभ गप क' रहल छलौं. हुनका अनुसार डोगरी साहित्यकेँ इजोतमे आनबाक श्रेय राणा रणधीर सिंहकेँ अछि. वएह डोगरीक विद्या बिलास प्रेस खोललन्हि जतएसँ हिन्दी संस्कृत डोगरीक पोथी सभ प्रकाशित होइत छल'—धारा प्रवाह सत्यपाल जी बजैत रहलाह जेना डुग्गर संस्कारक ओ साकार-रूप होथि. हुनक पत्नी कॉफी बनाय केँ अनलन्हि' स्नेह आ आदरसँ बनाओल ओहि कॉफीक मिठासमे संस्कृतिक मधुरिमा सेहो मिलायल छल. बड़ प्रेम भावसँ ओ भोजन करबाक आग्रह सेहो कयलन्हि. डोगरी भोजन—दालि भात अंबल—

वत्सजी डोगरीमे कोन-कोन विधामे लिखल जाय रहल अछि—हम ओहिठामक साहित्यिक स्थिति जानबा लेल पुछलौं—

—डोगरीमे सभ विधामे लिखल गेल अछि. वेदपाल दीपजी केँ गजलक सम्राट कहल जाइत अछि. हुनक 'असते वनजारा' मे गजलक मौलिकता अछि. एना प्रतीत होईत अछि जेना इ गजल सभ डोगरीएटामे लिखल जाय सकैत अछि.

की एहनो होइछ जे लोग अपनामे डोगरीमे गप करबामे संकोच करैत होथि-हिन्दी अंग्रेजी कें अपन शान बुझैत होथि—हमर एहि प्रश्न पर वत्सजी किछ ठमकि गेलैथ—देखु, मातृभाषा तँ माताक दूधक संगे व्यक्तिक अन्तग्मे उतरि जायत अछि. जाहि आदमी के अपन अतीतक ज्ञान नहि ओ ठेंठ भ' जायत अछि—डॉ० लाभ, नीहारिका, अंशु सभ किओ गप सुनि रहल छलैथ—जलखै चलि रहल छल—जम्मू विश्वविद्यालय डोगरी विभागक प्राध्यापिका डॉ० बीणागुप्ता बजने छलीह डोगरीमे नीक स्तरक साहित्य अछि. एहि भाषामे गजलक पकड़ उत्तम अछि. कलाक पक्ष समृद्ध आ भावपक्ष प्रौढ़ अछि.—बीणाजी, एत' महिला साहित्यकार लोकनिक गिनती आ स्थिति की छैक—हम अपन सहज उत्सुकता सँ पुछि रहल छलौं. हम सभ बौद्ध अध्ययन विभागमे डॉ० लाभक चैम्बरमे बैसल गप क' रहल छलौं.

चाहक एकटा चुस्की लैत बीणा जी मोहक मुस्कानक संग बजलीह—करीब-करीब तीस लेखकक मध्य लेखिकाक संख्या बेसी अछि आ सभ विधा मे लिखैत छथि. एखन हम सभ ९१ सँ ९३ धरि महिला साहित्यकारक प्रत्येक बरस सम्मेलन कयलौं. की पुरुष सेहो भाग लैत छलाह ? हँ,' किएक नहि—बीणाजी अकचकाकें बजलीह—बड़ पैघ संख्या मे ओ अबैत छलाह आ हमर सभक प्रोग्रामकें सुनैत छलाह, गुनैत छलाह.

सरिपहुँ, डोगरी साहित्यक इतिहास मे लेखिका सभकें सम्मानित स्थान भेटल छैक. आन कतेको भाषा मे महिला साहित्यकारक संग वैमात्रिक व्यवहार इतिहास मे कयल जायत अछि. मुदा, डोगरीक बाते उनटल छल.

डॉ० बीणा गुप्ता जम्मू निवासिनी छलीह. प्राध्यापिकाक संगे डोगरी संस्थाक सचिव सेहो छलीह.

डोगरी विभागाध्यक्ष डॉ० चंपा शर्मा एखन धरि नहि आयल छलीह. हुनका खोजैत नीहारिकाक संग डोगरी विभाग गेलौं. भेंटि गेलीह डॉ० अर्चना केसर—फूलसन कोमल. केसर सन मुस्की संग हमर स्वागत केलीह. कक्षा भंग कय गप कर' लगलीह. हुनका अनुसार—आयुक हिसाब सँ डोगरी साहित्य बेसी समृद्ध अछि.

—तखन संविधान मे स्थान किएक नहि भेटल—हमर प्रश्न पर एकटा तेवर चेहरा पर आबि गेल, एकटा हाहाकार डॉ० केसरक अन्तर मे मचि गेल—जम्मू कें एहेन लीडर नहि भेटल जकरा भाषासँ प्यार होय—दुःख आ आवेशसँ केसर जीक चेहरा चमक' लागल. जाधरि कोनो एम० पी०, कवीना मंत्री नहि ध्यान देत ताधरि भाषाक लेल के की करत ?

केसर जी. डोगरीक पुरान रीति रेवाज की आजुक संदर्भ मे जीवित अछि ?

एहिठाम बेसी राजपूत छथि. साँच बाजी तँ संस्कृति हुनके लग सुरक्षित अछि. रीति-रेवाज, मूल्य सभटा हुनके धरोहरि अछि बाकी तँ टी वी सिनेमाक प्रवाह मे बहल भसिआय गेल.

ताधरि एकटा गरिमामय व्यक्तित्व केवाड़क दोगसँ हुलकी मारलक. केसरजी उठिकें ठाढ़ भ' गेलीह—इ पटनासँ आयल छथि—

सुनतहि-भीतर आबि चम्पाजी बजलीह—हँ हँ-हिनका लेल हम जनैत छी. मुस्काइत अपन चेम्बर मे जयबाक आमंत्रण दय ओ चलि गेलीह. आ हम वैद्यनाथ जीक आभारी भ' गेलौं. हमर एबाक प्रयोजन, साहित्य अकादेमीक उद्देश्य आदिसँ सभकें अवगत करा देने रहैथ. जत' जायत छलौं सभ बजैत छल—हँ हँऽ हमरा बुझल अछि—

डोगरीक विभागाध्यक्ष डॉ० चंपा शर्मा बजलीह—शेफालिकाजी. नारी अपन व्यक्तित्वसँ सभ किछ प्राप्त करैत अछि. ओना तँ नारीक स्थिति सभ ठाम एके सन अछि. चाहे कोनो भाषा होय वाकि समाज. जकरा प्रास दम्म-खम्म छैक सएह निरन्तरौं बचि सकैत अछि. बेगवती नदीक प्रवाह के रोकि सकैत अछि ?—आ फेर ओ अपन कथा कह' लगलीह—हम स्वयं तीन बहीन छी. सभसँ पैघ हम छी. हमर शिक्षा-दीक्षा हमर दुनू बहीनक तुलना मे साधारण ढंगसँ भेल. हमरासँ नीक सुविधा हुनका लोकनिकें भेटलैक. मुदा, आय हम ही किएक एहि स्थान पर छी ? एहि लेल महिलाक अपन व्यक्तित्व, अपन आत्मविश्वास—सएह सभ किछ थीक. डोगरा मे बेटीकें महत्व नहि देल जाइत अछि. कुंडली बनैत अछि तँ बेटाक. इ तँ पूर्वजन्मक संस्कार छैक जे लड़की आगु बढ़ि जायत अछि.—सरिपहुँ, चम्पा जीक आत्म विश्वास देखि हमरा बड़ किछ अपन जीवन मोन पड़' लागल—किछ एहुने तँ—स्यात् एहियोसँ बेसी.

जम्मू विश्व विद्यालयक प्रांगण मे निर्मित भवन सभटा एक समान छल. सौंसे शहर पहाड़कें काटि बनाओल गेल छल. पर्वतीय क्षेत्र मे हम दार्जिलिंग हरिद्वार ऋषिकेश आ वराहक्षेत्र टा घुमल छी. मुदा जे जम्मू मे छल ओ अन्यत्र कतहु नहि भेटल. पहाड़कें काटि-छाँटि सिनेमा हाल बनाओल गेल छल तँ कतौ अपन घर बनाओल छल. ओहि ठाम लोग सड़क पर चलैत नहि छल वरन् चढ़ैत उतैरत छल. खाली चढ़ाई आ उतराई—सुख आ दुख—ज्वार आ भाटा. जामवंतक गुफासँ ल'

बाणे बाहु धरि जीर्ण शीर्ण तवी नदीक मचलैत बक्र रेखा—एहि प्राकृतिक एवं पर्वतीय क्षेत्र में लोगक हृदय प्रकृतिसँ कतेक समीप छलैक कतेक साम्य छैक. दिल्ली विश्वविद्यालयक अंबेदकर कालेजक प्राचार्य पातंजलि जी कतेक नीक जकाँ बजने छलाह—प्रकृति मानव-जीवनक अकाट्य अंग अछि. धरतीसँ जुड़ल साहित्यकार कोनो भाषाक किएक नहि होय प्रकृतिक संगहि ओकर भाव विलास होयत अछि. यदि नायिका उदास होइत अछि तँ प्रकृति उदास भ' जायत छैक. नायिका हँसैत अछि तँ प्रकृति विहुँसैत अछि. पर्यावरण शब्द तँ पहिलहिसँ छल लोक अर्थ आब बुझ' लागल—

आइ की अहाँ व्यक्तिकेँ प्रकृतिसँ विमुख पाबि रहल छी?—हमर एहि प्रश्न पर पातँजलि जी मुस्काय देने छलाह—मनुष्य जतेक अन्तर्मुखी होइत गेल—प्रकृति सँ ओतबे दूर होयत गेल. मानव खाली अपने लेल सोचय लागल. तँ तँ ओकर संवेदनशीलता खत्म भेल चलल जाय रहल अछि. जे चिरंतन अछि. शाश्वत अछि वएह ध्रुव छैक—

मोने आबि जाय'छ अपन छोट बेटा संजीव जे पर्यावरणमे दिल्लीसँ पोस्ट ग्रेजुएशन केने छथि. पटनाक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था 'तरुमित्र' क वरिष्ठ नायक बनि तकर बड़ पैघ मित्र ओ भ' गेल. गाछ बीरीछक चेतनाक एक एकटासँ स्पर्श संजीव क साँस-साँसमे उतर' लागल. फादर रौबर्टक 'तरुमित्र'सँ एकटा नवजीवन नवदिशा नव मैत्री ओकरा भेटि गेल प्रकृतिक.

पातंजलिजीक गप जेना हमरा कतहु स्पर्श केलक. ठीके तँ बाजल छलाह—मानवक हृदय मे जे किछ संचित छैक ओकरे अभिव्यक्ति तँ ओ करैत अछि. उधारक अनुभूति दोसराकेँ संस्पर्श नहि करैत छैक. केओ समस्त जिनगी शहर मे बितायत आ लिखत ग्रामीण परिवेश पर, तँ इ उधारक भावना अंशतः सत्य भ' सकैछ, पूर्णतः नहि.

साहित्य अकादेमीक सचिव रमेश भसीनजी बजने छलाह जे अहाँ नीलांबर देव शर्मा निदेशक, डोगरी संस्थान सँ अवश्य भेंट करब. नीलांबर जी सुदर्शन व्यक्तित्व, शालीनता आ संस्कृतिक प्रतिमूर्ति छलाह. १६ फरवरी, ९४, डोगरी संस्थानक स्वर्ण जयन्ती छल. विश्व विद्यालय मे हमरो आमंत्रण कार्ड भेटल. 'मान जोग जनरल के० बी० कृष्णाराव, राज्यपाल जम्मू-कश्मीर, होर होखन तुसेंगी

शामल होने दा नवेदन ऐ'—डोगरी भाषा मे इ कार्ड छल. अभिनव थियेटर मे सांस्कृतिक कार्यक्रमक तैयारी चलि रहल छल. ओहि ठाम नीलांबरजी, शीराजाक संपादक शिवराज दीप जी, रामनाथ शर्मा (डोगरीक भीष्म पितामह), ध्यान सिंह जी (क्षेत्रीय शिक्षा पदाधिकारी), प्रो० कुलभूषण कायस्था (धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश) आदि कतेको डोगरीक मूर्धन्य साहित्यकार लोकनि सँ भेंट भ' गेल. चमकैत नीला सूट सँ आवृत नीलांबर जी हमरा सभक संग रौद मे घासे पर पलथी मारि बैसि गेलाह. कनिको अहं नहि, घमंड नहि.

मोन पड़ि जायछ' बिहारक एकटा व्यक्तित्व डॉ० पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा. डॉक्टरक संग-संग ओ बिहारक उद्योग मंत्री सेहो छलाह. लोग कहैत छैक जे कायस्थ बड़ कवि काठी होयत अछि. यानी खाली एक दोसराक आलोचना आ अपन फायदा देखैत अछि बड़ टेढ़. अपनासँ बेसी केकरो बोजर नहि दैत अछि. मुदा, अपवाद तँ प्रत्येक चीजमे होइछ. व्याकरणक नियमे सीक.

डॉक्टर साहब वएह अपवाद छथि. हुनक हृदय एकटा निश्छल शिशु सन सरल ओ सहज आ सदैव लोकक सहायता लेल तत्पर. नहि तँ घमंड आ नहि अहंकार. दीदी यानी हुनक पत्नी बजलीह—एक बेर कोनो पार्टीमे हम सभ गेल छलौं तँ अबैत काल सभकेँ क'ल जोड़ि कहैत छलाह—अहुँ आयब—अहुँ आयब—संगे हमरहुँ (यानी अपन पत्नीकेँ) कह' लगलाह कल जोड़ि—अहुँ आयब—सभ केओ अवाक भमोनक तखन ओ देखैत छथि—अरे इ तँ हमर पत्नी थीकीह.—हुनक अधर पर शेना सन सरल मुस्कान आ हृदयमे अपनत्वक अथाह सागर—आय नीलांबर जीक छबिमे हमरा डॉक्टर साहबक रूप अरुपित भेटि गेल.

सभ केओ चाह पीबि रहल छलाह. हमर कप ओहिना—पड़ल छल आ हम नीलांबरजीक गपक प्रवाहमे डूबल छलौं—डोगरी बला सभ देशक लेल जान दय देलैथ सिकालिका जी. जम्मू बन्द भेल, सभ बन्द भ' गेल. डोगरी हमर माए थीकीह. संविधानमे स्थान नहि भेटल. राजनीतिक मामला थीक जकरा सभसँ बेसी जानकार चाही वएह सभसँ कम जनैत अछि. कश्मीरी केँ पहिने मान्यता भेटल. मेन इज अफ्रेड ऑफ हिज मार्ट साइटेनेस. आब सिक्खो चीन्हारक समस्या बनि गेल अछि. मिजोरम, नागालैण्ड पंजाब सभ अपन अपन पहिचान बनब'मे लागल अछि. अडवाणी कहलन्हि—संविधानमे स्थान भेटबाक चाही. नरसिंहाराव जी बजलैथ—हिन्दीकेँ अहाँ किएक बस अबमाबैत छी—जनैत छी इ सभ बात हुनकर गलामेँ

एना बहार भेल जेना शास्त्रीय संगीत गलासँ निकलैत अछि, हृदय सँ नहि. मुदा ओ सेहो आश्वासन देलन्हि. जाहि तरहे दोकान पर आइ नगद काल्हि उधार बोर्ड टांगल रहैछ ओहिना हमरा सभकेँ आश्वासन भेटैत रहैछ. काल्हि ओम गोस्वामी जी कतेक झुझुआय बाजल छलाह—

हिन्दी साठी दादी ऐ ते डोगरी ऐ माँ

दादी थाहर दादी ऐते माऊर थाहर माँ

"हिन्दी हमर दादी अछि आर डोगरी माँक बोली. दादीक अपन स्थान छैक माँक अपन." राजीव अध्यक्ष इतिहास विभाग सत्यवती कॉलेज दिल्लीमे भ' गेल छलाह. ओ बाजल—हमरा साहित्य अकादेमीक उद्देश्य बड़ नीक लागल—मम्मी जे अपन मातृ भाषासँ कटैत अछि ओ अपन राष्ट्रक भाषासँ सेहो प्रेम नइ क' सकैत अछि. जे अपन मायकेँ आदर नहि देत ओ भारतमाताकेँ कोना आदर देत ? सत्यवती कालेजक प्राचार्य भीमसेन सिंहजी सेहो भाषाक प्रति बड़ सजग रहैत छलाह.

डॉ० स्वरूप चन्द कहने छथि जे अपन भाषा छोड़ब, अपना मायकेँ छोड़ब थीक. सोच तँ इ अछि जे मैथिली, डोगरी राजस्थानी, कोंकणी, पंजाबी सभ भाषा मिलि राष्ट्रभाषा केँ समृद्ध बनवैत अछि. सभ नदी सागरसँ मिलैत अछि. यदि इ सागरसँ नहि मिलत तँ सागर संकुचित भ' जायत.

स्मृतिमे आबि जायत अछि जखन पापा माँक संग हम दूनू गोटे इलाहाबाद स्वर्ण पदक लेवा लेल गेल छलौं. पता नय किएक ट्रेन खुजतहि हम कान' लागल छलौं. जेना अचोके कमजोर भ' गेलौं. कनिक काल उपरान्त हमर मोन शांत भय गल. ठहरल पानि जकाँ निस्तब्ध. स्यात् अपन बाल-बच्चाकेँ अपना संगे नइ ल' जेबाक सामर्थ्य आ विवशताक कारणे ई हाल छल.

हमतँ नित्य दुर्गापाठ करैत छी आ माताक शक्ति हमरा बड़ निर्विकार बना देने छल. राखबाक चाही हमरा सभक खियाल. हमर सभ खियाल राखैथ इ तँ स्वार्थ थीक. हम आ स्वार्थ ? जकर जीवन केकरोसँ बिन किछ प्राप्त केने सभक लेल उत्सर्ग होइत रहल ओकरा'''आ हम खुश छलौं पापा माँ हमरा सभक संग छथि—एकटा पैघ उपलब्धि लेल हम जा रहल छी. इलाहाबादक प्लेटफार्म पर पैर रखतहि रोमांचित भ' गेल छलौं. एकदम भोरे इलाहाबाद ट्रेन पहुँचल छल. म्योर कॉलेज खोजवा लेल पापा माँ केँ स्टेशन पर छोड़ि हम आ वर्माजी रिक्शासँ

निकसल छलौं. इ संयोगे छल जे जाहि रिक्शा पर हम बैसल छलौं ओ सेहो इलाहाबाद शहर लेल नये छल. एक घंटा धरि हम सिविल लाइन्समे घुमैत रहलौं. विचित्र अनुभूति होइत छल—लगैत छल जेना कोनो घरमे धर्मवीर भारतीक सुधा चन्दरक प्यार लग बैसल कानैत हेतीह. जेना कोनो कम्पाउन्डमे पम्मी आकास दिसि ताकि रहल होय - हम अहाँ सँ प्यार नहि करैत छी--तैयो अहाँक आगमनक बाट तकैत छी—जेना कोनो साइकिल पर धर्मवीर भारती चक्कर काटि रहल होथि—अपन कल्पना पर स्वयं हँसी अबैत छल. इ टा सत्य जे इलाहाबादक धरती-आकासक कण-कणमे साहित्य रचल रमल अछि.

म्योर कॉलेज खोजबामे कतेक घुरनी लागल मुदा ओहि ठामक लोकमे एकटा संस्कार देखलौं. हम जखन आजिज भ' गेलौं तँ रिक्शा वाला बाजल— 'साब, आप मत घबड़ाइए; मैं आपलोगों का खाना अपने घर बनाऊँगा.'—हमरा सभकेँ हँसी आबि गेल छल. एकटा रिक्शावलाक इ शिष्टाचार देखि हमर सभक सभटा थकान खतम भ' गेल छल. ओ संस्कार रिक्शावलाक नहि वरन् समस्त इलाहाबाद शहरक प्रतिरूप छल.

आखिर हम म्योर कॉलेज खोजि लेलौं. सुधाकान्त भाई विजयानगरस हालक [illegible] छलाह. बजलाह—हम स्टेशन स्वयं गेल छलौं मुदा अहाँ सभकेँ नहि देखि निराश भ' वापस आबि गेल रही. ओ कार ल'केँ हमरा सभक संग स्टेशन गेल आ पापाकेँ आनि स्टैंडर्ड होटलमे हमरा लोकनिक रहवाक व्यवस्था केलन्हि.

[illegible] जेनरल जगदीश स्वरूप जी हमर पापाक मित्र छलाह—ओ अपन [illegible] छल. हम सभ संगम स्नान लेल चलि गेलौं.

यमुनाक [illegible] जाय रहल छल. [illegible] रहल छलाह, वर्मा जी, पापा [illegible] देखि अपन भूत वर्तमान सभ बिसरि [illegible] गेल रही. हमर अस्तित्व विलीन भ' [illegible] वातावरणमे—वायुमंडलमे पंचतत्त्व जकाँ घुलिमिलि [illegible] उठल छल जे हमर बच्चा सभ एखन एहि तरी पर हमरा [illegible]—

तँ—स्यात् एहेन अवसर हमर सभक भविष्यकेँ भेटत वा नइ—के जनैत अछि.
दर्दक एकटा निसाँस हमरा बड़ दूर धरि, बड़ दूर धरि ल' गेल—

यमुनाक हरिहर जल आ गंगाक उज्जर मेलछाँह जल—दूनूक संगम—की स्वर्ग एकरासँ बढ़िकेँ भ' सकैछ ! गंगा यमुनाक प्रत्यक्ष मिलन—दूनूक जीवनक अन्तरमे अप्रत्यक्ष सरस्वतीक स्नेह-धार. समस्त तन मन अपूर्व पुलकावलिसँ भरल छल. जेना इ स्थान एहि धरती पर नहि, एहि लोकक नहि—आत्मविस्मृतिक अवस्थामे आबि गेल रही. यदि एक दिन मृत्युक वरण केनाइ अछि तँ आइए किएक नहि ? एखने किएक नहि ? कतेक भागवंत हएत इ मृत्यु-पर्व ! एकटा ब्रह्मानंद — सत्यम् शिवम् सुन्दरम्क अभिव्यक्ति चतुर्दिक ! संगम स्नान केनिहारक मारि

संगम पर एकटा बाँसक मचान बनल छल. संगम स्नान सभ करैत छल. जान प्राणक पड़ि रहल छल. पंडाक हाथ पकड़ि संगम स्नान सभ करैत छल. जान प्राणक डर—सभ नर नारी बीच जलधार मे पंडाक हाथ पकड़ि एक-दुइ-तीन डूब दय नाह पर कपड़ा बदल' जायत छल. संगम मे नारियल चढ़ेनाय अनिवार्य छल. पंडा लोकनिक अनुसार. पहिनहि बुझल नहि छल हमरा सभकेँ. पंडा टाका हमरा सभसँ नारियल लेल लेलक., लोक जे नारियल फेकैत छल, हेलि पंडा ओकरा लय अनैत छल. फेर दोसराक हाथ बेचि दैत छल. यानी तीन चारि टा नारियल केँ सैकड़ों स्नानार्थी सभ चढ़बैत छल. मोन दुखी भेल तँ पापा बजलाह की करबहक—अपन मोनक भावनाकेँ देखह पंडा की करैत छैक नय सोचह. मोनकेँ शांत कय चारू दिसि पसरल जलधार मे अपना आपके विस्मृत क' देलौं.

पापा माँक गप कानमे संगीत जकाँ बाजि रहल छल—अपना सभ कतेक घुमलौं मुदा, इलाहाबादक इ यात्रा ! सोचु अपन बेटीक सौभाग्यसँ हम सभ एहिठाम आयल छी. अपन रजनी आय सर्वोच्च गद्य लेखनक लेल स्वर्णपदक प्राप्त करतीह.

माँ बजलीह—से ठीके बजैत छी. कहियो नइ सोचैत रही. सभ कहैत छल एकर धीया पुता की पढ़त लिखत—पापा बीचेमे बात कटैत बजलाह—हम तँ सोचैत रही—सपना देखैत रही. एकर नाम तँ तँ हम टिप्पणि पर 'तेजस्विनी' राखने छलौं.

माँ बजलीह—मोन अछि जखन अहाँ हजारीबागमे मैजिस्ट्रेट छलौं. हुरनगंज मुहल्लामे अपना सभ रही ५१—५२क गप थीक स्यात्. एकटा ज्योतिषी रजनीक हाथ देखि बजने छल जे अहाँक इ बेटी कवयित्री होयतीह—पापा अपन मोहिनी मुस्कानक संग हाथ केँ दार्शनिक मुद्रामे आकाश दिसि घुमबैत बजलाह—हँ तँ देखु......

हमरो अधर पर मुस्कीक चिड़ै आबि केँ बैसि जायत अछि—ठीके तखन सभ भाय बहीन हमरा कबूतरी कबूतरी बजैत छल—तखन हम कवयित्रीक अर्थो नहि बुझैत रही—सात-आठ बरखक बालिका खाली कल्पना लोकमे घुमैत छलीह.

मुदा, ओहि समय हम कविता लिखने छलौं. जीवनक प्रथम मैथिली कविता—नहि-नहि कविताक पाती—

पापा बड़ सोचैत छलाह. माँ केँ बड़ दुख होयत छल—रजनी ! तोरा रहैत पापा सोचथुन इ दुखक गप आ तोरा सभ लेल चैलेन्ज ! आ तखन हम दीपक मिलि एकटा योजना तैयार केलौं. इ हजारीबागक गप थीक. हम माउन्ट कार्मेलमे पढ़ैत छलौं तखन—बादमे हम दीपक दूनू बहीन मिशन स्कूलमे चलि आयल रही. पापा हजारीबागमे चारि बरस डिप्टी कलक्टर रहलाह.—जहिना पापा सोच' लागथि कि हम दीपू मधु लयात्मक स्वरमे गाब' लगैत छलौं—पापा सोचै छथिन दुइ पैसा भाय—आ पापाक आगु तरहथी पसारि दैत छलौं. पापा वचनबद्ध छलाह. तखन दुइ पैसाक महत्व छल. अपन बनाओल कविताक इ पातीसँ पापासँ बड़ पाइ हम तीनू बहीन कमयलौं, पापा केँ सोचबाक आदत नहि छुटैक. आ दिनमे १-२ टाका तक कमाइ भ' जायत छल.

'ए सिलवर स्पून इन द माउथ' सरिपहुँ हमर जन्मे भेल छल सुख आ वैभवक मध्य. एकटा राजकुमारी जकाँ हमर लालन पालन भेल. हमर तन मोन केँ कनी कोनो तरहक चोट नहि पहुँचय इ परिवारक दायित्व छल. लालदाय हमर सहोदर बहिनसँ बढ़िकेँ सहोदर अछि—आ पीसी माँ हमर छोटकी पीसी जे [illegible] नामसँ विख्यात छथि—हमर स्नेह दुलारक मारि प्रहार सभटा बर्दाश्त करैत छलीह—पीसी माँ कहैत छलीह पापा [illegible] जायत रहथीन तँ हमर मुँह देखि केँ—[illegible]' (शुभकरी: एकटा पक्षी जकर यात्रा शुभ होयत अछि) तँ [illegible] राखने छल. पापाक पियारी बहिनी अछि अम्मा. आ माँ [illegible] राजारानी [illegible] छल. हम सभ [illegible]मे राजारानी [illegible] खेल खेलैत छलौं आ माँ [illegible] चिढ़बैत रहैत रही. पापाक पीसी छलीह जकरा सभ दादा कहैत छल. [illegible] छलीह पापा तैयार भ' निकलैत छलाह आफिस [illegible] चारू दिसि ताक' लगैत छलाह कि 'दादा' हमरा [illegible] छलीह—कतए गेली हे दहीक छाछ—

पीसी माँ केँ अल्प वयसमे वैधव्य प्राप्त भ' गेल छलैन्हि. हुनक जीवनक प्रवीण शिखा छलीह हमर लालदाय यानी हुनक एकमात्र संतान कविता. आदर्श आ अनुशासनक ताना भरनीसँ पीसी माँ आ लालदाय हमर जीवनक निर्माण कयलीह. पीसी माँ बजैत छलीह जे हम नओ बरसक आयु धरि भात नय लेने रहीं. खाली सोडा वाटर लेमनेड. अन्नक बदला खाली फल……की ई सभ मिलि हमर ओनके धरतीसँ हँटाय भावना लोकक प्राणी नहि बना देलक ?

अचक्के मुँह पर पानिक छींटा जोर सँ लागल—बहुत भेलै—आब हमरो सभकेँ देखु—वर्माजी बाजि रहल छलाह. पापा माँ हँसीमे डुबि गेलाह. हमर नाह सूक्ष्मसँ स्थूल दिसि, स्वर्गसँ धरती दिसि घुरि रहल छल—

पुरना किलामे मूर्त्ति सभक पूजाक काल मोन विषण्ण भ' गेल. प्रत्येक मूर्त्ति लग एक एकटा लड़की ठाढ़ छलीह जे हमरा सभकेँ मूर्ति पर पैसा चढ़एबा लेल बाध्य क' रहल छलीह. आब लोग भगवानो केँ बेचि खाय लागल. हुनकर सभकेँ काँय काँयसँ नहि तँ पूजामे मोन लागल आ नहि तँ मूर्त्ति देखबामे.

चारि बजे तैयार भ' हम सभ विजयानगरम् हाल पहुँचलौं. बुद्धिजीवी सभ भरल छलाह. महादेवी जी अस्वस्थ छलीह तेँ नइ अयलीह. डॉ० रामकुमार वर्मा उद्घाटन केलन्हि. हुनक अभिभाषणक उपरान्त सभ प्रतिनिधि लेखक कवि अपन अपन परिचय स्वयं द' रहल छलाह. हमर बारी आयल—अपन परिचय हम की दी—ओना हम शेफालिका छी आ हमर परिचय हमर कथा कविता थीक.—सभ केओ खुशीसँ थपड़ी पाड़' लगलाह.

लेखिका कवयित्री नीरजा रेणु एवं हुनक पति डॉ० किशोर जी आयल छलथि. नीरजा जी सँ भेंट बड़ दिव्य रहल. ओ एक बेर हमरा पत्र लिखने छलीह—अहाँक कथा पढ़ि मोन खुशीसँ नाचय लगैत अछि—हमर पति बजैत छथि जे सुकर जे ओ महिला छथि यदि पुरुष रहितैथ तँ घरमे सदिखन महाभारत होयतैक—आय वएह नीरजा केँ अपना समक्ष पाबि कतेक आनंदक अनुभूति भेल छल.

सभ कविक संग संग हमर काव्य-पाठ भेल. डॉ० रामकुमार वर्मा अभिभूत भ' 'बड़ सुन्दर, बड़ सुन्दर' कह' लगलाह. हुनक आँखिसँ छलकैत स्नेह भरल, प्रशंसा भरल, वात्सल्य पाबि हम धन्य धन्य भ' गेल छलौं. हमर पीठ पर थाप दैत ओ भोरे ९·३० बजे हमरा सभकेँ अपना ओत' एबाक निमंत्रण देलन्हि.

इलाहाबादक दिसम्बरी जाड़—लोग बरफ जकाँ जमल जाय रहल छल. ९ बजे भोरे गाड़ी आयल छल. हम सभ 'साकेत' गेलौं तँ ज्ञात भेल जे ओ प्रयाग स्टेशन लग अपना बेटी ओत' रहैत छथि. हुनक घर 'राज्य लक्ष्मी' पहुँचलौं तँ ओ ड्राइंग रूममे बैसि अखबार पढ़ि रहल छलाह. हमरा सभकेँ देखतहि आह्लादित भ' उठलाह—पापा माँ आ वर्माजीसँ परिचय भेल. कनिके कालमे ओ हमर सभक अपन नितान्त अपन भ' गेलाह. पापा पुछलैन अहाँक कतेक बच्चा अछि ओ हमर माथ पर आशीर्वादी हाथ दैत बजलाह बस एकटा 'शेफालिका' हम अकचका गेल छलौं की हुनको बेटी—? हुनका एकेटा संतान अछि 'राज्य लक्ष्मी'. एखन 'साकेत' छोड़ि ओ बेटी लग रहैथ. बेटीक घरमे कोना रहताह (जखन कि बेटीक ब्याहो नय भेल छल) एहि कारण ओ चुपचाप सहज भावसँ बेटीक गाड़ीमे पेट्रोल आदि भर बाय दैत छलाह.

बेटीक घरमे नहि रहबाक चाही. ओ हिन्दू समाजक एहि प्रथाकेँ सादर सम्मान दैत छलाह. बेटी एहेन जे दीर्घकालसँ अस्वस्थ माताक कारण विवाह नय केने छलीह. आरम्भसँ अन्त धरि ओ वर्गमे प्रथम अबैत रहलीह. स्थानीय कॉलेजमे व्याख्याता छलीह. एकेटा बात बजैत छलीह—पापा अहाँ तँ साहित्य सृजनमे हरदम देश विदेश घुमैत रहैत छी. हमर ब्याह भ' जायत तँ माँ केँ के देखत ?

इत बात बेटीक मुँह सुनि मोन आदरसँ भरि गेल छल—सुधा भाई पहुँचि गेल छलाह हमरा सभकेँ लय जेबा लेल.

दोसर दिनक सम्मेलनक मुख्य अतिथि डॉ० राम कुमार वर्मा छलाह. उद्घाटन लय महीयसी महादेवी वर्मा अभय लेल छलीह. मुदा, अस्वस्थ हेवाक कारण हुनका बदला इलाहाबाद विश्व विद्यालयक भूतपूर्व कुलपति प्रख्यात साहित्यकार डॉ० बाबूराम सक्सेना अयलाह.

हम मैथिलीक प्रख्यात आलोचक डॉ० जयकान्त मिश्राक बगलमे बैसल छलौं. कतेक बात ओ हमरा सँ कयलन्हि—कतेक आशीर्वाद, जखन डॉ० बाबूराम सक्सेना हमरा स्वर्ण पदक दय' लगलाह तँ हमर पापाक आँखिसँ नोर झहर' लागल छल. माँ उल्लसित छलीह. वर्मा जी सेहो—ओ देखि रहल छलाह पापा माँ अपन बेटी केँ देखि-देखि कतेक खुशी आ गौरव सँ भरि रहल छलाह.

डॉ० रामकुमार जी हमरा 'काव्य विनोदिनीक' उपाधि प्रदान केलन्हि. जलखैंक प्लेटसँ एकटा समोसा एकटा मिठाई उठाय रामकुमार वर्मा जी हमर प्लेटमे द' देलैथ—शेफाली इ हमर प्रसाद थीक.—

प्रदर्शनी देखवा लेल सभ जाय लगलाह तँ जेना एकटा स्वर लहराय शेफाली-शेफाली अकचका खोज' लगलौं तँ पापा संकेत केलन्हि राम कुमार जी हमरा बजाय रहल छलाह—एतेक पैघ सम्मान लेल ढेर ढेर बधाई—बाबूराम सक्सेना बधाई देलन्हि—जय कान्त जी बधाई देलन्हि—एतेक पैघ पैघ साहित्यकार क बधाई की हमरा लेल गोल्ड मेडलसँ कम छल—?

एहि सभ स्नेह सम्मानक कारण जखन द्वितीय मैथिली महासम्मेलन प्रयागमे १९७७ मे होम' बला छल तँ हमरा ओहिमे महिला विभागक सभापति मनोनीत कयल गेल. प्रधान सभापति महाकवि सुमित्रानंदन पंत छलाह. बीसटा विभागक सभापतिमे हमरा अतिरिक्त पं० भोला लाल दास, पं० शशिनाथ चौधरी पं० लक्ष्मी पति सिंहजी, पं० हरिमोहन झाजी पं० विभूति भूषण मुखोपाध्याय, प्रो० धीरेन्द्र जी, पं० आद्याचरण जी, रमानाथ मिश्र मिहिर जी, पं० शंकर मिश्रजी आदि कतेको विद्वान् छलाह. 'बटुक' मे पन्त जीक संग-संग हमर फोटो छपल छल. मुदा अभाग्य हमर जे ओ महासम्मेलन कोनो खास परिस्थितिमे स्थगित भ' गेल छल.

ओहि राति पापा माँ खाली हमरे चर्च करैत रहलाह—हमर जनम—हमर खेल हमर बदमाशी—लभटा वर्मा जीकेँ सुनवैत रहलाह—होटल स्टैंडर्डक ओ कोठरीमे केकरो आँखिमे नीन नय छल—एकटा खुशी छल—एकटा उल्लास—अशोक नगर स्थित महादेवी वर्माक निवास पर सेहो गेल छलौं. बड़का अहाता—चारु कात प्राकृतिक निष्पंदता जेना गाछ बीरीछ सभ शान्त साधनामे तल्लीन. एकटा तपस्विनीक कुटिया. एकटा किशोरी बाला निकलल छलीह—महादेवी जी अस्वस्थ छथि. किनको सँ भेंट नय क' सकैत छथि.

सुधा भाई ओहि बालाकेँ हमरा सभक विषयमे कहलन्हि. स्वर्ण पदक महादेवीजी केँ देवाक छल. नाम सुनतहि भगवतीक द्वार खुजि गेल. ड्राइंग रूममे चारु कात देवालसँ सटल सोफा लागल छल बीचमे सुन्दर सन कालीन पर गोल मेज. केवाड़क एक दिसि वीणावादिनीक दुग्ध—उज्जवल प्रतिमा. चारु दिसि ईसा मसीहसँ लय गुरु नानक धरि सर्व धर्मक संत लोकनिक फोटो सभ लागल. आ श्वेत परिधानमे आवेष्टित साक्षात्—सरस्वती महादेवी आयल छलीह. दुर्बल काया, अधर पर मोहक मुस्की. आँखिमे एकटा सपना लहराइत.

हम सभ कालीन पर बैसल छलौं. ओ हमरा सभ लग आबि बैसि गेलीह. सुधाकान्त भाई सभसँ परिचय करौलन्हि.

—अहाँ अस्वस्थ छी की—? हमर बात पर ओ हँसि देलीह—एखन तँ समस्त देश अस्वस्थ अछि ओहि ठाम हमर अस्वस्थताक कोन अर्थ ?—हुनक वाणीमे [illegible] आ नहि आँचो छल—भोरे भोर जखन अखबार पढ़ैत छी तँ लुटि-पाट, हिंसा, बलात्कार, हत्या—इ सभ देखतहि अखबार छुवाक साहस नहि होयत अछि. पता नय की भय गेल अछि देशकेँ—वर्त्तमान व्यवस्थाक प्रति मोनमे जे क्षोभ छल ओ महादेवीक वेदनाक स्वरमे प्रस्फुटित होइत रहल.

हमर पोथी 'विप्रलब्धा' मे स्व० हरिमोहन झा जी द्वारा लिखित 'मैथिलीक महादेवी' पढ़ि ओ विस्मित भ' गेलीह. हमर प्रणत चिबुक उठाय स्नेहसँ निहार' लगलीह. हमर डायरी पर ओ बड़ प्रेमसँ लिखि देलीह—तू न अपनी उम्र को अपने लिए कारा बनाना. जाग तुझको दूर जाना—आ तँ हमर यायावरी मोन गवैत रहैत अछि—माइल्स टू गो—

आय ओहि माइल्सक क्रममे जम्मूक वनवीथिमे भटकि रहल छलौं. मोनमे एकटा कचोट छल—काश, कश्मीर जाय सकताक बाट भेटि जेतीयैक. मानव अपन [illegible] मार्ग स्वयं अवरुद्ध क' रहल अछि. आब तँ हमरा सभकेँ सतर्क रह' पड़त कि नाहि आजादीकेँ हम शहीद भ' आनलौं ओ हमरा छोड़ि केँ जायतँ नहि रहल अछि ? अनजानहिमे हम फेर गुलाम तँ नहि भ' रहल छी ? एहेन तँ नहि जे परक लड़ाइ लड़ैत लड़ैत हम एतेक कमजोर भ' जाय जे बाहरी आक्रमण हमरा सभकेँ पूर्णतः विनष्ट क' दैक. आय हम तोड़ फोड़क राजनीति क' रहल छी. [illegible] एकटा देशक माँग कय अपन देशकेँ विकलांग बनौने चलल जाय रहल अछि. [illegible] हम भ' गेल छी कि अपन सब किछ हम स्वयं डाहि रहल छी. हमरा सभकेँ वैज्ञानिक शक्तिक कमी नहि अछि मुदा, हमर हृदय दरिद्र, विपन्न होइत चलल जाय रहल अछि. आय साहित्यकार, चिन्तक सभक समक्ष एकटा प्रश्न अछि कोना मानव केँ मानवता नजदीक आनी ? मानव मानव एक रहत तँ राष्ट्रक भूमि कहियो नहि बँटत.

जम्मूक सुखद उषा काल एक दिसि हिमालयक सुन्दर उपत्यका, दोसर दिसि, [illegible] नदीक मेखला सदृश धार. बसन्त पंचमी छल. हम सभ नीहारिकाक संग [illegible] छलौं. बस पर्वत शृंखला पर बनल सर्पिणी सन टेढ़ मेढ़ रास्तासँ जाय

रहल छल. दूर धरि पसरल हरीतिमा आ कतौ कतौ जंगली नदीक मचलैत जल-धारा. हवाक रस भरल फूही हमर मानसकेँ सुधासिक्त क' रहल छल. हमर मोन जेना ओहि वाटी सभसँ बन्हि सन जायत अछि. मोन होय'छ बसि जाय एहि पर्वतीय कंदरामे, एहि उपत्यकामे. चिर काल पहिने केओ गौतम गृह त्यागि एहि वनवीथिक मध्य भटकैत बुद्धत्व प्राप्त केने होयत. प्रत्येक व्यक्तिक अन्तरमे एकटा छोट मोट बुद्ध छैक. मुदा, सभ भागि नहि सकैत अछि. बुद्धक बुद्धत्व पलायनमे नहि आनक सुख दुखमे अपन सुख दुखकेँ समर्पणमे अछि. हमरो अन्तर अवस्थित छोट छीन नान्हि टा सेफाली—सभ किछ तोड़ि भागबा लेल चाहैत अछि मुदा हमर मानस अपन उत्तरदायित्वसँ पलायन केर प्रेरणा नहि दैत अछि.

कटरा जेबाक छल. भोरे भोर सपना तैयार भ' गेल छलीह. सोचैत छी एक दिसि सपना दोसर दिसि हमर तेसर बहीन मधुलिका, कतौ जेबाक होय सपना तुरत तैयार भ' जायत छलीह मुदा, मधुकेँ तैयार हेबामे बड़ काल लागि जायत अछि. बेगुसरायक एकटा घटना जखन मोन पड़ै'छ एकान्तोमे हँसी आबि जाय'छ. तखन शंकर बाबू पाहुन बरौनी रिफाइनरीमे इंजीनियर छलाह. हम सभ मधु ओत' घुम' गेल छलौं. १२ बजे दिनमे मैटिनी शो पिक्चर देखबाक कार्यक्रम बनल छल. बाते बातमे शंकर बाबू कहलैथ मधु आय धरि पूरा पिक्चर नय देखने अछि. ओकरा तैयार होइत होइत आधा पिक्चर खत्म भ' जाय'छ. सुनतहि हम जल्दी जल्दी कोहुना मधुकेँ तैयार कय बाहर निकललौं. तैयो १२·३० बाजि गेल छल. शंकर बाबू एम्बेसेडर सड़क पर सरपैट दौड़ब' लगलाह.— आब कत' चली ? —पाहुन, सिनेमा छुटि रहल अछि - हम चकित छलौं. सिनेमाक टिकट तँ तीनब जे शो केर अछि. मधुकेँ तैयार होम'क कारण फुसि बाजलौं. मधु तँ माथ धुन' लागल. हमर सभक हँसीक मारे हालत खराब. मुदा, एकटा बड़ पैघ गुण ओकरा अछि जहिना ओकरा ज्ञात होयत छैक हम दिल्ली राजू जया लग आयल छी—भागल अबैत अछि भेंट करबा लेल. जम्मुक यात्राक क्रममे दुनू गोटेक कतेक सहायता भेटल छल हमरा—सपना लग एहि घटनाक चर्च करैत छी आ ठहाका लगैत अछि - मुदा दीदी तैयार होम' मे चन्दा भाभी सेहो फूल दीदीसँ कम नइ अछि. हँऽ सप्पो, किन्तु चन्दाक पिक्चर नइ छुटि सकैत अछि - एहि मामलामे दीपू अन्नु चयनी इरा सभ फिट अछि. आ हमर जया तँ केहनो स्थितिमे होय सेकेन्डसमे तैयार भ' जाय'छ. आखिर हमर पुतहु छी ने ! जया —दिल्ली विश्वविद्यालय सँ पढ़ल—अपन कॉलिजक सभसँ नीक खेलाड़ी, मुदा, ग्रामीण परिवेशमे ओ सदिखन

घोघ तनने रहलीह डुमरामे. सभक पएर जाँतनाय, सभकेँ गोड़ लगनाय अपन संस्कार विनयशीलताक परिचय ओ देने छलीह डुमराक विशाल परिवारमे. तखनो गामक दिआदिनी सभ हमरा कहैत छलीह—दीदी अपने जकाँ अपन पुतहुकेँ बना लेलीह—मुदा, की साँचे केओ ककरो बना' सकैछ ? इ तँ ओकर अपन संस्कार होयत छैक जे परिवेशसँ ग्रहण करैछ...

अचक्के एकटा धक्का लगैत अछि. तन्द्रा टुटैत अछि. लगैछ जेना हिमालयक चोटी पर छी. मुदा, इ चोटी नय हिमालयक पेटी छल जाहिमे हम सभ बन्द छलौं. हम सभ कटरा पहुँचि गेल छलौं. वर्मा जी बड़ खुश छलाह. हुनका कनिको थकान नहि छल. कटरासँ ऑटो कय हम सभ बाण गंगा आ चरण पादुका धरि गेलौं. ओहिठामसँ 'माता दी' केँ प्रणाम कय हठयोगसँ नहि प्रेमयोगसँ माता वैष्णो देवी केँ अपना अंतर मे बजयलौं. नीहारिका बजलीह— पहुना कतेक गोटे लोकक कान्ह पर बिस्तरमे सुति उपर जाय रहल अछि. अहूँ चलु—

इ हँस' लगलाह– नहि सपना, हम जीविते लोकक कान्ह पर नहि चढ़ब—

एकटा हँसी ब्यापि गेल मुदा कतेक वेदना छल ओहिमे. बसन्त पंचमीक कारण पीअर हलुआक प्रसाद बनल छल. नीहारिका अपन पति पुत्रकेँ छोड़ि हमरा सभक संग छलीह. हमर सभसँ छोट बहीन मुदा आयुमे हमर बेटी भावनासँ छोट अछि. एकदम भावना जकाँ उछलि उछलि हमर सभक आगु पाछू करैत मोहक खिलखिल हँसीसँ मोन-प्राण केँ उल्लसित क' रहल छलीह. तीनो प्राणी हमरा सभक पाछा खुशीसँ एतेक बेहाल छल जेना भगवान आबि गेल होथि. हम सभ तँ एतबे प्रेम आ आदर लेल जीवैत छी.—एक बेर हमरा अपन जाउत लालसँ बहस भ' गेल छल. हम कहने छलौं जे हमरा केओ प्रेमसँ रोटी नीमक देत त खा' लेब. केओ मुँह लटकाय के, मीट पुलाव देत तँ हम नहि खा' सकब.

एहि पर ओ बजलाह—चाची, हमरा केओ मुँह फुलाय केँ मीट पोलाव देत हम तँ खा लेब—अहाँ मुँह फुलौने रहु हम किएक खेनाय छोड़ब—बड़ काल धरि हम सभ हँसैत रहल छलौं. गुलशन कुमारक लँगर चलि रहल छल. लोग भोजन क' रहल छल. हमहु सभ बैसलौं. स्टीलक चमचम थारीमे बासमती चौरक भात, राजमाक दालि, छोले—बड़ नीक भोजन छल मुदा बारीक नीक नहि छल, ओ ठाढ़े ठाढ भात एना केँ फेकैत छल जेना भिखारी केँ दुरदुरा भीख द' रहल होथि. बड़ खराब लागल छल. माताक कोरमे बैसि लोकक मोनमे आतिथ्य प्रेमक भावना नहि उठैत अछि, यंत्रवत काज केनाय. वर्माजी बजलाह—एकर तँ इएह

ड्यूटी थीक—मशीन जकाँ भरि दिन एके काज करैछ. एकरा भाव कत' सँ आओत कौखन आओत ?

कटरा मे लोग बेसी डोगरी बजैत छल. सभ पहाड़ सन विशाल, विस्तृत हृदयक स्वामी. जत' एहि नैसर्गिकताक अभाव छल ओहिठाम फिल्म आ टीवीक प्रभाव छल.

डोगरी साहित्यकार सभमे एकेटा आक्रोश छल संविधानमे स्थान नहि भेटवाक. मुदा, विद्यापतिक भाषा मैथिली रहैत तखन आय धरि मैथिली कें स्थाव नहि भेटल. मैथिली लेल अपना अपना स्तर सँ सभ लड़ैत रहलाह—डॉ० जयकांत मिश्र, डॉ० कृष्णकान्त मिश्र, भोलालालदास सुमन जी अमर जी मणिपद्म जी बाबूसाहेब चौधरी जी स्वयं डॉ० जगन्नाथ मिश्र—आदि कतेको व्यक्ति आ संस्था—मुदा की भेटल ? मैथिली सीता थीकीह सभ किछ पाबितो किछ नहि पइवाक नियति सँ ग्रस्त—

एकटा विलक्षण गुण अनुपम छल डोगरी साहित्यकारमे. महिला साहित्यकारक प्रति सम्मान आ आदर-भाव. नीलांबर जी कहने छलाह—जाहि तरहे खिजाँ (पतझार) क बाद पात अपने आप निकलैत रहैत अछि ओहिना नारीक हृदय सँ भावना सहज सरल रूपे अपने आप बहराइत रहैत अछि. पुरुष साहित्यकार कें तँ सोच' पड़ैत छैक—

हमरा लगैत अछि जेना महिला साहित्यकार लेल एतेक स्वाभाविक सुन्दर समीक्षा विश्वक कोनो भाषामे नहि भेल होयत. प्रत्येक लेखक समीक्षक डोगरीक महिला साहित्यकार सभक निष्पक्ष रूपे बड़ाय क' रहल छलाह. पद्मा सचदेव लेल सबहक हृदयमे आदरभाव छल. ओ दिल्ली रहैत छलीह. हुनक जीवन-गाथाक दर्द सुनि लगैत अछि भगवान कोमल करुण हृदयकें एहि भौतिकता सहबा लेल किएक पृथ्वी पर पठा दैत छथि.

इ एकटा संयोग छल जे प्रसिद्ध साहित्यकार अमृत लाल नागरजीक भगिनीसँ भेंट भ' गेल जे पंजाबसँ आबि जम्मूक भ' गेल छलीह. एकटा वात्सल्य एकटा संस्कृति हुनक अपन व्यवहारमे अवगुंठित छल. डुग्गर समाजक सभसँ पैघ बात छल कि ओहिठाम दहेज प्रथाक प्रचलन नहि अछि. दहेजक नाम पर परिवार लेल कपड़ा आ बरतन बासनक प्रचलन छल. मात्र थोड़ बहुत लड़कीक पढ़ाई आ योग्यताक माँग रहैत छल. 'दहेज' शब्द एता नय कतौ जायत छी तँ भेटि जायत अछि. मुदा जम्मूमे इ रूप नीक लागल छल बड़ नीक. मेघक हल्लुक हल्लुक लहरि पर मोन उड़ैत अछि······

जिनगीमे एहनो दुर्लभ क्षण अबैत अछि जे मानवकें अनचोके मणिरत्नक प्राप्ति भ' जायत छैक. खास क' हमरा संग एहिना भेल अछि. हमर द्वितीय पुत्री बंदना (पींकी) दरभंगा मेडीकल कालेजक चतुर्थ वर्षक छात्रा छलीह. हम डाक्टर जमाय लेल बेसी उत्सुक नहि छलौं. जत' पति पत्नी दुनू डाक्टर छल ओत' एकटा बात परिलक्षित होइत छैक. लेडी डाक्टरक प्रैक्टिस बड़ चलैत अछि मुदा, ओकर डाक्टर पति बेसी बैसले रहैत छथि. एहिसँ परिवारमे एकटा व्याघात अबैत छैक. खुशी आ सुखक कण क्रमबद्ध नहि रहैत छैक. हमर बाबूजीक (स्व० ललितेश्वर मल्लिक हमर ज्येष्ठ पित्ती) दोसर पुत्र, हमर भाइ डा० अतुल कुमार मल्लिक दरभंगा, मेडीकल कालेजमे व्याख्याता छलाह. हमर छोट भाइ डॉ० कृष्ण कुमार मल्लिक ओहिठाम रेसीडेन्ट सर्जन छलाह.

हमर दोसर समधि मलंगवा निवासी राजेन्द्र बाबूक (संयोग देखु, दुनू समधिक नाम राजेन्द्र बाबू) हुनका सभ लग बंदनाक प्रति उपन्यास ल' पहुँचल छलाह. हुनक ज्येष्ठ पुत्र डॉ० कौशलेन्द्र कर्ण चेकोस्लोवाकियासँ डाक्टरी पढ़ि काठमांडो मेडीकल कालेजमे व्याख्याता छलैथ. अपन पुत्र लेल ओ स्वयं योग्य मेडीकल लड़कीक खोज क' रहल छलाह. नहि जानि कोना बंदनाक लेल हुनका ज्ञात भेल होयतैक आ कृष्ण कुमार लग पहुँचलैथ. कृष्ण कुमार हुनकासँ, शांत स्वरे पुछलक—'अहाँ लड़की देखने छी की ? 'नहि ! देखने तँ नहि छी, हँ सुनने छी' पहिने अहाँ जा' क' लड़की देखिलिय' तकर बाद हम सभ गप करब'. लड़की देखबाक तरीका सेहो ओ बता' देलक.

सहरसासँ कोनो मोवक्किल दरभंगा जायत छल तँ हम ओकरा संग बंदना कें पत्रमे हाल समाचार वा कि सनेस बना' पठा दैत छलौं. ओ मेडीकल कालेज हॉस्टलमे रहैत छलीह. शांत, धीर, पींकी साक्षात् सरस्वतीक अवतार अछि. नृत्य-गीत-संगीत नाटक आ वाणीक साधना ओकर जीवन छल, भावुक एतेक छलीह जे होस्टलक देवार पर हमर आ अपन पापाक फोटो साटि देने छलीह. कालेज जायत काल ओहि फोटो पर अपन माथ पटकि-पटकि प्रणाम करैत छलीह.

पढ़बा लिखबामे हमर छओ संतान प्रतिभाशाली आ मेधावी. सहरसामे सभ हमर घर कें सरस्वतीक मंदिर कहैत छल. मुदा राजीव आ बंदना चौबीस घंटामे अठारह घंटासँ बेसीए पढ़ैत छल. बड़ धीर आ स्थिर बंदना. भावना आ तरुणा यदि महारानी लक्ष्मीबाई, रजिया सुल्ताना छथि तँ बंदना आ सपर्णा

लक्ष्मी सरस्वती. मुदा अंशतः सभमे सभ गुण. हमर जन्म क्रांतिकारी दिवस ९ अगस्त कें भेल छल तँ हमरामे क्रांतिक ज्वार लहराइत छल आ वर्मा जीं शांत धीर संगीतमय. जे अवगुण हमरामे अछि से हुनकामे नहि, जे हुनकामे छैन्ह से हमरामे नहि. हमं सभ सही अर्थमे एक दोसराक पूरक छी—

कृष्ण कुमार हमर कोनो पुरना पत्र राजेन्द्र बाबूक हाथमे द' वाजल— अहाँ होस्टल चलि जाउ. ओहिठाम ओकरा बजाय कहवैक जे हम सहरसा सँ पत्र ल' क' आयल छी —

आय धरि पींकी बजैत अछि—मम्मी, हमर परीक्षा छल. हम नहव' लेल जायत छलौं, जेहने तेहने अवस्थामे भेंट केने छलौं—हमरा ओ सभ कोना पसिन्न केलन्हि—?

एतबहि नहि राजीव आ असीम (हमर छोट भाइ) दूनू गोटे मलंगवा गेलैथ उपन्यासक औपचारिकताक लेल. राजेन्द्र बाबू मूलतः दरभंगा जिला शिवनगर निवासी छलाह मुदा बैसि गेल छथि मलंगवामे. दूनू प्राणी मलंगवा अंग्रेजी हाइ स्कूलमे पढ़बैत छथि. राजीव—असीम दूनू कुमार बालक. मुदा, हुनका कोनो क्षोभ नहि छल. दूनू गोटेकें ओहि राति सिद्धान्त आ ब्याहक दिन द' देलन्हि. महान् आश्चर्य छल आजुक युगमे. जाहिठाम बेइमानी जीवन मूल्य बनि गेल अछि, बेटीक बापकें दौड़ेनाय सामाजिक स्टेटस बनि गेल अछि ताहिठाम इ दुनियाक आठम आश्चर्य छल जे अपनहि उपन्यास पठेनाय, आ प्रथम बेर दुइ कुमार बालककें पहुँचतहि सिद्धान्तक दिन देनाय.

गेल छलौं एक बेर मलंगवा ब्याहक उपरान्त. ओ सभ हमरा सभकें जनकपुर धाम ल' गेलथि. मुदा, मलंगवा बासा पर समधिन सत्यभामा देवीक प्रेमपूर्ण व्यवहार समधिक आदर सत्कार—ननदि भौजाइक प्रेम देखि लागल छल की इ जनकपुर धामसँ कम अछि ?

ब्याहमे केओ बरिआतिमे सँ बाजल छलाह—हम सभ तँ सहरसा जिला ब्याह क' लैत छी मुदा सहरसा वला सभ बिन टाकाक ब्याह नहि करैत छथि—

सोने लागल छल इ बात. सहरसा जिला छोट अछि. किछ लोकक कारण समस्त जिला वदनाम भ' गेल अछि.

मुदा, उत्तर भेटल छल. पींकी कौशलेन्द्र जी संग लंदन जेवा लेल छलीह. वरक सभसँ पैघ पुतहु— समीता, बबीता दुइ ननदि आ एकटा देओर अनिलजी. समधिकें चिन्ता छल बेटा पुतहु विदेश जायत छथि—पींकी अनुभूत केने छलीह अपन बीका काकाक चिन्ताकें. पति आ श्वसुरक संग ओ धनबाद चलि गेलीह जाहि ठाम हमर पापा छलाह कृष्ण कुमारक संग. पींकी बजने छलीह—नानाजी हम सभ पिन्टू मामाक संग समीता केर उपन्यास ल' क' आयल छी—

आ पापा ओहि साँझ सिद्धान्त क' लेलैथ. आठ दिन उपरान्त ब्याहक दिन द' हुनका लोकनिक संगे पटना चलि अयलैथ.

आ तखन समीता चलि अयलीह हमर नैहरक सभसँ छोट पुतहु बनि. आय पापा नहि रहलाह. एहि असार संसारसँ महा प्रयाण भ' गेल हुनक. मुदा, अन्तिम समयमे बेटा पुतहु, चाँद, अन्नू, समीताक सेवा आन लोग लेल दृष्टान्त बनि गेल—

दहेज नहि लेनाय हमर सभक परिवारक संस्कार छल—हमर समधि सभक परिवारक संस्कार छल—जम्मूक लोगमे वएह संस्कार पावि लागल—आय मिला वटक एहि युगमे एखनो लोक बाँचल अछि—सभसँ नीक जे जम्मूक समाजमे लड़की केर योग्यता लोग देख' लागल. इ भाव मिथिलोमे कनि कनि साँस ल' रहल अछि. नोकरीक योग्यता एकटा मापदंड बनल जा रहल अछि. किन्तु एतेक आस्ते आस्ते जेना छठिक भोरका अर्घ्यक सुरुज.

समस्त जम्मू शहरमे एकटा लहरि ब्यापि गेल छल हमर आगमनक. हम साहित्य अकादेमीक प्रति नमित भ' जाइत छी—कतेक नीक योजना अछि एक भाषाकें दोसर भाषाक संस्कार संस्कृति सभ जानवा लेल प्रेरित करैत अछि. एकटा मैत्री भाव, विश्व बन्धुत्वक भावसँ भरि दैत छैक मानवकें — देशकें—

आ अहुसँ बेसी लाभजीक लेल आभारी भ' जाइत छी जे समस्त जम्मू शहरकें हमर आगमनक खबर द' दलमलित क' देलन्हि. संस्कृतक विद्वान् नेपाल वासी डॉ॰ केदार नाथ शर्माजी लाभजीक बासा पर हमरासँ भेंट कर' पहुँचलन्हि. बड़ काल धरि हुनकासँ जम्मूक विषयमे गप होइत रहल—एहि ठामक लोग परिश्रमी आ कर्मठ होइछ'. शारीरिक मानसिक क्लांति दूर करवा लेल ओ छेंज (दंगल) देखैत छथि. विभिन्न क्रीड़ा मे भाग लैत छथि. डुग्गरमे प्रतिवर्ष बीसो मेलाक आयो-जन होइत अछि. एहि ठामक मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य तथा पशुपालन अछि.

आर्थिक दृष्टिसँ डुग्गर निर्धनक देश अछि. एहिठामक लोग युग युगसँ सामन्त राणा साहूकार सभसँ शोषित होइत रहल. गाममे मूल रूपसँ एखनो संयुक्त परिवारक व्यवस्था छैक.

—मुदा, केदारनाथ जी निसांस लैत बजलाह—टी वी सिनेमाक संस्कृतिमे सभ किछु स्वाहा भेल जाय रहल अछि. डुग्गरक प्राकृतिक रूप बिगड़ल जाय रहल अछि. आ ओहि रात्रि हमर मोन छटपट क' रहल छल—संस्कार संस्कृति ! साँच तँ इ छैक जे कोनो राष्ट्रक असली पहिचान ओकर संस्कृति थीक. हम एक राज्यसँ दोसर राज्यमे जायत छी तँ लगैछ विभिन्न बोली, परिवेशक मध्य एके भाव, एके जीवन मूल्य. हिमालयसँ कन्याकुमारी धरि—पूर्वसँ पश्चिम धरि. भारतीय संस्कृति मानव कें चलब सिखौलक, जीवा लेल बतौलक. मुदा, एहि उतार—चढ़ावक मध्य एकर भीतर प्राणहीन एवं शिथिल परंपरा निःशब्द जन्म ल' लेलक. २१ वीं सदि धरि पहुँचैत पहुँचैत दुःखी, हताश मानव अपना हाथे अपन विनाशक समान तैयार क' लेत. भारत स्वतन्त्र भेल, कतेक शोणितक वैतरणी पार क' र' पड़ल. 'वंदेमातरम्' जखन लिखल गेल के जनैत छल जे इ गीत भारतक हृदय कें प्रकंपित क' देत. इ सभ एहि लेल भेल जे भारत एकात्म रहि सकय. अखण्ड रहि सकय की हिन्दू की मुसलमान, की सिक्ख, की ईसाई—सभटा बताह छल—एकेटा प्रवाह भारत माताक जीजीर काटब. आब हम यदि हुनक तपस्या, हुनक बलिदान बिसरि जाय तँ इ धरती सीता जकाँ पतालमे समा जेतीह. हमर संस्कृति वास्तवमे सीता थीकीह. ओ अवमानना नहि सहि पबैत छथि. कोसी कमला'क संपादक त्रिलोकनाथ जीक सहज, सरल व्यक्तित्व मोन पड़ि जाय'छ. उत्तर बिहारक कोसी कमलाक कछेर पर बसल गामक गाम कोना अपन संस्कारक रक्षा लेल उताहुल अछि इ ओ दरसाबैत रहैत छथि कोसी कमलाक माध्यमे. मुदा, एहि अमोल देश सेवाक मोल कत' ? कतेक बेर शक्तिजीसँ एकर चर्च होइत रहैछ.

—जम्मूसँ बिदा होइत काल लाभजी सँ पुछैत छी—अहुँ तँ मिथिलाक छी पाहुन, मैथिल छी. अहाँक एत' कैहेन लगैत अछि—डॉ० लाभ सुमनोहर व्यक्तित्व आ मोहक मुस्कानक धनी छथि. मुदा हुनका उत्तर देबासँ पहिनहि चपल चपला सन नीहारिका चमकि गेलीह—नहि-नहि एहि ठामक किछ गोटे बड़ सूखल स्वभावक छथि. थाकि हारि केकरो ओत' जाउ तँ एक कप चाहो लेल नहि पुछैत छथि. अपन मिथिलामे तँ—बात कटैत लाभजी बजलाह—नहि एहेन कोनो बात नहि छैक. अपन मिथिलामे कतेक गोटे एहेन छथि जे एक गिलास जलो लेल पुछारि नहि

करैत छथि, चाह जलखैक कोन कथा. नीक बेजाए सभ ठाम रहैत छैक. जे मूलतः एहिठामक निवासी छथि ओ बड़ सज्जन आ मिलनसार.

लागल जे नीहारिका कतौ बड़ चोट खेने छलीह तँ उठल छलीह—मुदा लाभजीक बात मे सत्यता छल. ओहिठाम आतिथ्य हमरो भेटल छल मुदा सभ मूल निवासिए सँ हमरा भेट भेल छल.

ओना विश्वविद्यालयक हिन्दी विभाग मे डोगरी भाषा पर कतेको प्राध्यापक हँसि रहल छलाह. हमरा लगैत छल देशक कोनो कोन मे चलि जाउ, एहि तरहक परिवेश एक दोसरा पर कटाक्ष, आक्षेप सभ जगह भेटि जायत. मुदा, ओहिठाम डोगरी भाषाक प्राध्यापक शिवदास सिंह 'मन्हासकें' अपन भाषा आ ओकर लेखक लेखिकाक प्रति कतेक सम्मानभाव छल. सभ मे आक्रोश छल साहित्य अकादेमी पुरस्कार नहि भेटलासँ. पद्मा सचदेव पहिलुक बेर एकर अध्यक्ष बनलीह, मुदा, पुरस्कार नहि भेटल. किन्तु केओ हुनका विरुद्ध किछ नहि बजैत छल. इ छल एकात्मकता. मन्हासजी सेहो अकादेमीक यात्रा अनुदान मे राजस्थान जाय रहल छलाह. दूटू गोटे हम सभ अकादेमी दिसिसँ एक स्थान पर ठाड़ छलौं एक दोसराक भाषाकें जनैत बुझैत.

मैथिलीमे कतेक लेखक लेखिका छथि ?—नव पुरान सभ मिलाय करीबन पाँच सय - हमर उत्तर सुनि मन्हासजी चौंकि गेलैथ. डोगरिक ३० लेखकक समक्ष पाँच सय—हम बाजलौं—इ आन गप थीक जे प्रकाशनक सुविधा नहि रहबाक कारण आर कतेको प्रकाश मे नहि आबि पबैत छथि.

डोगरी संस्थान दिसिसँ प्रकाशनक नीक सुविधा आ व्यवस्था छैक.

किछु दिनक इ प्रवास मे जम्मूक प्राकृतिकता ओहि ठामक व्यक्तिक सरलता निश्छलता सँ हम सभ बन्हि गेल छलौं. राम मंदिर, रावणेश्वर मंदिर, बागे बाहु आदि कतेको धर्म स्थान—दर्शनीय स्थान हम सभ निहुरैत रहलौं. सभ सँ बेसी लगैत छल 'जय माता दी' एहि पर्वत शिखर पर सघन अरण्य मे निवास क' रहल छलीह. हम सभ हुनक चरण मे बैसल छलौं.

बी० आर० अम्बेदकर कालेज दिल्लीक इतिहास विभागक अध्यक्षा हमर पुत्र-वधू जया वर्माकें एहि सांस्कृतिक आदान प्रदानक योजना सभ बड़ नीक लगैत छल. ओहि समय मे हमर द्वितीय पौत्री अदितिक जन्म भेल छल.

'अदितिक' नाम सँ हँसी लागि जायत अछि. सेंट स्टीफेन्स हास्पिटल दिल्ली मे प्रथम पौत्री अरुषीक जन्म भेल छल १८ अगस्त १९८० मे. हम दिल्ली मे छलौं ओहि अवसर पर. राति राति भरि हम, राजीव, संजीव अस्पताल कंपाउंड मे नीचा मे गरमी सँ बेहाल सुतैत छलौं. इ दोसर राति छल जखन कि अरुषीक जन्म पर लाउडस्पीकर सँ घोषणा भेल. मुदा, इ नींद जकरा लेल हम तरसैत छलौं भरि जिनगी—ठीक ओहि काल आबि आँखि पर बैसि गेल. जन्मक एक डेढ़ घंटा उपरांत जखन फेर नाम उद्घोषित भेल तँ तीनो माय बेटाक नींद एके संग टुटि गेल. दौड़लौं लेबर रूम दिसि—मक्खन सन कोमल—सघन घन कुंतलक संग हमर पोती अरुषी धरती पर आबि गेल छलीह—

आ ठीक वएह अस्पताल—वएह स्थान, ३ फरवरी १९९४क भिनसर जखन उद्घोषणा भेल ५ बजे भोर, हम आ राजू दौड़लौं. राजू दौड़ैत बाजल—चल मम्मी देखैत छी अदिति कि आदित्य के आयल अछि—आ देखैत छी—अदिति आबि गेलीह हमर दोसर पोती ठीक अपन दादा सन'''जयाक चेहरा उदास छल—मम्मी पापा दूनू पोतीक नाम पर दुखी नहि भ' जायथ.

—मुदा हमर पुतौह जया जे हमर सभक आत्मा थीकीह हमरा आन सासु सन. बुझलीह—हम बुझयलौं—हम सभ बेटा बेटी मे आय धरि कोनो अंतर नहि बुझने छी. बेटी सासुर जायत अछि आ बेटा जाहिठाम नौकरी करैत अछि ओत' रहैत अछि—फेर की अन्तर—दोसर जे हम अपने सात बहीन छी, हमरा स्वयं चारि टा बेटी अछि. बेटी तँ लक्ष्मी थीकीह. आ वर्मा जी तँ बेटा सँ कम नै बेटीकेँ मानैत छथि. सुपर्णा दिल्लीमे पी-एच०डी० क' रहल अछि आ तरुणा एम०ए० हिन्दीमे. दूनू अपना अपना विभागक नेता आ मेधाविनी छात्रा सेहो. मुदा दूनू अपना पिताक कण्ठहार छथि. बड़की भावना एम० ए० इतिहास मे पटना वि०वि०सँ कय बंबई मे रहैत छथि. हमर जमाय प्रकाश जी ओ एन० जी० सी० में एखन उप अधीक्षण अभियन्ता छथि, चौंकी आ हनी हुनक छोट छीन परिवार अछि. भावना अपन सासु ससुरक आत्मा बनल अछि—

ओहि सँ छोट बंदना लंदन मे डॉक्टर छथि जमाय डॉ० कौशलेन्द्र कर्ण सेहो डॉक्टर छथि. एकटा बेटी अंकिता अछि. बंदना अपन सासु ससुरक पुतौह नहि, बेटी नहि, बेटा थीकिह. ओहिना जया हमर घर आंगनक मोहक सुरभि छलीह.

हमर छह संतान आ हम दूनू गोटे—आठ व्यक्तिक हृदय मे एके भावना, एके विचार, एके रसधार बहैत छल जकर अन्तर मे पुतहु आ जमाय सभक सह

रसधार प्रवाहित छल छोट-छोट झगड़ा छोट-मोट बहस—सभ मे होयत छल. चेहरो मुरझाइत छल आ फेर सभ तुरते कमल सन विहुँसि जायत छल. पति-पत्नीक मध्य तँ स्यात् सभ सँ बेसी झगड़ा होयत अछि ओकर मोजर क्यो नहि दैत छैक तँ एकर मोजर किएक ? अरे—अहाँ कत' चलि जायत छी—

—वर्माजी जेना हरदम हमरा वर्त्तमान मे आनि दैत छथि, अहाँक मोन किएक भटकैत रहैत अछि. अहाँ जखन जे कार्य करी तखन ओतबेटा सोचु. एक बेरि मे एकटा काज करु—एकटा बात सोचु—

—हम हँसि दैत छी—पता नहि कतेक दिन धरि इ हमरा समझावैत रहताह—सम्हारैत रहताह, हम छी कि व्यस्त रहितहु सोचवा लेल समय चोराय लैत छी, आ वर्माजी चोरी पकड़ि लैत छथि. पाकल माटि कोना बनत—नहि हम बाल-बच्चा मे हेराय गेल छलौं—

अहाँ जम्मू सँ विदा भ' रहल छी—आ'''हुनका हम कोना कही जे नीहारिका लाभजी. खास क' अंशुक प्रतिपल मौसी मौसीक स्वर हमरा अपन बाल बच्चाक स्मृति दिआय देलक—आ एक स्मृति सँ दोसर-दोसर सँ तेसर अन्तर्निविद्ध भ' एकटा शृंखला जकाँ कड़ी-कड़ी जुटि मानस हार बनल चलल जायत अछि—

दीदी—सभ सँ पहिने अहीं एहिठाम आयल छी. माँक बाद, भाय बहीन मे अहीं—लाभजीक स्वर भावावेशसँ काँपि रहल छल.

पाहुन माँक बाद तँ हम ही छी ने ? सपनाक आनन अश्रु सिक्त भ' गेल छल. वर्माजी जतबे उत्फुल्ल छलाह ओतबहि व्यथा बोझिल.

सपना हुनकर पाछा-पाछा—हुनकर सुख सुविधाक पाछा बेहाल रहैत छलीह. अतिशय सुख सेहो मानव के तीताय दैत अछि—एकटा मेघक तरंग पर बीतल स्वप्नवत जीवन खत्म भ' रहल छल. मुदा, की तरिपहुँ तरंगित जीवन खत्म होइछ ? नहि जानि मानव कत' सँ चलब आरंभ करैत अछि ? चलैत-चलैत थाकि जायत अछि. निसांसक संग थाकल दृष्टि निक्षेप चतुर्दिक करैत अछि. अचक्के ओ चौंकि जायछ—कत' छी हम ? इ तँ वएह स्थान थीक जाहि ठाम सँ हम यात्रा आरंभ केने छलौं. तखन इ हमर दौड़ धूप, भागमभाग मात्र अनुभूति समेटैत रहि गेलौं. अपन वास्तविक जीवन मे सेहो व्यवहारिक नहि बनि सकलौं. वीणाक तार सन एकटा स्मृति झनझनाय जाय'छ—हम केकरो पत्र लिखैत छी तँ कवित्वपूर्ण शैली

मे, भाव भरल, अनुभाव भरल भनहि हमर ओ बेटा बेटी होय वाकि समधि समधीन वाकि पाठक-पाठिका. एक बेर हम दिल्ली बेटा-बेटी सभकेँ पत्र लिखने छलौं. ओ सभ हमर पत्रकेँ 'पोस्टमार्टम' क' दिल्ली सँ उत्तर पठौलक. हम कान' लागल छलौं. हमर लिखवाक इ तात्पर्य तँ किन्नहुँ नहि छल. तखन हमर भागिन उग्रनाथजी बड़ शांत स्वरे समझौने छलाह—मामी, अहाँ खाली लेखक लेखिका सभकेँ पत्र लिखु. ओ अहांक पत्रकेँ समझि जेताह—उग्रजी कतेक नीक जकाँ हमरा बुझैत छलाह. हँसी आवि गेल छल हमरा—इ अनुभूति सभ की हमरा कहियो यथार्थक धरती पर जीव' देलक ? कालक इ दीर्घ अन्तराल, इ जीवनक कटु मधु क्षण ! की उड़ैत कालक संग हम नहि तिनका सदृश भागि रहल छी ? तखन कोन स्थायित्व, कोन थकान, कोन तपन !

—जरा सिसु कत दिन गेला—इएह मानव जीवन थीक ? मुदा, मानव एकरा एहिना जीवि पबैत अछि की ? काम क्रोध मद लोभ मोहक मध्य की मानव संतुलित भ' सकल अछि ?

निरंतर बढ़ैत भावुकता सँ कहियो काल हम स्वयं अपस्यांत भ' जायत छी. हमर लेखन सेहो हमर पर्याय बनि जाय'छ. जे साँच अछि ओकर निषेध किएक ? पृथ्वी अपन आवेग मे दिन राति घुमैत रहैछ आ हमर नियति की पृथ्वी थीक ?

अंतहीन पथ पर शब्दहीन आमंत्रण निरंतर उद्बोधैत हमरा—माइल्स टू गो—माइल्स टू गो—

